प्रभा

2016-17

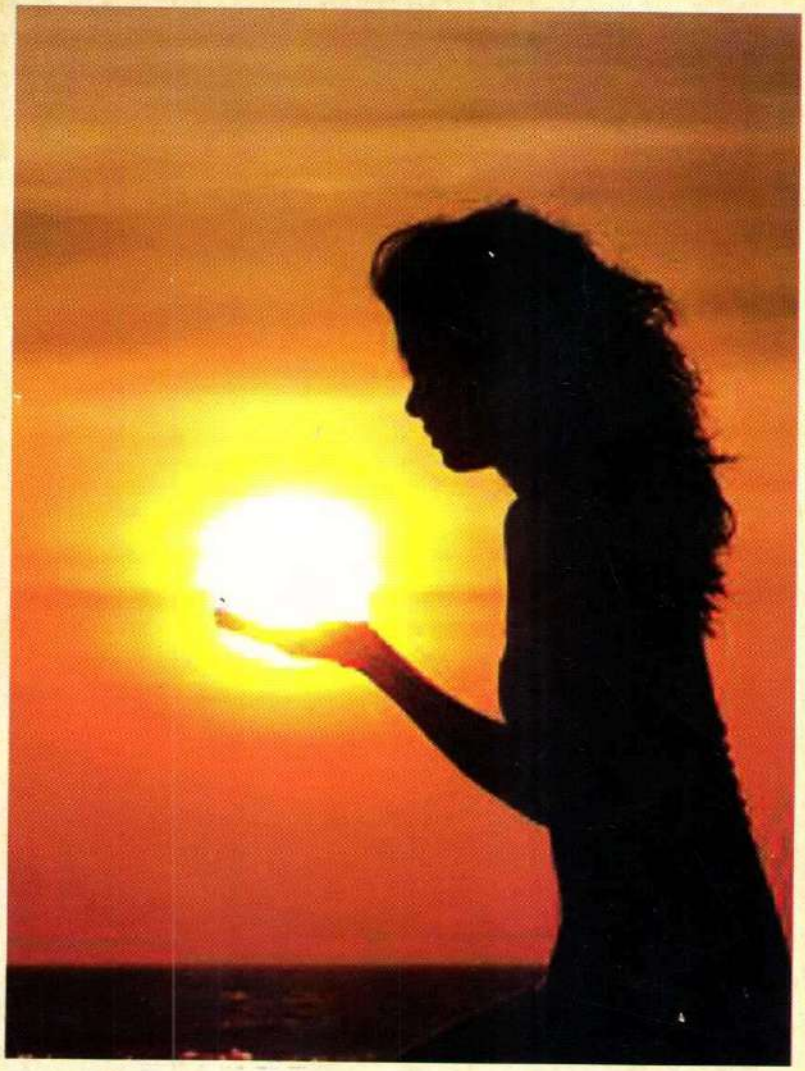

College Accredited with
CGPA of 3.46 on Four Point Scale
at 'A' Grade

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद

(संघटक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, ALLAHABAD

(Constituent College of University of Allahabad)

महाविद्यालय-आधार

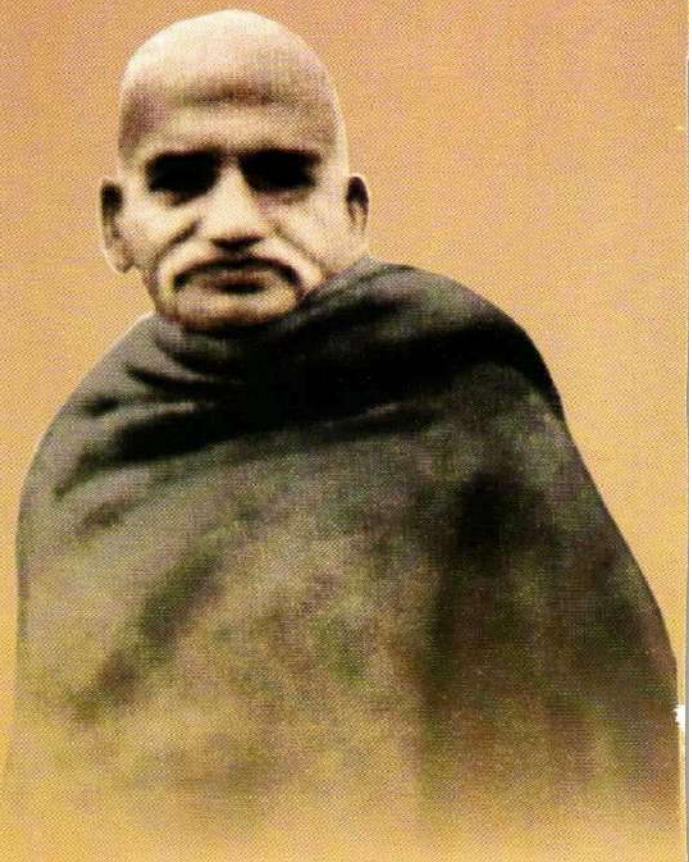

यशः काय सदनलाल खन्ना जी
संस्थापक - सारस्वत खत्री पाठशाला, इलाहाबाद

स्मृति शेष प्रो. दामोदर दास खन्ना
(पूर्व अध्यक्ष एस के पी सोसायटी एवं
एस एस खन्ना महिला महाविद्यालय)

श्री राजीव खन्ना
सचिव
सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी
एवं
अध्यक्ष एस एस खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज

श्रीमती सरल टण्डन
मैनेजिंग ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

श्री विनय मेहरोत्रा
ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

डॉ. लालिमा सिंह
प्राचार्या

संरक्षिका
डॉ. लालिमा सिंह
प्राचार्या

सम्पादक
डॉ. आशा उपाध्याय
सम्पादक मण्डल
डॉ. ज्योति कपूर
डॉ. मंजरी शुक्ला
डॉ. अर्चना ज्योति
डॉ. रुचि गुप्ता
डॉ. शालिनी रस्तोगी
डॉ. रुचि मालवीय
डॉ. तनुश्री रॉय
डॉ. आरिफा बेगम

छात्रा प्रतिनिधि
शिवानी त्रिपाठी
नशरा खान
हुमा अन्सारी
कुलसुम जाफरी
कृति बासु
नीलू मिश्रा

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
179 डी, अतरसुइया, इलाहाबाद 211 003, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 0532-2659124, 2451692, 2451791
E-mail : khanna_girls_dc@yahoo.co.in
Website : sskhannagirlsdc.com

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sadanlal Sanwaldas Khanna Girls' Degree College
Attarsuiya, Allahabad, affiliated to University of Allahabad, Uttar Pradesh as
Accredited
with CGPA of 3.46 on four point scale
at A grade
valid up to March 02, 2020

Date : March 03, 2015

Director

इलाहाबाद विश्वविद्यालय
सीनेट हाउस, इलाहाबाद (उ.प्र.)- 211 002, भारत
University of Allahabad
Senate House, Allahabad (U.P.)- 211 002, India

Professor Rattan Lal Hangloo
Vice-Chancellor

प्रोफ़ेसर रतन लाल हंगलू
कुलपति

March 3, 2017

Message

It is a matter of great pride that the S.S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad is bringing out the annual edition of its magazine **'PRAMA'**. This is highly appreciable efforts that provide an intellectual forum to the faculty members, students and others so that they express their ideas creatively and constructively.

The S. S. Khanna Girls Degree College, Allahabad is one of the most reputed colleges in the University and its annual magazine reflects academic rigor, artistic expression and depiction of the cultural ethos.

Let me congratulate the Governing Body, faculty, students and staff of the S.S. Khanna Girls' Degree College for bringing out the annual magazine. I wish the College all success in its future academic endeavors.

(Rattan Lal Hangloo)

Former Vice-Chancellor / पूर्व कुलपति
University of Kalyani / कल्याणी विश्वविद्यालय
Nadia - 741235 (West Bengal) / नाडिया - 741235 (पश्चिम बंगाल)

Camp Office / शिविर कार्यालय:
Tele. / दूरभाष : (0532) 2545020
Fax / फैक्स : (0532) 2545733

Main Office / मुख्य कार्यालय:
Tele. / दूरभाष : (0532) 2461089, 2461157
Tele. / Fax टेली. / फैक्स : (0532) 2461157
e-mail / ई-मेल : vcoffice@allduniv.ac.in

न्यायमूर्ति अरूण टण्डन

संदेश

महोदया,

यह हार्दिक प्रसन्नता की बात है कि एस0एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"प्रमा"** का प्रकाशन इस वर्ष भी होने जा रहा है। प्रकाशन की निरन्तरता से यह प्रमाणित होता है कि महाविद्यालय अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में सदैव तत्पर है। विद्यालय द्वारा वर्ष पर्यन्त अर्जित सफलताओं एवं नये स्थापित आयामों को जन–मानस तक पहुंचाने में इस पत्रिका का बहुमूल्य योगदान है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से विद्यालय की शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के शैक्षणिक स्तर एवं लेखन कौशल का ज्ञान प्राप्त होता है।

विद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर एक–एक कदम आगे बढते हुए नित नये कीर्तिमान स्थापित करता रहेगा ऐसा मुझे विश्वास है।

(अरूण टण्डन)

Sar-La Education Trust

Admin. Office : 316, Neelam, 108, R. G. Thadani Marg, Worli, Mumbai 400 018, India.
Tel : +91 22 6660 7631 Email : info@sar-la.in

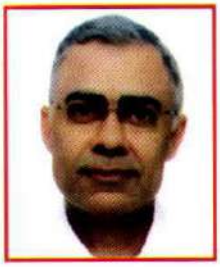

Message

A college magazine carries the contributions reflecting efforts and aspirations of the students, faculty and other team members of an institution.

Education enables a person to face new challenges, achieve progress and lead a successful life. Education at our institution is not only for academic brilliance but also for an ambience where our ancient cultural heritage and human skills are enhanced.

It is a matter of great pride that the college has made consistent progress, year on year, in academic and co-curricular activities.

I wish the students and faculty all the best for achieving greater success and scaling newer heights in their education and career ahead.

(Chetan Mehrotra)
Executive Trustee

December 8, 2016

Regd. Office : N-5, Panchsheel Park, New Delhi 110 017.

Chairman
RAJEEV KHANNA
S.S. Khanna Girls' Degree College
179-D, Attarsuiya, Allahabad - 211003

Message

I am happy that S. S. Khanna Girls' Degree College is bringing out its annual edition for the year 2016–17. It will showcase all the laurels empowered by the campus this year.

I am extremely delighted that college, since its inception from the year 1975 has made remarkable progress by fulfilling the students requirement whether in the field of academics or in extra co-curricular activities.

The college has been providing students with the holistic learning experience there by making the institution a post-graduate institute in the profound city. It is commendable for the institution for achieving such heights. The college conducts a range of events to impart life skills and global competencies. It is not necessary to always hold a stardom personality but to build recognition in one's eye. The college has stood for quality and excellence and still thriving to be the best in the years to come.

I look forward to work with the teachers, staff, parents and students to make our institution never sway from any commitment, where by the students achieve their very best.

I would like to thank the parents to have always trusted us and wishing 'All the very best' to the students for the near future.

Rajeev Khanna

(Rajeev Khanna)

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद

(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

NAAC : 'A' Grade

क्रमांक ..... दिनांक .....

दिलीप मेहरोत्रा

प्रबन्धक / कोषाध्यक्ष
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
इलाहाबाद।

संदेश

नया सत्र, नया नेतृत्व इन सभी को महाविद्यालय के वार्षिक सत्र 2016–17 की पत्रिका "**प्रमा**" के माध्यम से हार्दिक बधाई। महाविद्यालय निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है। पत्रिका एक सशक्त माध्यम है, जिससे समाज में महाविद्यालय की एक अच्छी छवि प्रदर्शित होती है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन पर अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(दिलीप मेहरोत्रा)

179-डी, अतरसुइया, इलाहाबाद-211003
E-mail : khanna_girls_dc@yahoo.co.in
Website : www.sskhannagirlsdc.com

2659124
(0532) 2451692
2451791

संदेश

ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा जाता है और यह ज्ञान ही है जो मनुष्य में मनुष्यता का निर्माण करता है। ज्ञान विवेक का निर्माता है। हमारे महाविद्यालय की पत्रिका प्रमा इस कार्य को अनवरत आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। हमारी छात्राओं की सृजनशीलता को 'प्रमा' एक मंच प्रदान करती है साथ ही महाविद्यालय की अध्यापिकाओं द्वारा अपनी छात्राओं को प्रदान किया जाने वाला दिशा निर्देश उनके व्यक्तित्व को विकसित करने में सहायक होता है।

हम निरंतर इन्हीं शुभ संबंधों का निर्वहन करते रहें। इसी शुभाशंसा के साथ –

डॉ. शिप्रा सान्याल
प्राचार्या
(01.04.2012 से 14.11.2016 तक)

Message

It's truly a joyful privilege for me to greet you for the first time through the columns of **"PRAMA"**. This year our college completes 42 years of its vibrant presence on the educational map of India.

As I set out this journey of leadership I remember with gratitude all those who have contributed in the growth of this institution especially the visionary principles down the years.

This issue of **"PRAMA"** gives us a glimpse of the activities of this academic session. The Editorial Team has done a commendable job in bringing out this aim through every page of this magazine.

Now, that we are about to step into a sparkling new academic year, let's be grateful to the people who made us happy.

Wish you a Happy Reading.

Dr. Lalima Singh
Principal
[from 15.11.2016]

महाविद्यालय को गर्व है

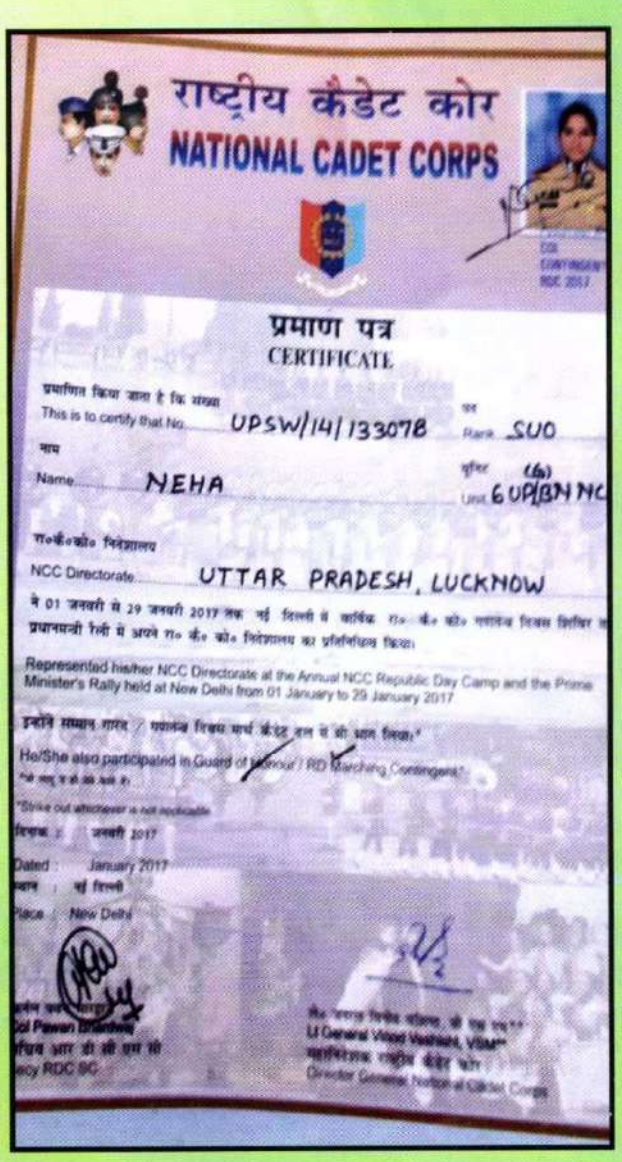

राष्ट्रीय कैडेट कोर
NATIONAL CADET CORPS

प्रमाण पत्र
CERTIFICATE

This is to certify that No. UPSW/14/133078 Rank SUO

Name NEHA Unit 6 UP(BN NC

NCC Directorate UTTAR PRADESH, LUCKNOW

Represented his/her NCC Directorate at the Annual NCC Republic Day Camp and the Prime Minister's Rally held at New Delhi from 01 January to 29 January 2017

He/She also participated in Guard of Honour / RD Marching Contingent.

Dated : January 2017

Place : New Delhi

सम्पादकीय

डिजिटल दुनिया और मानवीय संवेदनाएं

।। बदल रहे हैं रोज नज़ारे नजर बदल कर देखें
काँटे भी देंगे रस्ते बस काँटों पर चलकर देखें।।

हम प्रभावी राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन की सरणियों और वीथियों से गुजर रहे हैं। नयी राजनीति के साथ नयी चेतनाएं भी आकार ले रही हैं। विश्व परिदृश्य उथल-पुथल के दौर में है। सामाजिक परिवर्तन नयी ऊर्जा ग्रहण कर रहा है और समय के समक्ष ज्ञान चुनौती बन रहा है।

त्वरित संचार माध्यमों और सोशल मीडिया के प्रभाव एक नयी तरह की सामाजिकी और नये तरह के संवादों को स्पेस दे रहे हैं। ओपेन सोसायटी का कॉनसेप्ट और उसका चेहरा सामने आ रहा है। हाशिए पर पड़ी स्त्री केन्द्र में है। स्त्री ही नहीं, कुछ दशकों पूर्व तक धूप के जो टुकड़े सहमे हुए किनारे खड़े थे, वे छोटे-छोटे सूर्य बनने की प्रक्रिया में हैं। आदमी अपने आग्रहों और मान्यताओं पर प्रश्न चिन्ह नहीं चाहता और हर "ऑब्जेक्ट' जैसा है, उसी रूप में स्वीकृति पाना चाहता है। सफलता व्यक्तित्व का दस्तावेज बनना चाहती है। गाँधी जी का साधन और साध्य की पवित्रता का सिद्धान्त वानप्रस्थ आश्रम की ओर प्रस्थान कर चुका है। नये मंजर केवल प्राकृतिक परिघटना नहीं , फोटोशॉप एप्लीकेशन से भी तैयार हो रहे हैं। क्रियाएं डिजिटल हो रही हैं और मानवीय संवेदनाएँ ऑक्सीजन पर चल रहीं है।

जब भी मानवीय जीवन और तकनीक की स्पर्धा होती है, मानवीय भावनाओं को आत्मरक्षा के लिए नये उपकरण तलाशने पड़ते हैं। करीब सौ साल पहले जब औद्योगिक क्रांति शुरू हुई तो बहुत कुछ पुराना क्षरित होने लगा और तकनीक-उद्योग के सामने संवर्द्धित नये मानव-मूल्य फलने-विकसित होने लगे, लेकिन तब बाज़ार इतना क्रूर नहीं था और स्त्री गरिमा पर सीधा हमला भी नहीं। आज का बाज़ार संवेदना से रहित मात्र हानि-लाभ पर आधारित है। उसके लिए स्त्री-पुरुष सब एक 'प्रोडक्ट' हैं। प्रोडक्ट को आकर्षक पैकिंग दी जा रही है और यह बाज़ार डोर डिलिवरी तक आ पहुँचा है। अर्थात् हम बाज़ार में न होकर भी बाज़ार में हैं। कभी-कभी तो किसी को देखकर यह भ्रम होता है कि हम किसी व्यक्ति से मिल रहे हैं या बाज़ार के किसी भव्य शो रूम के सामने खड़े हैं। हम हाथ मिलाने या नमस्कार करने की बजाय पर्स में क्रेडिट कार्ड खोजने लगते हैं। खुद को क्रेडिट कार्ड समझने लगते हैं, और जब स्वयं को क्रेडिट कार्ड की तरह बाहर निकालते हैं तो उसका पिन कोड भूल चुके होते हैं।

अगर हमें मनुष्य बने रहना है तो सारी डिजिटल दक्षताएँ प्राप्त करने के बाद भी हमें स्वयं को डिजिटल नहीं बनने देना है। विज्ञान और तकनीक मनुष्य के लिए है, मनुष्य विज्ञान या तकनीक के लिए नहीं। आज की स्त्री-शिक्षा का सबसे बड़ा दायित्व है कि वह इस तकनीकी हड़बड़ी में स्त्री को क्रेडिट कार्ड/डेबिट कार्ड/पिन कार्ड बनने के प्रति सचेत रखे और मानवीय संवेदनशीलता को यांत्रिक होने से बचाए।

(आशा उपाध्याय)

प्रतिभाएँ

सैयदा फौजिया इकबाल
विज्ञान संकाय - सर्वोच्च स्थान
बायोटेक्नोलॉजी - सर्वोच्च स्थान
प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक
(चारों संकाय के मध्य)

ऐमन इफ्तेखार
सर्वोच्च स्थान
कला संकाय

नाजिश फात्मा
सर्वोच्च स्थान
वाणिज्य संकाय

अंजलि सिंह
सर्वोच्च स्थान
बी.एड. संकाय

यशी जायसवाल
प्रेसिडेन्ट
स्टूडेन्ट काउंसिल

कायनात फात्मा
वाइस प्रेसिडेन्ट
स्टूडेन्ट काउंसिल

सदफ अशरफ़
सेक्रेटरी
स्टूडेन्ट काउंसिल

पल्लवी सिंह
ज्वांइट सेक्रेटरी
स्टूडेन्ट काउंसिल

20वीं शताब्दी के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं का योगदान

डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव
अतिथि प्रवक्ता - मध्यकालीन इतिहास

"यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।" अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते हैं। पारम्परिक विचारधारा में प्राचीन काल से ही स्त्री की पत्नी और माता की भूमिका के रूप में प्रशंसा तो की गयी है, किन्तु मानवीय रूप में उसे सदैव से ही बहुत हेय समझा गया हैं और उसे पुरुष का पुछल्ला मात्र मानकर सामाजिक उत्पीड़न किया जाता रहा है। रोमिला थापर के शब्दों में "पर्याप्त अधिकार और स्वतंत्रता की स्थिति से लेकर उतनी ही अधिक अधीनता की स्थिति तक उसमें व्यापक परिवर्तन आते रहे।" कृषक समाजों के विकास और राज्यों के जन्म के साथ उनकी स्थिति में निर्णायक गिरावट आने लगी। हिन्दू समाज में जाति-सोपान नाम का केन्द्रीय संगठनकारी सिद्धान्त पुरुष प्रधानता की विचारधारा से अभिन्न रूप से जुड़ गया; शूद्रों और स्त्रियों, दोनों को वैदिक अनुष्ठानों से वंचित कर दिया गया। सार्वजनिक जीवन जब पुरुषों का कर्म क्षेत्र बन गया, तो स्त्रियाँ घरों तक सीमित होकर रह गईं। लेज़ली अपनी पुस्तक - "द परफ़ेक्ट वाइफ़" में लिखते है- "स्त्रियों को अच्छी पत्नियाँ बनने के लिए, अपने पतियों की सेवा सबसे बड़े देवता के रूप में करने के लिए तैयार किया जाता है और उनसे संतान उत्पन्न करने की अपेक्षा की जाती है। अगर वे विधवा हो जाएँ तो उनको चाहिए कि शेष जीवन अपने मृत पति की यादों के सहारे कठोर अनुशासन और सादगी के साथ व्यतीत करे।" लेकिन यदि यह जीवन का एक सच था, तो दूसरी ओर यह बात भी सच थी कि स्त्रियों का अलगाव कोई निरपवाद, सार्वभौम प्रथा न थी। समय-समय पर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों में धनी और निर्धन दोनों वर्गों की स्त्रियों की अत्यधिक सार्वजनिक सक्रियता के प्रमाण भी मिलते हैं। जैसे- रजिया सुल्ताना, चाँदबीबी, अहिल्याबाई होल्कर, माहम अनगा, नूरजहाँ, गुलबदन बेगम, हमीदा बानो बेगम, हर्रम बेगम और औपनिवशिक काल में हुए 1857 के विद्रोह में रानी लक्ष्मीबाई, अजीजनबाई, बेगम हज़रत महल, रानी राजेश्वरी देवी, सुगरा बीबी, ऊदा देवी, आशा देवी गुज्जर, भगवानी देवी, रणबीरी बाल्मिकी, झलकारी बाई, अवन्ती बाई, महाबीरा देवी आदि वीरांगनाओं ने भाग लेकर समाज के सदैव उपेक्षित समझी जाने वाली महिलाओं की वीरता, साहस और सक्रिय भूमिका को सामने लाकर राष्ट्र, समाज के लिए कुछ कर गुज़रने का ज़ज़्बा प्रदान किया। 19वीं सदी में सामाजिक सुधार आन्दोलन का स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हुआ, और 20वीं सदी के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष में तो अंग्रेजी शासन के खिलाफ पुरुषों के साथ भाग लेकर पुरानी मान्यताओं को दरकिनार करते हुए अपनी शक्ति का जबदस्त अहसास कराया।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंगाल विभाजन (1905) के विरुद्ध स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इस आन्दोलन में स्त्रियों की भी पर्याप्त भागीदारी रही। उन्होंने ब्रिटिश मालों का बहिष्कार किया और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग किया, अपनी चूड़ियाँ तोड़ी और प्रतिरोध के अनुष्ठान के रूप में रसोईबंदी दिवस मनाए। दिलचस्प बात यह भी है कि उस समय बंगाल में स्त्रियों का समर्थन पाने के लिए जिस बिम्ब का उपयोग किया गया था वह धन-दौलत की देवी लक्ष्मी का बिम्ब था, जिसमें कहा गया कि बंगाल विभाजन के कारण लक्ष्मी ने अपना घर छोड़ दिया और जिसे वापस लाने हेतु संघर्ष आवश्यक हैं।

स्वामी विवेकानन्द की बहन सिस्टर निवेदिता ने बनारस के राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन (1905) में भाग लिया था और स्वदेशी तथा बहिष्कार आन्दोलन का समर्थन किया था। सरोजनी नायडू ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में प्रतिभाग कर स्वदेशी आन्दोलन के पक्ष में भाषण दिया।

उनका मानना था कि किसी भी देश की सभ्यता का मापदंड उनकी स्त्रियों का स्तर होता है। उन्होंने एनी बेसेन्ट और मार्गरेट कजन्स के साथ एडविन मांटेग्यू से मिलकर स्त्रियों को मताधिकारी देने की माँग की।

आयरिश महिला थियोसोफ़िकल सोसायटी की अध्यक्ष एनी बेसेन्ट ने आयरलैण्ड की तर्ज पर सितम्बर 1916 में होमरूल लीग की स्थापना कलकत्ता में की, और इसका मुख्यालय अउयार (मद्रास) में बनाया। होमरूल लीग की स्थापना का उद्देश्य "ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहते हुए संवैधानिक तरीके से स्वशासन को प्राप्त करना था।" एनी बेसेन्ट ने अपने लीग के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से "न्यू इंडिया" और "कॉमन वीक" समाचार पत्रों के प्रकाशन के साथ-साथ गोष्ठियों, सभाओं, सम्मेलनों इत्यादि का सहारा लिया। आन्दोलन की लोकप्रियता से घबड़ाकर 1917 में एनी बेसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया गया। विरोध में सुब्रमण्डम अय्यर ने "नाइटहुड" की उपाधि वापस कर दी। बढ़ते दबाव

के कारण सरकार ने एनी बेसेन्ट को रिहा कर दिया। तत्पश्चात् तिलक के प्रस्ताव पर एनी बेसेन्ट 1917 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गयी।

अखिल भारतीय स्तर पर सबसे पहले मद्रास में विमेंस इंडियन एसोसिएशन का जन्म हुआ, जिसका प्रारम्भ प्रबुद्ध यूरोपीय और भारतीय महिलाओं ने किया था। इनमें सबसे प्रमुख थी- एक आयरिश नारीवादी मार्गरिट कज़िंस और एनी बेसेन्ट।

1925 में इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ़ विमेन की शाखा के रूप में नेशनल काउंसिल ऑफ़ विमेन इन इण्डिया का गठन हुआ और प्रारम्भिक वर्षों में इसकी मुख्य प्रेरणा स्रोत लेडी मेहरी बाई टाटा थी, जो इन संगठनों में सबसे महत्त्वपूर्ण था। आरंभ में यह स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने वाला एक गैर राजनीतिक संगठन था, जिसकी प्रेरणा स्रोत मार्गरिट कज़िंस थीं। लेकिन वह संगठन आखिरकार राष्ट्रवादी राजनीति में भाग लेने लगा तथा मताधिकार से लेकर विवाह संबंधी सुधार और कामगार स्त्रियों के अधिकारों तक स्त्रियों के लिए हर प्रकार के अधिकारों का समर्थन करने लगा। प्रान्तीय स्तर पर उन्हीं दिनों स्त्रियों के अनेक मुद्दों पर विभिन्न संगठन काम करने लगे। सरला देवी चौधरानी, जिन्होंने बंगाली युवाओं के एक अखाड़ा आन्दोलन में भाग लिया था। इन्होंने 1910 में स्त्री शिक्षा हेतु "भारत स्त्री संगठन" की स्थापना, इलाहाबाद में की थी, आगे चलकर पूरे देश में इसकी कई शाखाएं खुलीं। बंगाल में 1920 के दशक के दौरान, जैसा कि बार्बरा सदई ने बताया है, बंगीय नारी समाज ने स्त्रियों के मताधिकारों के लिए अभियान आरंभ किया, बंगाल विमेंस एजूकेशन लीग ने स्त्रियों के मताधिकारों के लिए अभियान प्रारम्भ किया, स्त्रियों के लिए अनिवार्य प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा की माँग की और ऑल बंगाल विमेंस यूनियन ने स्त्रियों के गैर-कानूनी व्यापार (Trafficking) के विरुद्ध कानून बनवाने के लिए एक अभियान चलाया।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में स्त्रियों की भागीदारी में एक बड़ा मोड़ हम महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत आगमन (1915) के बाद व्यापक रूप में देखते हैं। 1918 में अहमदाबाद में गाँधी ने मिल-मालिकों के विरुद्ध संघर्ष में मध्यस्थता की थी। इस दौरान अंबालाल साराभाई की बहन अनसूया बेन गाँधी जी की शिष्या बन गयी थी। उन्होंने सत्याग्रह के समय खेड़ा की यात्रा की थी और मिल मजदूरों के लिए रात्रि कालीन विद्यालय चलाया करती थी। महात्मा गाँधी द्वारा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध प्रारम्भ किये गये अहसयोग दौरान नवंबर 1921 में एक हजार स्त्रियों के प्रदर्शन ने बंबई में प्रिंस ऑफ़ वेल्स के आगमन का विरोध कर जबरदस्त स्वागत किया। फिर बंगाल के कांग्रेसी नेता चितरंजन दास की पत्नी बसंती देवी, उनकी बहन उर्मिला देवी और भतीजी सुनीति देवी ने दिसम्बर में कलकत्ता की सड़कों पर खुलेआम प्रदर्शन में भाग और गिरफ्तारी देकर स्तब्ध कर दिया। 1921 में खिलाफत और असहयोग आन्दोलन में अनेक मुस्लिम महिलाओं ने भी भाग लिया था। शौकत अली और मुहम्मद अली की बुजुर्ग माता बी अम्मन ने पूरी जिन्दगी पर्दे में गुज़ारने के बाद खिलाफ़त-असहयोग आन्दोलन में भाग लिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान हजारों महिलाओं ने भी नमक के गैर-कानूनी उत्पादन में, विदेशी कपड़ों और शराब की दुकानों पर धरने और जुलुसों में भाग लिया था। 15 नवम्बर 1930 को जो 29,054 गिरफ़्तारी हुई थीं, उनमें 2050 सत्रह वर्ष से भी कम की आयु के किशोर थे और 359 स्त्रियाँ थी। सविनय अवज्ञा आन्दोलन भारतीय स्त्रियों को मुक्ति की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम था, इस बात को संयुक्त प्रांत की पुलिस की एक अधिकारी ने एक टिप्पणी में स्वीकार किया है- "भारतीय नारी घरेलू और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए एक साथ लड़ रही है और एक नारी की भाँति उनकी मांगे और तरीके नितांत अनुचित और अतार्किक हैं, किन्तु नारी के रूप में पुरुष पर उसका अत्यधिक प्रभाव है.....। अनेक राजभक्त अधिकारियों को, जिनमें पुलिस अधिकारी भी सम्मिलित हैं, जितने ताने और गालियाँ अपनी महिला रिश्तेदारों से मिलती हैं, उतनी कहीं और से नहीं। (संयुक्त प्रांत के पुलिस इंस्पेक्टर जनरल डॉड की 3 सितम्बर 1930 की टिप्पणी, होम पोलिटिकल 249/1930)

जो प्रवृत्ति 1930 के दशक में शुरू हुई थी, वह 1940 के दशक में भी जारी रही। हजारों महिलाओं ने नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन देश के अन्दर और विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियों में प्रतिभागिता कर अपनी सक्रिय भूमिका को समाज में स्वीकृति दिलाने में सफलता पायी। दिसम्बर 1929 में श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय यूथ कांग्रेस की अध्यक्ष निर्वाचित हुई और पूर्ण स्वराज की मांग की। नमक सत्याग्रह में भाग लिया। मणिपुर में 17 वर्षीय महिला गैंडिनलियु ने नागा आन्दोलन का नेतृत्व किया और गाँधी जी सविनय अवज्ञा आन्दोलन को मणिपुर में नेतृत्व प्रदान किया। जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें महत्त्वपूर्ण उपाधि "Rani of the Nagas" प्रदान किया।

सरोजिनी नायडू भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन

(1925) की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष बनी। विश्व भर में उनकी अध्यक्षता का समाचार फैल गया। द न्यूयार्क टाइम्स ने उन्हें "जॉन ऑफ अर्वन" और "भारत की प्रेरणा" बताया। 1928 ई० में गाँधी जी की प्रतिनिधि के रूप में वे अमेरिका और केनेडा की यात्रा पर गई। उनकी यात्रा की प्रशंसा वहाँ के अखबारों में खूब हुई। शिकागो के यूनिटी अखबार में छपा था- "गाँधी की ताकत और सहयोगी श्रीमती नायडू की अमेरिका में उपस्थिति खुशी का मौका है।" 1930 ई० में शुरू हुए सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान गाँधी जी के गिरफ़्तार होने पर सरोजिनी नायडू ने नेतृत्व प्रदान किया। उन्होंने 1931 में लंदन में आयोजित द्वितीय गोल मेज सम्मेलन में गाँधी जी के साथ भाग लिया था। 1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया, गिरफ्तार हुईं और 21 माह जेल में व्यतीत किया। सरोजिनी नायडू स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्तर प्रदेश (संयुक्त प्रांत) की पहली महिला राज्यपाल बनीं। नायडू भारत की Nightingale of India के नाम से प्रसिद्ध हैं।

सरोजिनी नायडू की पुत्री पद्मजा नायडू ने भी अपनी माता की तरह राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया था। 21 वर्ष की अवस्था में वे हैदराबाद की भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की संयुक्त संस्थापक बनीं। खादी के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आन्दोलन में लाग लिया और भारत छोड़ो आन्दोलन में जेल भी गयीं। समस्याओं के निराकरण में उन्होंने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया। पश्चिम बंगाल की बाद में राज्यपाल भी बनीं।

स्वरूपरानी नेहरू और कमला नेहरू ने भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया। कमला नेहरू ने संयुक्त प्रांत में कर न अदा करने के आन्दोलन में इलाहाबाद का नेतृत्व किया। विजयलक्ष्मी पंडित ने असहयोग, सविनय और भारत छोड़ो आन्दोलन में प्रतिभाग लिया। वे संयुक्त प्रांत की विधानसभा चुनाव में विजयी हुई थीं और स्थानीय सरकार में स्वास्थ्य मंत्री बनी थीं। वे संयुक्त राष्ट्र की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला थीं। संयुक्त राष्ट्र की सैन फ्रांसिस्को में हुई सभा में भारत का उन्होंने प्रतिनिधित्व किया और ब्रिटिश शक्ति के खिलाफ़ आवाज़ उठायी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु इंदिरा गांधी ने "वानर सेना" का संगठन किया। उन्होंने 1938 में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार हुईं और 13 माह जेल में व्यतीत किया। वह भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं।

राजकुमारी अमृता कौर ने गाँधी जी के विचारों से प्रभावित होकर कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की। नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन में प्रतिभाग किया। वे अखिल भारतीय महिला संघ की संस्थापक सदस्य और भारतीय बाल विकास परिषद की संस्थापक अध्यक्ष थीं।

महात्मा गाँधी की धर्मपत्नी कस्तूरबा गाँधी भी गाँधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन से जुड़ी हुई थीं। असहयोग आन्दोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान टॉंसवाल में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला थीं। पूना के बंदीगृह में उनकी मृत्यु हो गयी।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय बंबई में उषा मेहता की देखरेख में एक गुप्त रेडियो स्टेशन चलाया गया था। अरुणा आसफ अली ने भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान बंबई स्थित ग्वालियर टैंक पर राष्ट्रीय झंडा फहराया था, और भूमिगत आन्दोलन में भाग लिया था। उन्होंने मासिक पत्रिका "इंकलाब" का संपादन किया। उन्हें भारत सरकार ने स्वतंत्रता के बाद भारत के सर्वोच्च पुरस्कार "भारत रत्न" से सम्मानित किया। सुचेता कृपलानी ने भी भारत छोड़ो आन्दोलन में जयप्रकाश नारायण के साथ भूमिगत आन्दोलन में भाग लिया। 1946 में विधान सभा सदस्य चुनी गयी थीं। 1958-60 तक राष्ट्रीय कांग्रेस की जनरल सेक्रेटरी रहीं और 1963-70 तक उ०प्र० की मुख्यमंत्री रहीं। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान बंगाल के मिदनापुर के तमलुक संभाग में विद्रोहियों ने "जातीय सरकार" बनायी थी। जातीय सरकार के ब्रिटिश सरकार द्वारा दमन के बावजूद तामलुक की 73 वर्षीय किसान विधवा महिला मातंगिनी हाज़रा ही थी, जिन्होंने गोली लग जाने के बाद भी राष्ट्रीय झंडे को ऊंचा उठाये रखा और मरते दम तक नहीं छोड़ा।

भारत छोड़ो आन्दोलन का सबसे अहम पहलू बड़ी संख्या में ग्रामीण स्त्रियों की भागीदारी थी, जिन्होंने देश को आजाद कराने हेतु पहल की। 1941 ई. तक ऑल इण्डिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन की शाखा में लगभग 50,000 सदस्य थे। 1942 में बंगाल में महिलाओं ने "आत्म रक्षा समिति" का गठन किया, उसके द्वारा ग्रामीण स्त्रियों को लामबंद किया गया और 1943 के अकाल के दौरान बंगाल में राहत के कार्य किए गया। स्त्रियों की यह भागीदारी उस समय बढ़कर एक नए स्तर तक पहुँची, जब बंगाल में किसान सभा के अन्तर्गत 1946 ई. में तेभागा आन्दोलन के दौरान मांग करते हुए बहुतायत रूप में शामिल हुईं। अपनी

पहल पर उन्होंने नारीवाहिनी बनायी और जो भी हथियार हाथ लगा उसी के बल पर उपनिवेशी पुलिस का मुकाबला करते हुए अनेक स्त्रियाँ शहीद हो गयीं। इस तरह आंध्र में, जहाँ निजाम हैदराबाद और सामंत दमन के विरुद्ध (1946-1951) तक तेलगांना संघर्ष में बेहतर मजदूरी, सही लगान और अधिक सम्मान के लिए गुप्त संदेशों के वाहक के काम किए, छिपने की जगहों के प्रबंध किए और कुछ तो बंदूक लेकर क्रांतिकारी दलों की सदस्य भी बनीं।

भारत और विदेशों में भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की क्रांतिकारी गतिविधियों (बम और बंदूक की राजनीति) में भी महिलाएं शामिल हुईं।

कल्पना दत्ता, एक क्रांतिकारी महिला थीं, जो सूर्यसेन के विचारों से प्रभावित थीं और सूर्यसेन द्वारा स्थापित इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी (आई.आर.ए.) की सक्रिय सदस्य थीं। कल्पना दत्ता ने सूर्यसेन के साथ बंगाल स्थित चटगाँव व आयुध भण्डार पर आक्रमण कर हथियारों पर कब्जा कर लिया। 1933 में सूर्यसेन के साथ गिरफ्तार हुईं और उन्हें उम्र कैद की सजा मिली। प्रीतिलता बाडेकर पहाइतल (चटगांव) के रेलवे संस्थान पर छापा मारने के दौरान शहीद हो गयीं। 1931 ई. में सुनीति चौधरी और शांति चौधरी ने कोमिला (बंगाल) के जिलाधिकारी की हत्या कर दी। 1932 ई. में दीक्षांत समारोह के दौरान छात्रा बीनादास ने गर्वनर जैक्सन पर गोली चलायी।

देश से बाहर वास्तविक फौजी कार्यवाही में स्त्रियों को शामिल करने का एक प्रयोग सुभाषचन्द्र बोस ने किया 1928 ई. में सुभाषचन्द्र बोस ने "कर्नल" लतिका घोष के नेतृत्व में कांग्रेस का एक महिला स्वयंसेवक दल तैयार किया था, जिसने पूरी वर्दी पहनकर कलकत्ता की सड़कों पर मार्च किया था। सुभाषचन्द्र बोस ने जब 1943 ई. में दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रवासी भारतीयों की एक सेना "आजाद हिंद फौज" का गठन किया। इसमें उन्होंने एक महिला रेजिमेंट, 1857 के विद्रोह की वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई के नाम "रानी लक्ष्मीबाई झाँसी" रेजिमेंट भी गठित किया, जिसमें 1500 स्त्रियों को सैन्य प्रशिक्षण दिया गया और 1945 ई. में इंफाल की मुहिम में युद्ध में शामिल हुईं। अगस्त 1907 में मैडम भीकाजी कामा दूसरी इंटरनेशनल कांग्रेस की स्टुगार्ट (जर्मनी) सम्मेलन में भारत का राष्ट्रीय झंडा फहराने वाली पहली क्रांतिकारी महिला थीं। पेरिस और जिनेवा से मैडम कामा "वंदेमातरम्" पत्रिका निकालती थीं और इसके माध्यम से अपने क्रांतिकारी विचारों का प्रसार करती थीं। इन्हें "मदर इण्डिया" के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार हम देखते है कि 20वीं शताब्दी के राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में वर्ग, जाति, धर्म की सीमाओं से परे, अधिकाधिक भारतीय महिलाओं ने ब्रिटिश सामाज्यवाद के विरुद्ध हुए स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी थी। उनकी वीरता, शक्ति और शहादत महिला सशक्तीकरण हेतु प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

ज़िन्दगी

फरहीन मेहदी, बी.एड. (प्रथम वर्ष)

मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि ज़िन्दगी है क्या ? कभी हम खुश होते हैं, तो कभी उदास, कभी रोते हैं तो कभी हँसते हैं, कभी दिल कहता है कि ज़िन्दगी जी लो, तो कभी मन कहता है कि ज़िन्दगी बस यहीं पे रुक जाए। हम ज़िन्दगी को कभी अपने लिए जीते हैं, तो हम कभी किसी और के लिए जीना चाहते हैं। क्या हम अस्ल मायने में ज़िन्दगी को जी रहे है ? ज़िन्दगी बहुत खूबसूरत है जिसने इसको जी लिया तो समझो उसने ज़िन्दगी जी ली। मैंने तो सोच लिया है कि मैं अपनी ज़िन्दगी को हमेशा हँस के जिऊगीं चाहे जिन्दगी में कितनी भी मुश्किलें आएँ। ज़िन्दगी कितनी है किसे क्या पता हम तो बस जी रहे है ज़िन्दगी के लिए, ज़िन्दगी ही तो हमे जीना सिखाती है।

नयी सुबह

ज्योति मिश्रा, बी.एड. प्रथम वर्ष

एक किरण देखी है, उसे चमकने तो दो
एक दीप जलाया है, उसे बुझने मत दो
एक सपना मैंने भी देखा है, सपनों से निकलने तो दो।
चाहती हूँ एक नयी सुबह काली रात ढलने तो दो
दे दूँगी वो सब कुछ जो जिसने माँगा है,
पर निकल के घर से स्कूल तक, जाने तो दो।।

कविताएँ

सुमैय्या सरफराज, एम.ए. प्रथम वर्ष

शिक्षक

कभी डाँट-डपटकर, प्यार जताया,
कभी रोक-टोककर, चलना सिखाया
कभी काली स्लेट पर चाक से
एक उज्ज्वल भविष्य का सूरज उगाया!
कभी ढाल बनकर हर मुश्किल से बचाया
कभी हक के लिए लड़ना सिखाया
कभी गलती बताकर, कभी गलती बचाकर
एक सच्चे गुरु का फर्ज़ निभाया..!
जीवन था हमारा कोरा कागज
ज्ञान से उसको रंगीन बनाया
कभी सत्य निष्ठा से, कभी अच्छे आचरण से
पग-पग पर जीवन को सजाया..!
कभी माता-पिता बनकर दी सलाह
कभी दोस्त बनकर, हौसला बढ़ाया
आज कहते है उन टीचर्स को बड़ा सा 'थैंक यू"
जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया...!

बेटी

घर की सब चहल-पहल है बेटी
जीवन को खिला कमल है बेटी...
कभी धूप गुनगुनी सुहानी
कभी चन्दा शीतल है बेटी!
शिक्षा, गुण, संस्कार रोप दो
फिर बेटी सी सबल है बेटी
सहारा दो गर विश्वास का
तो पावन गंगाजल है बेटी,
प्रकृति के सद्गुण सीचो,
तो प्रकृति सी निश्छल है बेटी..
क्यों डरते हो पैदा करने से..
अरे आने वाला कल है बेटी
जन-जन की भारत का अभिमान हो
बेटी की हर राष्ट्र में कल्याण हो
अज्ञानता को जड़े से मिटाओ..
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ..!!

दोस्ती

फूलों सी नाज़ुक चीज़ है दोस्ती,
सुर्ख गुलाब की महक है दोस्ती..
सदा हँसने, हँसाने वाला पल है दोस्ती,
दुखों के सागर में एक कश्ती है दोस्ती..
जो मुश्किल से मिले, वो मस्ती है दोस्ती,
कभी झगड़ा कभी प्यार, हर रिश्तों की कड़ी है दोस्ती..
कही गीत कहीं गजल, हर साज़ से सजी है दोस्ती
खुद पर ऐतबार अपनों पे भरोसा प्यार से बड़ी है दोस्ती।।

कविताएँ

किताब

बिन्दू, बी.एड. प्रथम वर्ष

सीख लो मुझसे ज्ञान की भाषा
मैं किताब सबकी अभिलाषा
पढ़ना चाहे हर कोई मुझको
संग्रहालय में होती हूँ
कभी न मैं खोती हूँ
दुकानों में भी होती हूँ
मगर बहुत रोती हूँ
देख के अपनी नीलामी को
मूल्य बड़ी बेईमानी की
संकट में मैं पड़ जाऊँ
भाग के मैं कहाँ जाऊँ
बेईमानों को सजा मिले
पढ़ने वालों को मजा मिले
मूल्य से ज्ञान न बेचा जाये
पढ़ने की हसरत देखा जाये
पढ़ लिख के सब बनो विद्वान
देश का हो बड़ा सम्मान
अज्ञानों की नगरी में
छोटी सी इस गगरी में
अन्धकार को मिटाने आयी
जीवन में सबके उजाला लायी
सोचो अगर न मैं होती
ज्ञान कहा तब तुमको होता
चुरा ले सब सामान तुम्हारा
मुझको कौन चुरा पायेगा
पढ़-पढ़ा के बाँट लो सब में
इतना ही कर पायेगा
वरना बस पछतायेगा
समय के साथ चलना सिखाऊँ
झूठ कभी न मैं बताऊँ
अगर चले जो मेरे साथ
सब कुछ होगा उसके हाथ
वह जिन्दगी से कभी न हारा
बन जाऊँ मैं जिसका सहारा
मुझको जो ले हाथ में
ज्ञान हो उसके साथ में
पढ़ लिखकर बन जाओ कुछ
संसार को जगाओ तुम
ऐसी है मेरी माया
मैं किताब सब की छाया
बदल दूँ सब की काया।।

अजन्मी परी

ज्योति मिश्रा, बी.एड. प्रथम वर्ष

सुन लो मेरी बात प्यार से
इतना भी न इतराओ तुम
आने दो इस दुनिया में माँ
इतना भी ना तड़पाओ तुम।
दर्द बहुत होता है माँ
बातें उनकी जब सुनती हूँ
चीख भी ना पाती हूँ मैं माँ
छूरी जब उनकी सहती हूँ।
खेलती हूँ, समझती हूँ,
मन ही मन इठलाती हूँ,
आने को इस दुनिया में माँ
हर दिन एक ख्वाब सजाती हूँ।
सपना, सपना ही रह जाता है
कुछ भी ना कर पाती हूँ
गलती क्या मेरी समझ न आये
क्यूँ एक दिन मिट जाती हूँ।
दिये तो बहुत जलाये तुमने
हर दिवाली मनाती हो
जलने दो एक "दीया"
मेरे मन का भी
क्यूँ इतना घबराती हो।

मैं चाहती हूँ

ज्योति मिश्रा, बी.एड. प्रथम वर्ष

मैं भी सूरज की पहली किरण के साथ उठना और
संध्या की लालिमा के साथ ढलना चाहती हूँ।।
मैं भी इन परिंदों की तरह आसमाँ की
ऊंचाइयों को तय करना चाहती हूँ।।
मैं भी इन फूलों की खुशबूओं की तरह
चारों दिशाओं में फैलना चाहती हूँ।।
मैं भी इन रंग-बिरंगी तितलियों की तरह
अपनी एक पहचान बनाना चाहती हूँ।।
इन वीरान राहों में दूर कहीं निकल जाना और
आज़ादी की हवाओं को महसूस करना चाहती हूँ।।
लेकिन, "हमको तो ओस की बूँदों की तरह
समझा गया, जो खिली धूप में खुद का ही
अस्तित्व खो देता है।।
समुद्र की उन लहरों की तरह समझ गया
जो उठते तो है, पर गिरने पर खुद को ही मिटा देते हैं।।
पर, अब इन्हीं चाहतों को एक कोरे कागज पर उतार
नजरों से कहीं दूर रख अपना ही वजूद ढूँढ़ना चाहती हूँ।।
लेकिन एक सवाल, अगर लड़की होना अभिशाप है
तो ये मिला क्यूँ, आज भी मैं ये जानना चाहती हूँ।

हिन्दी-काव्य जगत के सूर्य का काव्य

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

हिन्दी काव्य-जगत में सूरदास कृष्णभक्ति की अगाध एवं अनन्य भावधारा को प्रवाहित करने वाले कवि माने जाते हैं। इनके काव्य में श्रीकृष्ण के बाल-भाव एवं वात्सल्य भाव की जिस अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं; उसका उदाहरण अन्यत्र प्राप्त करना दुर्लभ है। 'भ्रमरगीत' में इनके विरह-वर्णन की विलक्षणता दर्शनीय है। सूरदास के भ्रमरगीत में गोपियों एवं उद्धव के संवाद के माध्यम से प्रेम, विरह, ज्ञान एवं भक्ति का जो भाव व्यक्त हुआ है, वह इनकी महान काव्यात्मक प्रतिभा का परिचय देता है।

हिन्दी-साहित्य में सूरदास का वात्सल्य-वर्णन अद्वितीय है। इन्होंने अपने काव्य में श्रीकृष्ण के विविध बाल-लीलाओं की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की है। माता यशोदा का उन्हें पालने में झुलाना, बालकृष्ण का घुटनों के बल चलना, किलकारी मारना, माखन की हठ करना, सखाओं के साथ खेलने जाना, बलराम का चिढ़ाना, माखन चोरी आदि विविध प्रसंगों को सूरदास जी ने अत्यन्त तन्मयता तथा रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है। माखन चुराने पर जब श्रीकृष्ण पकड़े जाते हैं तो वे तुरन्त कह उठते हैं-

'मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं बरबस मुख लपटायौ।।

जब श्रीकृष्ण दूध नहीं पीते तो माता यशोदा कहती हैं कि दूध पीने से तुम्हारी चोटी लम्बी और मोटी हो जाएगी। यह सुनकर कृष्ण तुरन्त दूध पी लेते हैं, परन्तु उनकी चोटी छोटी की छोटी ही है। इस पर कृष्ण माता से कह उठते हैं-

"मैया कबहुँक बढ़ैगी चोटी
किती बार मोहिं दूध पियत भइ
यह अजहूँ है छोटी।।"

बाल-हृदय की ऐसी कितनी ही सुन्दर एवं मनोरम झाँकियाँ सूरदास के काव्य में भरी पड़ी हैं। बालक कृष्ण उदित होते चन्द्रमा को देखकर कहते हैं कि मैया मुझे चन्द्रमा लाकर दो-

"मैया मैं तो चन्द खिलौना लैहों।"

जब माता यशोदा चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब को जल में दिखाती हैं तो बाल-कृष्ण कहते है कि जब मैं हाथ डालकर इसे पकड़ता हूँ तो यह झिलमिलता और झकझोरता है

"यह तो झलमलात झकझोर कैसे कै जु लहौंगो।"

सूरदास जी ने बालकृष्ण की क्रीड़ा का सुन्दर वर्णन किया है वह पालने में लेटे हुए हैं और खेलते-खेलते पैर के अंगूठे को मुँह में डाल लिया है-

'कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत।
प्रभु पौढ़े पालनै अकेले,
हरषि-हरषि अपनै रंग खेलत।।'

श्रीकृष्ण के वात्सल्य-भाव का वर्णन करते हुए सूर ने बाल कृष्ण की सुप्तावस्था का चित्रण किया हैं माता यशोदा बालक कृष्ण को सुलाने का प्रयास कर रहीं हैं- 'जसुदा मदन गुपाल सोवावैं।'

सूरदास के संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि- "वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्र का जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बन्द आँखों से किया, उतना संसार के किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना-कोना झाँक आए।"

शृंगार-वर्णन में सूरदास को अद्भुत सफलता मिलती है। इन्होंने राधा-कृष्ण और गोपियों की संयोगावस्था के अनेक आकर्षक चित्र प्रस्तुत किए हैं। राधा और कृष्ण के परिचय का एक वर्णन इस प्रकार है-

'बूझत स्याम कौन तू गोरी।
कहाँ रहत काकी तू बेटी ?
देखी नहीं कहूँ ब्रज खोरी।।

संयोग के साथ सूरदास जी ने वियोग के भी अनेक चित्र प्रस्तुत किए हैं। श्रीकृष्ण मथुरा चले जाते हैं और गोपियाँ, राधा, यशोदा, ग्रामवासी, पशु-पक्षी सभी जड़-चेतन उनके विरह में व्याकुल हो उठते हैं। यहाँ तक कि संयोग की स्थितियों में सुख प्रदान करने वाली कुंज भी वियोग के क्षणों में दुःखदायक बन गई है-

'बिनु गुपाल बैरिन भई कुंजै।
तब वै लता लगति तनु सीतल,
अब भई विषम ज्वाल की पुंजै।'

श्रीकृष्ण के चले जाने पर गोपियाँ व्याकुल हैं और उपालम्भ द्वारा अपना वियोग व्यक्त करती हैं। गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण से प्रेम कर हमने अपनी गर्दन चाकू पर रख दी है-

'प्रीति करि दीन्ही गरे छुरी।'

गोपिकाएँ अपने कष्ट को एक-दूसरे से कहती हैं और बोलती हैं कि

मैंने अपने प्रेम को प्रकट करने के लिए इतने संदेश भेजे कि मधुवन का कूप भर गया किन्तु एक भी जवाब नहीं आया-

'संदेसनि मधुबन कूप भरे।
अपने तौ पठवत नहिं मोहन, हमरे फिरि न फिरे।'

सूरदास ने वियोग की वेदना का पक्षियों के माध्यम से चित्रण किया है। दिन-रात उनका नाम जपते हुए वियोग की ज्वाला से शरीर काला हो गया है-

'बहुत दिन जीवै पपीहा प्यारौ।
बासर रैनि नाम लै बोलत, भयो बिरह जुर कारौ।।'

इस प्रकार सूरदास ने शृंगार के वियोग और संयोग दोनों पक्षों का सशक्त चित्रण किया है।

सूर की भक्ति सखा भाव की है। इन्होंने कृष्ण को अपना मित्र माना है। सच्चा मित्र अपने मित्र से कोई परदा नहीं रखता और न ही किसी प्रकार की शिकायत करता है। सूर ने बड़ी चतुराई से काम लिया है। अपने उद्धार के लिए उन्होंने अपने प्रभु श्रीकृष्ण से कहा है कि मैं तो पतित हूँ ही, आप तो पतित पावन हैं। आपने मेरा उद्धार नहीं किया तो आपका सारा यश समाप्त हो जाएगा; अतः आप अपने यश की रक्षा कीजिए-

'कीजै प्रभु अपने विरद की लाज।
महा पतित कबहूँ नहिं आयौ, नैकु तिहारे काज।।'

श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन सूरदास ने उनके प्रति अनन्य एकनिष्ठ भाव को प्रकट करते हुए कहा है कि मेरा मन आपके अतिरिक्त और कहीं भी नहीं लगता- 'मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।" सूरदास जी ने कृष्ण के प्रति भक्ति-भाव से भरे एक पद में प्रार्थना की है कि मेरी अज्ञानता दूर कर मुझे सांसारिक आवागमन से मुक्त करें-

'अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल।
सूरदास की सबै अविद्या दूर करौ नंदलाल।'

अपने भक्ति-भाव को प्रकट करते हुए सूर कहते हैं-

'हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।'

इस प्रकार सूरदास की भक्ति-भावना में अनन्यता, प्रेम, निश्छलता एवं पावनता विद्यमान है। इनकी विषय-वस्तु में सर्वत्र मौलिकता व्याप्त है। इन्होंने बहुत कम स्थानों पर श्रीकृष्ण के अलौकिक रूप को चित्रित किया हैं। ये सर्वत्र मानवीय रूप में ही चित्रित किए गए है। राधा की कल्पना और गोपियों के प्रेम की अनन्यता में मौलिकता की अखण्ड छाप दिखाई देती है-

'लरकाई कौ प्रेम कहौ अलि, कैसे छूटत ?'

सूरदास के काव्य में प्रकृति का प्रयोग कहीं पृष्ठभूमि रूप में, कहीं, उद्दीपन रूप में, कहीं अलंकारों के रूप में किया गया है। गोपियों के विरह-वर्णन में प्रकृति का प्रयोग सर्वाधिक मात्रा में किया गया है। कोमल लताएँ वियोग में अग्नि की ज्वाला के समान लगती हैं। ठण्डी जल धारा, कपूर, चन्द्रमा तथा चन्दन जो शीतलता प्रदान करने वाले हैं, वे उन्हें झुलसा रहे हैं।

'तब वै लता लगति अति सीतल,
अब भई विषम ज्वाल की पुंजै।
पवन पानि धनसार संजीवनी कमल दै
दधि-सुत किरनि भानु भई भुंजै।'

सूरदास जी ने राधा-कृष्ण व गोप-कृष्ण प्रेम में अलौकिकता प्रदर्शित की है। उद्धव गोपियों को निराकार ब्रह्म का संदेश देते हैं, परन्तु वे किसी प्रकार की उद्धव के दृष्टिकोण का स्वीकार न करके श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम का परिचय देती हैं- 'ऊधो जोग जोग हम नाहीं' गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे पास दस-बीस मन नहीं है। हमारा एक ही मन है जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन है-

'उधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम संग, को अवराधे ईस।'

सूरदास जी ने ब्रज की लोक-प्रचलित भाषा को अपने काव्य का आधार बनाया है। इन्होंने बोलचाल की ब्रज भाषा को साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया। लोकोक्तियों के प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न हुआ है। कहीं-कहीं अवधी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग मिलता है, परन्तु भाषा सर्वत्र सरल, सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। सूरदास ने मुक्त काव्य-शैली को अपनाया है। कथा-वर्णन में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। इनके काव्य में यमक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, दृष्टान्त तथा अर्थान्तन्यास आदि अलंकारों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। सूर ने अपने काव्य में विविध प्रकार के परम्परागत छन्दों का प्रयोग किया है। सूरदास का सम्पूर्ण काव्य गेय है। उनके सभी पद किसी न किसी राग-रागिनियों पर आधारित है। सूर के काव्य की महानता को देखते हुए उन्हें हिन्दी काव्य-जगत का सूर्य कहा जाता है-

"सूर सूर, तुलसी ससी, उडुगन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ-तह करत प्रकास।"

विशेष

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह - 2016

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी और सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में संकल्पित यह परम विशिष्ट सम्मान है। सारस्वत खत्री पाठशाला एवं उससे संचालित शिक्षण संस्थाओं (नवीन शिशु वाटिका, टैगोर पब्लिक स्कूल, शिवचरण दास कन्हैया लाल इंटरमीडिएट कॉलेज तथा सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय) के उन्नायक स्मृतिशेष प्रो. दामोदर दास खन्ना की स्मृति को समर्पित है यह सम्मान। इस राष्ट्रीय सम्मान के लिये उच्च शिक्षा स्तर पर 'अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता' के आयोजन का निर्णय सोसायटी द्वारा दो अक्टूबर 2011 से लिया गया है। वर्ष 2016 के 'दामोदर श्री' राष्ट्रीय सम्मान के मुख्य अतिथि थे – सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के माननीय न्यायमूर्ति श्री ए.एम. खानविलकर। 'दामोदर श्री' व्याख्यान माला के अन्तर्गत छठें व्याख्यान के लिये विशिष्ट अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित थे – डिफेन्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पुणे के कुलपति श्री सुरेन्द्र पाल। समारोह के अध्यक्ष थे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायमूर्ति श्री डी.बी. भोंसले। विशिष्ट अतिथि थे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू।

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक निबन्ध प्रस्तुति सत्र की मुख्य अतिथि थीं–राज्य सभा के पूर्व सेक्रेटरी जनरल डॉ. विवेक कुमार अग्निहोत्री। विशिष्टता सम्मान–2016 के निबन्ध का विषय था – 'समय का आरम्भ है अभी, ज़मीन है यही'। इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त कश्मीर, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, सिक्किम, तमिलनाडु, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, नगालैंड और छत्तीसगढ़ के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों से 250 निबन्ध प्राप्त हुए। इन निबन्धों का मूल्यांकन तीन चरणों में किया गया।

इन निबन्धों के लिए गठित प्रथम एवं द्वितीय चरण निर्णायक समिति में कुल 13 सदस्य थे–माननीय न्यायमूर्ति श्री ए.पी. साही (इलाहाबाद उच्च न्यायालय), प्रो. हरि प्रकाश (निवर्तमान, भौतिक विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. आर.सी. त्रिपाठी (निवर्तमान प्रो वी.सी., इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. दीपा द्विजेन्द्र नी पुनेठा (मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद वि.वि.), प्रो. जटाशंकर (दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद वि.वि.), प्रो. अनुराग गर्ग (कॉमर्स एंड बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, इलाहाबाद वि.वि.), प्रो. सुमिता परमार (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद वि.वि.), प्रो.

अनिता गोपेश (जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद वि.वि.), प्रो. संजोय दत्ता रॉय (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद वि.वि.) और प्रो. मालबिका पांडे (इतिहास विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)। इन निबन्धों को दो चरणो में निर्णायक मंडल ने जांचा–परखा और जिन दस प्रतिभागियों को अंतिम निर्णय सूची के लिये नामित किया उनके नाम हैं–

क्षितिज दत्त (एम.टेक, 4th Year (डूयेल डिग्री कोर्स) आई.आई.टी. खड़गपुर–पश्चिम बंगाल), तेजस्व गुप्ता (M.B.B.S. 3rd Year आर्म्ड फोर्सेज कालेज, पुणे–महाराष्ट्र), अपूर्वा लुनिया (M.B.B.S. 3rd Year महात्मा गाँधी मेडिकल कालेज, जयपुर–राजस्थान),

अनामिका मिश्रा (Vth Year नेशनल लॉ विश्वविद्यालय, दिल्ली), इंसिया रंगवाला (बी.ए. द्वितीय वर्ष, सेन्ट जेवियर्स कॉलेज, मुम्बई–महाराष्ट्र), दिव्या यादव (बी.ए. (Hons. Psychology) प्रथम वर्ष लेडी श्री राम कॉलेज (महिला शाखा) दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली), प्रखर त्रिपाठी (डी. फिल., राजनीति विज्ञान, इलाहाबाद वि.वि., इलाहाबाद), प्रिया बर्नवाल (बी.ए., एल.एल.बी. 5th Year इलाहाबाद वि. वि., इलाहाबाद), कन्हैया कुमार (बी.ए. तृतीय वर्ष, इलाहाबाद वि.वि., इलाहाबाद), नीलू मिश्रा (बी.एड. एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय (संघटक इलाहाबाद वि.वि.) इलाहाबाद), इन सभी प्रतिभागियों को दो अक्टूबर 2016 को महाविद्यालय परिसर में निबन्ध प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। इन्हें निबन्ध प्रस्तुति के साथ–साथ निर्णायकों के प्रश्नों और जिज्ञासाओं का भी समाधान करना था। तीसरे और अन्तिम चरण के निर्णायक मंडल में दो चरणों के निर्णायकों के अतिरिक्त अन्य तीन सम्मानित निर्णायकों को भी रखा गया। उनके नाम हैं – सुश्री मीरा शंकर (Retd. I.F.S., Ambassdor of U.S.A.), डॉ. विवेक अग्निहोत्री (Retd. I.A.S., पूर्व सेक्रेटरी जनरल राज्य सभा) और प्रो. आर..सी. मिश्रा (मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी)

अंतिम चरण में पुरस्कार के लिए जिन पाँच प्रतिभागियों का चयन किया गया उनेक नाम हैं –

1. अनामिका मिश्रा–'दामोदर श्री' सम्मान एवं ₹ दो लाख का नगद पुरस्कार।
2. अपूर्वा लूनिया–प्रथम उपजेता – ₹ एक लाख का नगद पुरस्कार।
3. प्रखर त्रिपाठी–द्वितीय उपजेता – ₹ 50 हजार का नगद पुरस्कार।
4. दिव्या यादव–सर्वश्रेष्ठ स्नातक वर्गीय प्रतिभागी – ₹ 30 हजार का नगद पुरस्कार।
5. प्रिया बर्नवाल–विशेष पुरस्कार (संयोजन समिति द्वारा निर्णीत) – ₹ 30 हजार का नगद पुरस्कार।

इस अवसर पर वरिष्ठ एवं प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. वी.एन. मित्तल को सम्मानित किया गया। प्रो. दामोदर दास खन्ना की स्मृति को समर्पित 'स्मृति सम्मान', स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया।

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह - 2016

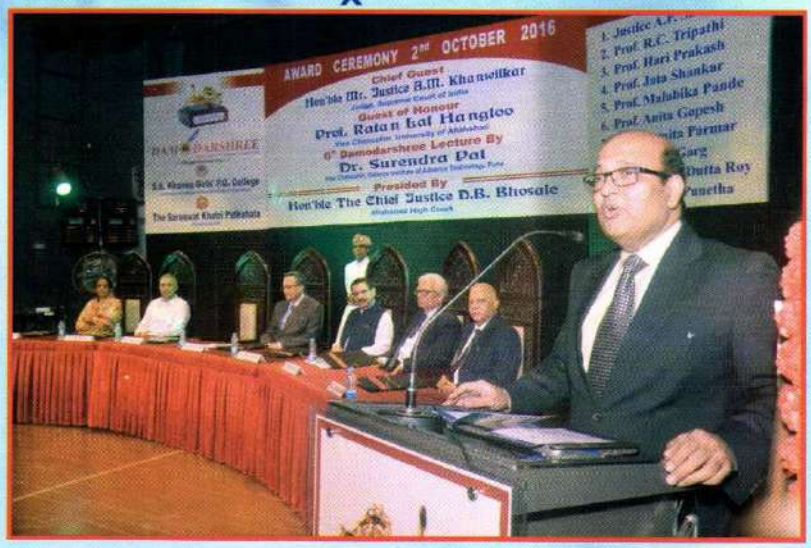

माननीय मुख्य न्यायमूर्ति
श्री डी.बी. भोंसले
इलाहाबाद उच्च न्यायालय

माननीय न्यायमूर्ति
श्री ए. एम. खानविलकर
सुप्रीम कोर्ट ऑफ इण्डिया

सरस्वती वंदना प्रस्तुत करती छात्राएं

NCC - प्रतिभाएँ

नेहा
B.Com. – III
(गणतन्त्र दिवस परेड)
राजपथ
राष्ट्रीय स्तर

दीपशिखा शुक्ला
B.A. – II
(थल सैनिक कैंप)
राष्ट्रीय स्तर

अनुपमा पाल
B.A. – I
(थल सैनिक कैंप)
राष्ट्रीय स्तर

स्मृति कुशवाहा
B.A. – II
पीआरडीसी
प्रथम

मंजरी शुक्ला
B.A. – II
आइजीसी
प्रदेश स्तर

स्वाति यादव
B.A. – II
आइजीसी
प्रदेश स्तर

आज भी दरकिनार हैं बेटियां पैतृक संपत्ति में अपने अधिकार से

डॉ. रीता चौहान
एसो. प्रो.: शिक्षाशास्त्र

कानून की नज़र में माता–पिता बेटे और बेटी में कोई भेदभाव नहीं कर सकते। महिलाओं को पिता की पुश्तैनी सम्पत्ति में पूरा अधिकार मिला हुआ है। अगर लड़की के पिता ने खुद बनाई सम्पत्ति के मामले में कोई वसीयत नहीं की है, तब उनके बाद प्रापर्टी में लड़की को भी उतना ही हिस्सा मिलेगा जितना लड़के को और उनकी माँ को। जहाँ तक शादी के बाद इस अधिकार का सवाल है तो यह अधिकार शादी के बाद भी कायम रहेगा। पिता की सम्पत्ति में बेटों के बराबर हिस्सेदारी का कानूनी हक हासिल करने के बाद बेटियों को अब उत्तराधिकार में भी अधिकार मिलना बड़ी कामयाबी है। कोलकाता के एक केस में अदालत ने कहा कि संपत्ति का मालिक (जो संपत्ति उसने स्वयं खरीदी है) किसी भी समय वारिस को बदल सकता है और किसी और को वारिस बना सकता है। अदालत का यह फैसला महिलाओं के कानूनी हक को अंजाम तक पहुँचाने में अहम् हथियार साबित होगा।

यहाँ एक बात अवश्य समझना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक फैसले में कानून की व्याख्या करते हुए कहा है कि अगर पिता की मृत्यु 2005 में हिदूं उत्तराधिकार कानून में संशोधन से पहले हो चुकी है तो ऐसी स्थिति में बेटियों को संपत्ति के अधिकार से वंचित रखा जाएगा। अदालत ने कहा हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम, 2005 के संशोधित प्रावधान के एक सामाजिक विधान होने के बावजूद पूर्वव्यापी प्रभाव नहीं हो सकता। कोर्ट ने बताया कि बेटी को संपत्ति में बराबर का हिस्सेदार तभी माना जाएगा, जब पिता 9 सितंबर, 2005 को जीवित हों। गौरतलब है कि हिंदू उत्तराधिकार कानून 1956 में बेटी के लिए पिता की संपत्ति में किसी तरह को कानूनी अधिकार की बात नहीं कही गई। जबकि संयुक्त हिंदू परिवार होने की स्थिति में बेटी को जीविका की मांग करने का अधिकार दिया गया था। बाद में 9 सितंबर, 2005 को संशोधन लाकर पिता की संपत्ति में बेटी को भी बेटे के बराबर अधिकार दिया गया।

परन्तु असली सवाल तो कई हैं: क्या बेटियां अपना कानूनी हक पा रही हैं? क्या समाज इनको अपना कानूनी हक देने को तैयार है? क्या लड़कियां पिता और भाइयों से ये हक मांग पा रही हैं? इन सवालों का उत्तर जानने के लिए 317 लड़कियों से बात की गई। बात करने के लिए लड़कियों को निम्न विशेशताओं के दायरे में चयनित किया गया:

1. सभी लड़कियाँ 21 से 25 आयु वर्ग की थीं।
2. सभी मध्यवर्गीय आर्थिक स्थिति की थीं।
3. सभी के पिता के पास अपना मकान था।
4. सभी के माता–पिता कम से कम स्नातक स्तर की शिक्षा सम्पृक्त थे।

सभी लड़कियों से प्राप्त उत्तरों को शब्दों और आंकड़ों में व्यवस्थित करके यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है:

लड़कियों की संख्या	उनका कहना
• 38	ये सब कानूनी बाते हैं। बेटे–बेटियों का फर्क कभी दूर नहीं हो सकता।
• 41	पिता और भाई से हक मांगने पर रिश्तों में दरार पैदा होगी।
• 18	लड़कियों में इतनी हिम्मत नहीं होती कि माता–पिता से अपना हक मांगे।
• 19	माता–पिता और रिश्तेदार कहते हैं कि तुम्हारी तो शादी हो जाएगी, जहॉ जाओगी उन लोगों की जिम्मेदारी होगी। यहाँ सबसे मनमुटाव हो जाएगा तो आगे जरूरत पड़ने पर कोई काम नहीं आएगा
• 30	महिलाओं को इस कानून की जानकारी ही नहीं है, वे तो समझती हैं कि उनकी शादी करके माता–पिता जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं।
• 17	हमारे यहां लड़कों को ही सब कुछ मिलता है, लड़कियों की शादी कर दी जाती है। शादी में कम पैसा लगता है क्या, और फिर

लड़कियों को पति की संपत्ति तो मिलती ही है।

- 22 बेटियों को बराबर का हक देने की परम्परा हमारे समाज में है ही नहीं।
- 21 लड़कियों की परवरिश ही इस तरह से की जाती है कि वे पिता और भाई से संपत्ति मांगने की हिम्मत ही नहीं कर सकतीं।
- 09 संपत्ति में हक मांगने पर परिवार के लोग ही लड़कियों दबाने की कोशिश में लग जाते हैं।
- 42 कानून भले ही बना दिया गया हो लेकिन मानसिकता आज तक वही है। अगर कोई लड़की अपना हक चाहती हो तो उसे रिश्तों का, रक्षा बंधन का, भैया दूज का हवाला देकर भावनात्मक रूप से कमजोर कर दिया जाता हैं अगर वह हक मांगेगी तो सब उससे नाराज हो जाएंगे, कोई उसका साथ नहीं देगा।
- 31 सरकार कानून कितने ही बना ले, मगर समाजिक मान्यता का क्या कर पाएगी?
- 13 हमारे समाज में हक मांगने वाली बेटियों को गलत समझा जाता है।
- 16 इस संबंध में बात करना बेकार है, माता–पिता अपनी मर्जी से जो करना चाहते हैं, वही करते हैं।

इन लड़कियों से बात करके यह स्पष्ट है कि समाजिक नियम आज भी समाज में किसी कानून से ऊपर समझे जाते हैं। हिन्दू उत्तराधिकार कानून में दस साल पहले बदलाव हो चुका है। मगर पितृसत्तात्मक सोच उसे पचा नहीं पा रही है। इसलिए कोई लड़की जब अपने मायके में संपत्ति का अधिकार मांगती है, बराबरी का हक मांगती है, तो उसे घरवाले व आस–पड़ोस के लोग दबाने की भरसक कोशिश करते हैं। पढ़े लिखे समाज में भी ऐसा नहीं होता कि अपनी मर्जी से कोई लड़कियों को बिना विवाद के उनका यह हक दे दे। समाजिक रूप से महिलाओं को तभी अच्छा माना जाता है जब वे त्याग, सहनशीलता और शर्मीलेपन का प्रतिरूप हों। इसके भार से दबी महिलाएं चाहकर भी अपना हक नहीं मांग पाती।

संपत्ति में हिस्सा मांगने वाली लड़कियों के साथ क्या होता है, यह समझने के लिए लखनऊ के थाने के एक गांव का केस ही पर्याप्त उदाहरण है। घटना 1 दिसम्बर, 2016 की है। 20 वर्ष की रेखा और 18 वर्ष की सविता की हत्या उनके भाई ने इसलिए करवा दी क्योंकि वे पिता की संपत्ति में हिस्सा चाहती थीं। समानता के तमाम दावों के बावजूद पूरी सामाजिक व्यवस्था पुरूशों के इर्द–गिर्द ही घूमती है। संयुक्त राश्ट्र संघ की माने तो दुनिया में आबादी का आधा हिस्सा महिलाओं का है। कुल काम का दो तिहाई हिस्सा महिलाएं ही करती हैं। मगर आय का केवल दसवां भाग उनके हिस्से में आता है, तो संपत्ति का सौवां भाग उनके हिस्से में पड़ता है।

सुप्रीम कोर्ट की वकील करुणा नंदी का कहना है कि कानून बनाने के बाद उन्हें लागू करने की जिम्मेदारी भी सरकार की है। जागरुकता अभियान चलाने चाहिए। आंदोलन होने चाहिये व्यवस्था की तरफ से जितना जरूरी कानून बनाना है, उतना ही जरूरी इस तरह के आंदोलन और अभियान चालाना भी है। क्योंकि इस तरह के कानून प्रचिलित मान्यताओं और धारणाओं के खिलाफ होते हैं। महिलाओं को संपत्ति का हक मिले इसके लिए सरकारी और प्रशासनिक स्तर पर आंदोलन हों।

हज़ार में से मुश्किल से एकाध ऐसे माता–पिता मिलेंगे, जो बेटियों को बेटों के बराबर संपत्ति में हक देने को तैयार हों। बेटी की विदाई के समय उसे गले लगाकर फूट–फूट कर ऐसे रोते हैं कि कलेजे का टुकड़ा निकल कर जा रहा है। अगर वही बेटी कानून के तहत पिता की सपत्ति में बराबरी का हक मांग ले, तो उसका मुंह देखना बंद कर देंगे। माता–पिता जो हमेशा कहते रहते हैं कि वे लड़का–लड़की का भेदभाव नहीं करते, दोनों को समान ढंग से पाला है, उन्हीं से लड़कर बेटी को अपना हक लेना पड़े तो कैसे माना जा सकता है कि वे सच्ची समानता की बात करते थे। समाज को बदलने और कानून की राह पर चलने के लिए तैयार करने के लिए किसी भी आंदोलन की शुरुआत

इस बात से करनी चाहिए कि लड़कियां अपने पैतृक संपत्ति के अधिकार के बारे में जाने। ग्रामीण महिलाओं की बात तो छोड़ दीजिए, शहरों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियां अपने पैतृक संपत्ति के अधिकारों से अनजान हैं। अशिक्षा तो इसका सबसे बड़ा कारण है ही, परन्तु जो शिक्षित हैं उन्हें भी इस अधिकार के बारे में तब तक पता नहीं चलता, जब तक कि वे खुद किसी घटना का शिकार नहीं हो जातीं। बहुत से मामले में जानबूझ कर लड़कियों से उनकी संपत्ति का अधिकार छिपाया जाता है ताकि वे हक न जताने लगें। न्यादर्श में सम्मिलित 317 लड़कियों को पैतृक संपत्ति के अधिकार के बारे में कितनी जानकारी है, यह पता लगाने के इनसे एक प्रश्नावली भरवाई गई। प्रश्नावली से प्राप्त आंकड़े दर्शा रहे थे कि लगभग 86% लड़कियों को निम्न बातें नहीं पता थीं :

- हिन्दू उत्तराधिकार कानून, 1956 में 9 सितंबर, 2005 को संशोधन लाकर पैतृक संपत्ति में बेटी को भी बेटे के बराबर अधिकार दिया गया।
- बेटी को संपत्ति में बराबर का हिस्सेदार तभी मान जाएगा, जब पिता 9 सितंबर, 2005 को जीवित हों।
- अगर पिता ने अपनी अर्जित संपत्ति की कोई वसीयत नहीं की है, तब उनकी मृत्यु के बाद संपत्ति में लड़की को भी भाइयों और मां जितना ही हिस्सा मिलेगा।
- पिता की मृत्यु के बाद संपत्ति में पत्नी और बेटे, बेटियों का बराबर का हिस्सा लगता हैं। लेकिन यदि बेटी नॉन ऑब्जेक्शन सर्टीफिकेट (NOC) पर हस्ताक्षर कर दे या करवा लिया जाए तो सारी जायदाद भाइयों के नाम हो जाती है।
- हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम, 2005 के अनुसार बेटे की तरह बेटी भी जन्म के आधार पर परिवार में 'हमवारिस' हो जाती है। इसमें विवाहित बेटियां भी शामिल हैं।
- यदि किसी लड़की की शादी टूट जाए तो वह अपने पैतृक घर लौट सकती है, यह उसका कानूनी अधिकार है।
- एक हिंदू संयुक्त परिवार में बेटी अब उत्तराधिकारी के रुप में दावे का अधिकार रखती है और परिवार के सभी सदस्यों के बीच बराबर हिस्से का स्वामित्व भी।
- अगर संपत्ति में किसी लड़की का नाम नहीं है या उसे संपत्ति पर बराबरी का हक देने के लिए मना किया जाता है तो वह सीधे तहसीलदार को एक आवेदन पत्र लिख कर खतौनी दिखाकर मुकदमा कर सकती है।

पैतृक संपत्ति में अपने अधिकार का दावा करने वाली लड़कियां बहुत कम या न के बराबर हैं। इसके दो ही कारण हैं : पहला परिवार और समाज की मानसिकता, दूसरा लड़कियों को अपने इस अधिकार की जानकारी न होना। इन्हीं दोनों कारणों के चलते लड़कियां अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं। हमारे देश में कानूनी शिक्षा का उतना प्रचार–प्रसार नहीं किया जाता है, जितना अन्य देशों में। हमारे देश में कानूनी शिक्षा का मतलब सभी लोग वकालत की पढ़ाई ही मानते हैं, जबकि अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता व जानकारी कानूनी शिक्षा है। लड़कियों को संपत्ति का अधिकार तभी हासिल हो सकता है, जब दो ध्रुवीय आंदोलन चलाया जाए। एक ओर समाजिक आंदोलन चलाकर पितृसत्तात्मक सोच को नियंत्रित करने का प्रयास होना चाहिए। कानून बनाकर सरकार को चुप नहीं बैठ जाना चहिए। कानून का पालन हो रहा है या नहीं? किस तरह की बाधाएं आ रही हैं? इन सब पर भी नज़र रखना, कानूनी, सामाजिक हर तरह की बाधाओं को समाप्त करने की जिम्मेदारी सरकार और न्यायालयों की है। परिवार और समाज के स्तर पर लड़कियों द्वारा संपत्ति में हिस्से की मांग को दबा दिया जाता है। यहीं से प्रशासन, सरकार और कानूनी तंत्र का काम आरम्भ हो जाता है। कानून होने पर भी यदि अधिकार नहीं मिल पा रहा है तो कानून बनाना किस काम का। कानून बनाने से लेकर उसे लागू कराने की जिम्मेदारी कानून बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए। कानून लागू करने के लिए अभियान और आंदोलन होने जरूरी हैं। कुछ एक आंदोलन चलते भी हैं तो वे महिलाओं द्वारा चलाए जाते

हैं, मगर ये काफी नहीं हैं। एक बात और है जब कभी पुलिस ही सामाजिक मान्यताओं और धारणाओं की बात करने लगती है तो यह कानून को कमजोर करने जैसी बात हो जाती है। किसी बात को वैयक्तिक तौर पर गलत मानना उस गलत को ठीक करने में उतना सहायक नहीं होता जितना कि सार्वजनिक तौर पर उस गलत को स्वीकार कर उसे खुद न करने का संकल्प लेना है, लोगों से वादा करना है। ऐसे आयोजन किए जाने चाहिए जिसमें लड़कियों के सामाजिक और कानूनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कुछ वादे करवाए जाएं। माता–पिता बेटियों के उत्तराधिकार के लिए बने कानून का पालन करने की सार्वजनिक घोशणा कर सकते हैं। ऐसे माता–पिता का सम्मान और सराहना की जानी चाहिए। इससे दूसरे लोग भी सामाजिक सम्मान से जोड़कर ऐसे कदम उठाने के लिए प्रेरित होंगे। इस दिशा में सार्थक कदम उठाते हुए बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने लोगों को कीमती संदेश देने का प्रयास किया है और वह यह है कि 'बेटे और बेटी में वाकई कोई फर्क नहीं है।' इसलिए उन्होंने अपनी संपत्ति में अपनी बेटी को उतना ही हक़ दिया है, जितना अपने बेटे को। मतलब अमिताभ बच्चन अपने बेटे अभिषेक बच्चन और बेटी श्वेता नंदा में अपनी संपत्ति बराबर बाटेंगे। उन्होंने अपने सोशल मीडिया एकाउण्ट पर लिखा है, 'जब मैं मरूंगा, तो मेरी संपत्ति बेटी और बेटे के बीच बराबर–बराबर बांटी जाएगी।'

आंदोलन के दूसरे ध्रुव पर लड़कियों को अपने अधिकार के प्रति जागरूक बनाया जाना चाहिए। सदियों से महिलाओं के उत्तरदायित्वों को इतना गौरवान्वित किया गया कि वे अपने अधिकारों से अनजान ही रहीं या यूँ कहें कि उन्हें जानबूझ कर अनजान रखा गया। यह कोशिश होनी चाहिए कि ऐसे आयोजन किए जाएं कि लड़कियां अपने अधिकारों को जान सकें। उचित स्तर पर शिक्षा के पाठ्यक्रम में महिलाओं के अधिकारों का एक अध्याय रखकर इस मकसद को शीघ्र पूरा किया जा सकता हैं। महिला कालेजों में इसके लिए खास वर्कशॉप्स और प्रोग्राम्स रखे जाने चाहिए।

समय का सदुपयोग

ज्योति पाल, बी.ए. द्वितीय वर्ष

कितने आश्चर्य की बात है कि रात-दिन, नींद, हंसी मजाक, मनोरंजन, जुए-शराब, आलस्य प्रमाद तथा कुकर्मों में लीन व्यक्ति अपने इस बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ ही गँवा देता है। कितने लोग है जो इसके एक-एक पल का हिसाब रखते हुए समय का सदुपयोग करके इसका अधिकाधिक लाभ उठाने की चेष्टा करते हैं!

ऐसे बहुत कम लोग हैं जो समय के महत्त्व को पहचानते हैं। लेकिन समय का सदुपयोग करने वाले लोग ही समय पर शासन करते हैं और इतिहास के निर्माता बनते हैं। समय का सदुपयोग जीवन में उन्नति करने का प्रमुख आधार है। समय का सदुपयोग करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में निरंतर प्रगति करता है, उसके सामने जो भी समय आता है उसका वह अधिक उपयोग करके अपनी शक्ति और प्रभाव को बढ़ाता चलता है।

विद्यार्थी जीवन में समय सर्वाधिक मूल्यवान है। एक-एक क्षण हीरे-मोतियों जैसा कीमती है। इस समय प्रत्येक विद्यार्थी को चाहिए कि 24 घण्टों को इस प्रकार सुनियोजित रूप में बांटकर उनका सदुपयोग करे जिससे उसके शारीरिक मानसिक एवं नैतिक क्षमताओं और शक्तियों का संतुलित रूप में विकास हो सके। जो विद्यार्थी अपने आप को कल पर टाल देते हैं तथा अपने समय का संतुलित नियोजन नही करते वे समय की धारा में खो जाते हैं। समय को व्यर्थ बरबाद करने के कारण बड़े-बड़े होनहार, बुद्धिमान एवं स्वस्थ युवक जीवन में बुरी तरह असफल हो जाते हैं। कारण केवल एक ही होता है- "समय के प्रति आलस्य।" समय को महत्त्व न देने के कारण ही बड़े-बड़े समर्थ लोग असफलता के झंझावात में फँसकर हवा हो जाते हैं। अतः समय का सम्मान कीजिए, समय को पहचानिए। उसे अपने अनुकूलन बनाने का प्रयास कीजिए। उसके अनुसार अपने को ढालिए। उसका सदुपयोग कीजिए, उस पर शासन कीजिए। उसकी लगाम ढीली मत होने दीजिए तभी हम समय के शीर्ष पर अपनी विजय पा सकेंगे। जो लोग समय का सदुपयोग करते हैं वही सफलताओं एवं उपलब्धियों को हाथ में लेकर अपने माता-पिता का नाम अमर कर सकते हैं। प्रकृति के समस्त कार्य समय पर संचालित होते हैं। सूर्य और चन्द्रमा निश्चित समय पर उदय और अस्त होते हैं। वस्तुओं का आगमन भी निश्चित समय पर होता है। परन्तु मानव ऐसा प्राणी है जो समय के मूल्य को नहीं पहचानता है। वह समय को नष्ट करके पछताता है। अतः विद्यार्थी को एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करना चाहिए। क्योंकि शून्य मस्तिष्क शैतान का घर होता है।

राष्ट्रभाषा के लिए हिन्दी सर्वाधिक उपयुक्त भाषा

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

"है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी-भरी।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।।"

प्रत्येक मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति किसी न किसी भाषा के माध्यम से करता है। साहित्य, विज्ञान, कला, दर्शन आदि सभी का आधार भाषा ही है। किसी भी देश के निवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास और पारस्परिक सम्पर्क के लिए एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जिसका व्यवहार राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सके। डॉ. जाकिर हुसैन ने कहा था- "हिन्दी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी।"

राष्ट्रभाषा से तात्पर्य है- 'किसी राष्ट्र की जनता की भाषा। मनुष्य के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए राष्ट्रभाषा अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य चाहे जितनी भी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले, परन्तु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसे अपनी भाषा की शरण लेनी पड़ती है। इससे उसे मानसिक सन्तोष का अनुभव होता है। राजर्षि टण्डन ने कहा था- "हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।" संविधान का निर्माण करते समय यह प्रश्न आया कि किस भाषा को राष्ट्रभाषा बनाया जाय ! तब हिन्दी के महत्त्व को ध्यान में रखकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया गया। *महात्मा गाँधी ने कहा-* "राष्ट्रभाषा की जगह एक हिन्दी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।"

हिन्दी भाषा संसार की सबसे अधिक सरल, सरस, मधुर एवं वैज्ञानिक भाषा है, फिर भी हिन्दी के कुछ विरोधी हैं जो इसे राष्ट्रभाषा नहीं मानते। राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं वरन् इसके लिए जन-जन का सहयोग आवश्यक है। केन्द्रीय सरकार ने 'हिन्दी-निदेशालय' की स्थापना करके हिन्दी के विकास-कार्य को गति प्रदान की है। 'नागरी प्रचारिणी सभा', 'हिन्दी-साहित्य सम्मेलन आदि संस्थानों ने हिन्दी के विकास तथा प्रसार-प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी भाषा भारत के विस्तृत क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है, जिसे देश के करोड़ों लोग बोलते हैं। यह सरल तथा सुबोध है और इसकी लिपि इतनी बोधगम्य है कि थोड़े अभ्यास से समझ मे आ जाती है। राष्ट्रभाषा के लिए हिन्दी सबसे उपयुक्त भाषा है। हमारी राष्ट्रभाषा की उन्नति ही हमारी उन्नति है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निजभाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"

हमारा कर्तव्य है कि हम हिन्दी के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाएं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के अन्तर्गत विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं की सरल शब्दावली का अपनाया जाना चाहिए। राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है। हिन्दी भाषा राष्ट्रीय जीवन का आदर्श है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता के सदंर्भ में कहा था- "मैं हमेशा यह मानता रहा हूँ कि हम किसी भी हालत में प्रान्तीय भाषाओं को नुकसान पहुँचाना नहीं चाहते। हमारा मतलब तो सिर्फ यह है कि विभिन्न प्रान्तों के पारस्परिक संबंध के लिए हम हिन्दी-भाषा सीखें।"

हमारे देश में हिन्दी एवं अहिन्दी भाषी अनेक विद्वानों ने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का समर्थन किया है और हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान प्रदान करते हुए राष्ट्रभाषा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।

सोशल मीडिया : सामाजिक संदर्भ में योगदान

नीलू मिश्रा, बी.एड. द्वितीय वर्ष

तकनीकी विकास के हर दौर में मीडिया का सत्ता और सरकार से अहम रिश्ता रहता है। भारत में अंग्रेजों के कार्यकाल से ही प्रिंट मीडिया की भूमिका का जिक्र रहा है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक के बाद अब ऑनलाइन मीडिया ने समाज में अपनी पकड़ मजबूत करनी शुरू कर दी है।

1990 में इंटरनेट के शुरूआत के साथ ही, सोशल मीडिया का जन्म हुआ। पहले इंटरनेट का इस्तेमाल जरूरी फाइलों के आदान-प्रदान से शुरू हुआ तथा इसमें चैट (Chat) की सुविधा थी। धीरे-धीरे इसके विकास के साथ, अब यह एक वृहद आकार ले चुका है। आज फेसबुक (Facebook) एवं ट्वीटर (Twitter) सोशल मीडिया के प्रमुख मंच हैं।

समाज के बदलते परिवेश में मीडिया एक वरदान सिद्ध हो रही है, जिसका औपचारिक इस्तेमाल कर हम अपने ज्ञान को बढ़ा सकते हैं क्योंकि-

भावावेश उद्घोष जनसंकुल जहां जनता
तारुण्य निरालस उड़ान है।
अनुगूँज, अप्रतिम, आत्म शोभित वहां
तकनीकी और विज्ञान की पहचान है।।

सामाजिक संदर्भ में देखा जाए तो सोशल मीडिया ने दुनिया का आकार छोटा कर दिया है - जहाँ पहले संचार में समय बहुत लगता था, वहीं अब यह मात्र सैकेंडों में पूरी दुनिया में फैल जाता है। इसके इसी तेज गति एवं व्यापक पहुँच के कारण आज समाज के अधिकतर व्यक्ति इससे जुड़े हैं।

आज सोशल मीडिया न सिर्फ मनोरंजन एवं व्यक्तिगत साधन के तौर पर , बल्कि सरकार की कार्यनीतियों पर नज़र रखने एवं दबाव समूह तैयार करने का भी साधन बन गया है। सरकारें भी इससे अछूती नहीं हैं। अब वे भी इस दौर में इसका प्रयोग चुनाव प्रचार तथा अपनी योजनाओं के विकास में कर रहीं हैं। यह हमें एक डिजिटल दुनिया की ओर ले जा रही है। मीडिया एक साधन है, विपणन, संप्रेषण, ज्ञान और व्यक्तिगत सोच के ऊपर जाने का माध्यम है।

नज़रिया बदल कर देखे तो,
नज़र-नज़र में फर्क मिलेगा,
जो आज बना है, कल उससे बेहतर बनेगा,
गर ज़माना अपनी सोच बदलेगा।।

अपनी इतनी खूबियों के बावजूद, सोशल मीडिया, गैर-सामाजिक तत्त्वों से भी परे नहीं है। कुछ आतंकी संगठन जैसे आईएसआईएस बड़े पैमाने पर इसका प्रयोग कर अपने संगठन को बड़ा बना रहे हैं। पुलिस एवं खुफिया एजेंसियों के लिए इसका पता लगा पाना एक टेढ़ी खीर साबित हो रही है।

इतनी व्यापकता के कारण आज इसको कोई अनदेखा नहीं कर सकता। अतः समाज पर इसका प्रभाव पड़ना जाहिर सी बात है। युवा पीढ़ी खासकर इसमें अपना अधिक समय व्यतीत कर रही है, जो समय वह अन्य उपयोगी कार्यों में भी लगा सकती है।

सोशल मीडिया आज के युग की माँग है तथा इसका जितना विकास, जागरूकता एवं नैतिक उपयोग किया जाए, उतना ही यह देश और समाज को आगे ले जाएगी।

विज्ञान अभिशाप नहीं हो सकता यदि मनुष्य यह समझ ले कि किस तरह इन बदलती तकनीकों के प्रयोग को मानव जीव में सक्षमता से लाया जा सकता है। क्योंकि-

औपचारिक, आधुनिकता के वर्तमान परिवेश में
हम स्वतंत्र, बुद्धिमत्ता के स्वामी है।
इस कड़ी में समाज और तकनीक का रिश्ता
कैसा है ? हम स्वयं इसके ज्ञानी है।।

शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी गतिविधियाँ

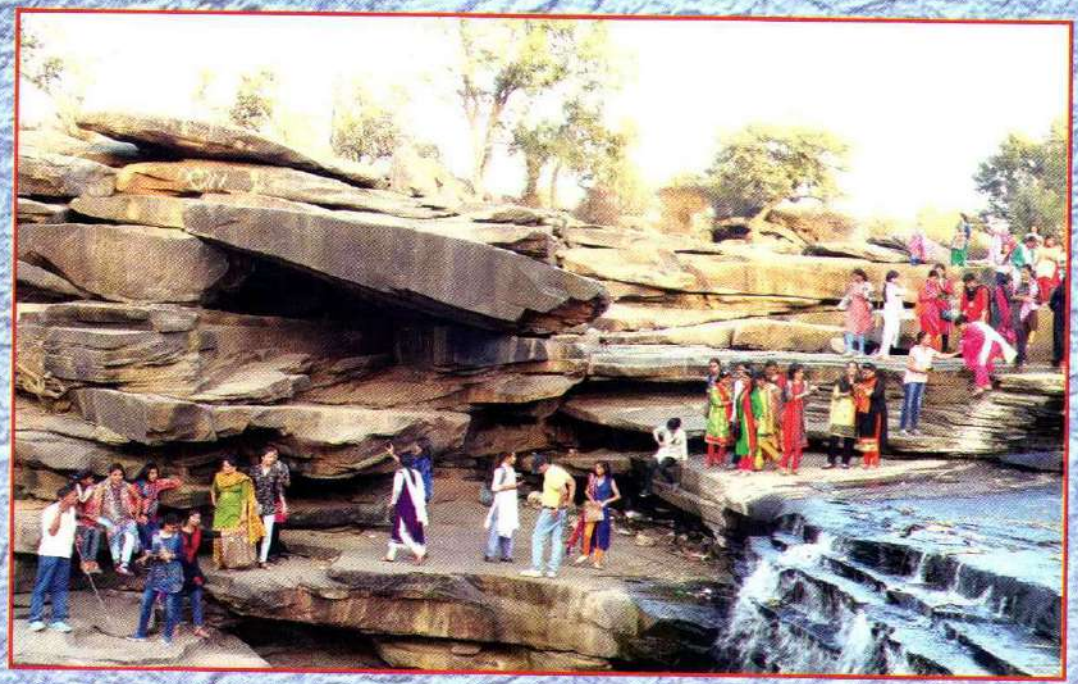

प्रगति आख्या–1

शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी सेवाएं

दामोदर दास खन्ना कला संकाय, सरोज लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय, नन्द किशोर खन्ना वाणिज्य संकाय एवं डॉ. मधु टंडन बी.एड. संकाय में अध्ययनरत लगभग तीन हजार छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय निरन्तर उच्च कोटि का शैक्षिक वातावरण और छात्र सहयोगी सेवाएं प्रदान कर रहा है।

समस्त सुविधाओं और संसाधन युक्त "श्यामनाथ कक्कड़ पुस्तकालय" में छात्राओं के ज्ञानार्जन हेतु लगभग 3000 पुस्तकें, श्रेष्ठ उपन्यास, संदर्भ ग्रन्थ के साथ–साथ नियमित रूप से आने वाले 12 समाचार पत्र 31 पत्रिकाएं तथा 40 जर्नल उपलब्ध हैं। जरुरतमंद छात्राओं के लिये बुक बैंक से निःशुल्क पुस्तकें प्राप्त करने और वांछित अध्ययन सामग्री को न्यूनतम मूल्य में फोटोकॉपी कराने की सुविधा भी सभी छात्राओं को प्राप्त है। बी.एड. संकाय में छात्राध्यापिकाओं के अध्ययन हेतु विभागीय पुस्तकालय भी है। DELNET और INFLIBNET के माध्यम से शिक्षक वर्ग एवं विद्यार्थियों को online e-books पढ़ने की सुविधा भी महाविद्यालय पुस्तकालय प्रदान करता है।

अकादमिक, शोध और विस्तार कार्य आदि गतिविधियों की आख्या मूल्यांकन उपरान्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा महाविद्यालय का चयन CPE (कॉलेज पोटेन्शियल फॉर एक्सीलेन्स) के द्वितीय चरण के लिये हुआ। जिसके फलस्वरुप महाविद्यालय में गुणवत्ता संवर्धन हेतु एक करोड़ बीस लाख की अनुदान राशि स्वीकृत हुई। इस योजना के पाँच वर्षो में गुणवत्ता संवर्धन से महाविद्यालय उपलब्धियों में नये–नये आयाम जुड़ेंगें।

मेधा सम्मान के सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए सत्र 2015–16 में महाविद्यालय के समस्त संकाय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को वार्षिकोत्सव 'उदिता' में मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

छात्रा का नाम	संकाय	पदक
ऐमन इफ्तेख़ार	कला	मनोहर दास खन्ना स्मृति स्वर्ण पदक
सैयदा फौज़िया इकबाल	विज्ञान	डॉ. मधु टण्डन स्मृति स्वर्ण पदक
नाज़िश फात्मा	वाणिज्य	गायत्री राजनरायण धवन स्मृति स्वर्णपदक
अंजलि सिंह	बी.एड.	अशोक मोहिले स्मृति स्वर्ण पदक
सैयदा फौज़िया इकबाल	बायोटेक्नोलॉजी	न्यायमूर्ति रामभूषण मेहरोत्रा स्मृति स्वर्ण पदक
सैयदा फौज़िया इकबाल	सर्वतोमुखी (सभी संकायों के मध्य)	प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक

कला संकाय में बी.ए. प्रथम वर्ष की दीप्ति राजपूत, शिवानी त्रिपाठी और रहनुमा अंसारी, द्वितीय वर्ष में शकीना फातिमा, स्वाति मिश्रा और नशरा खान तथा तृतीय वर्ष में ऐमन इफ्तेखार नवीना नावेद और कोमल जायसवाल ने श्रेष्ठता सूची में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विज्ञान संकाय बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में शादमा जुल्फ़िकार, सरह ज़मन, आकांक्षा यादव द्वितीय वर्ष में रिमशा सुल्ताना, कुलसूम ज़ाफरी, रागिनी सिंह और तृतीय वर्ष में सैय़दा फौज़िया इकबाल, तसबीहा ताब ज़रीन, फरहीन सिद्दीकी ने महाविद्यालय विज्ञान संकाय की श्रेष्ठता सूची में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वाणिज्य संकाय की श्रेष्ठता सूची में बी.कॉम. प्रथम वर्ष में शिज़ा लईक, अमिशा अग्रहरि, अलीमा उमर, द्वितीय वर्ष में अपराजिता पाण्डेय, प्रिया गुप्ता, प्रेरणा श्रीवास्तव तथा तृतीय वर्ष में नाजिश फात्मा, रत्निका गुप्ता, साइमा ज़मन ने क्रम से प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली प्रत्येक छात्राओं को जी.सी. मेमोरियल क्विज़ कम्पटीशन कार्यक्रम के अवसर पर ₹ 11000/– का चैक सारस्वत खत्री पाठशाला की तरफ से सोसायटी के अध्यक्ष श्री हरिश चन्द्र खन्ना जी द्वारा प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बी.एड. संकाय में छात्राध्यापिका अंजलि सिंह, कल्पना सिंह, प्रियंका श्रीवास्तव, सिमरन सिंह, नीलू मिश्रा, राज पल्लवी सिंह, तनुषा यादव और श्रद्धा मिश्रा ने श्रेष्ठता सूची में स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

वार्षिकोत्सव 'उदिता' में सभी संकाय की सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को एवं सभी विषय में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को विभिन्न दानदाताओं द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति चैक सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी द्वारा प्रदान किया गया।

व्यक्ति और संस्था के विकास का मुख्य आधार अनुशासन हैं इस विचार को यथार्थ धरातल प्रदान करने के उद्देश्य से सत्र के प्रारम्भ में सभी संकायों की ''प्रॉक्टोरियल मीट'' का आयोजन कर छात्राओं को महाविद्यालय संबंधित नियमों की जानकारी और रैगिंग के संबंध में यू.जी.सी. निर्देश से अवगत कराते हुये छात्राओं को आचरण संबंधी नियम–निर्देश के अनुपालन हेतु प्रेरित किया गया। **प्रॉक्टोरियल बोर्ड** द्वारा मतदान विधि से चुनाव कर छात्र परिषद का गठन किया गया। बी.कॉम. तृतीय वर्ष की यशी जायसवाल को अध्यक्ष, बी.ए. द्वितीय वर्ष की कायनात् फात्मा को उपाध्यक्ष तथा बी.ए. प्रथम वर्ष की सदफ फात्मा को सचिव और बी.ए. प्रथम वर्ष की पल्लवी सिंह को संयुक्त सचिव हेतु नामित किया गया। छात्र परिषद के कार्यो में पदाधिकारियों के सहयोग हेतु प्रत्येक संकाय से कुल 85 छात्र प्रतिनिधियों का चयन किया गया। पद अलंकरण समारोह में छात्र परिषद के पदाधिकारियों को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू द्वारा सैश एवं बैज प्रदान किया गया। शपथ ग्रहण कार्यक्रम में छात्र परिषद के पदाधिकारियों एवं छात्रा प्रतिनिधियों को सत्र भर स्वयं अनुशासित रहते हुये परिसर में भी अनुशासन व्यवस्था स्थापित करने की शपथ ग्रहण कराई गई। महाविद्यालय में आयोजित सभी अकादमिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्र परिषद ने अपने प्रतिनिधियों की सहायता से अनुशासन व्यवस्था सुनिश्चित की।

छात्र कल्याण परिषद द्वारा छात्र कल्याण संबंधी महाविद्यालय नीतियों का प्रसार करने के साथ ही नवप्रवेशी छात्राओं के स्वागत में 'नवोत्कर्ष 2016' कार्यक्रम आयोजित किया गया। रंगारंग कार्यक्रम के साथ ही 'मिस फ्रेशर कॉन्टेस्ट' में तीन राउन्ड की प्रतियोगिता के बाद सदफ फात्मा का चयन 'मिस फ्रेशर' के रूप में हुआ। 'आजादी के 70 वर्ष जरा याद करो कुर्बानी' सप्ताह के अन्तर्गत इतिहास परिषद के संयुक्त तत्वावधान में प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित कर छात्राओं में स्वतंत्रता संग्राम' की महत्वपूर्ण घटनाओं और शहीदों की कुर्बानी से राष्ट्रीय मूल्य स्थापित कराने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त 'देशी रियासतों के एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का योगदान' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। राष्ट्रीय एकता दिवस पर Run For Unity कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा

रैली निकाल कर एकता का संदेश दिया गया। छात्र परिषद, छात्र कल्याण परिषद, सामाजिक विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'अपना व्यवसाय चुनिये' 'Choose your Profession' में विषय विशेषज्ञ द्वारा व्याख्यान दिया गया। शिक्षक दिवस के आयोजन के साथ ही AIMA के तत्वावधान में "Shaping your Minds Interactive" विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। छात्राओं ने स्वास्थ्य सुरक्षा तथा मतदाता जागरुकता कार्यक्रम में भी प्रतिभागिता की। सत्र के अन्त में छात्राओं को सफलता हेतु शुभकामना देने के लिये फेयरवेल कार्यक्रम 'आशीष तरंग' सम्पन्न हुआ। जिसमें बी.एड. छात्राध्यापिका कु. अंजलि सिंह को मिस एस. एस. खन्ना का खिताब मिला।

महाविद्यालय में छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निराकरण व चिकित्सकीय परामर्श हेतु **'स्वास्थ्य सेवा प्रकोष्ठ'** सतत् क्रियाशील है। शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिये 'योग शिविर' का आयोजन किया गया। शिविर में श्री एन.सी. वैश्य एवं योगी पुण्डरीक द्वारा विभिन्न योगासनों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निराकरण में उपयोगिता विषय पर प्रकाश डालते हुये छात्राओं को मुख्य योगासनों का अभ्यास कराया गया। स्वास्थ्य सेवा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित 'नेत्र एवं दंत परीक्षण शिविर' में डॉ. हुमा आतीफ, डॉ. आतीफ करीम एवं श्री मुहम्मद शारिक द्वारा छात्राओं, शिक्षकों और गैर शिक्षक वर्ग के सदस्यों के दांत और आँख का परीक्षण किया गया। शिविर में अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निराकरण हेतु भी चिकित्सकीय परामर्श प्रदान किया गया। विषय विशेषज्ञ डॉ. हुमा आतिफ द्वारा दाँतों की बीमारियाँ और उससे बचाव के बारे में पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन कर छात्राओं को स्वास्थ्य के संबंध में जागरूक किया गया।

महिला प्रकोष्ठ विविध कार्यक्रमों के माध्यम से छात्राओं को उनके अधिकार और दायित्व के प्रति सजग करने के लिये सक्रिय रहता है। 'अन्तर राष्ट्रीय महिला दिवस पर, मतदान, छात्राओं का दायित्व है यह बोध कराने के लिये इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रो. रंजना कक्कड़ का व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें मतदाताओं के मतदान करने व न करने से होने वाले लाभ और हानि पर प्रकाश डाला गया।

पुरा छात्रा संघ द्वारा पुरा छात्राओं की एक बैठक आयोजित कर उनकी अकादमिक उपलब्धियों से छात्राओं को परिचित कराते हुए अन्य छात्राओं को भी प्रेरित करने का प्रयास किया गया। होली मिलन समारोह में पुरा छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

स्टाफ क्लब महाविद्यालय संस्थापक प्रो. डी.डी. खन्ना द्वारा स्थापित वह मंच है जहाँ छात्राएं, शिक्षक और गैर शिक्षक वर्ग के सदस्य विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करते हैं। स्टाफ क्लब की अध्यक्ष डॉ. अल्पना अग्रवाल के कुशल निदेशन में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में भजन, लोकगीत, लोकनृत्य, गीत, नोटबन्दी पर आधारित लघु नाटिका की मनोहारी प्रस्तुति की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति अरूण टंडन ने अपने उद्बोधन में छात्राओं को अनुशासित और कर्तव्यनिष्ठ होकर अभिभावकों और राष्ट्र के प्रति संवेदनशील होने का संदेश दिया।

छात्राओं का सर्वांगीण विकास और उनकी सुरक्षा महाविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। महाविद्यालय की नीतियों के अनुपालन में शिक्षकों के साथ ही अभिभावकों के सहयोग की भी अनिवार्य भूमिका है। **शिक्षक अभिभावक संघ** परस्पर विचार–विमर्श हेतु प्रत्येक संकाय में अलग–अलग बैठक आयोजित कर महाविद्यालय की विभिन्न नीतियों और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी, अभिभावकों को प्रदान करता है। ड्राइविंग लाइसेन्स, हेलमेट का प्रयोग सुरुचिपूर्ण वेशभूषा तथा कक्षाओं में 75% उपस्थिति सुनिश्चित करने हेतु अभिभावकों से सहयोग की अपेक्षा की गई। विभिन्न छात्रवृत्ति, शुल्क मुक्ति तथा दामोदर श्री राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान तथा वाणिज्य संकाय में प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले जी.सी. मेमोरियल प्रपत्र लेखन और प्रश्न मंच प्रतियोगिता की जानकारी देते हुये समस्त संकयों में आयोजित शिक्षण–शिक्षणेतर गतिविधियों में छात्राओं की प्रतिभागिता हेतु अभिभावकों से प्रोत्साहन देने

की अपील की गई। अभिभावकों ने महाविद्यालय के अनुशासन और प्रबंधन की प्रशंसा करते हुये सम्पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। अभिभावकों से प्राप्त बहुमूल्य सुझावों को भावी नीतियों में सम्मिलित करने का विश्वास सभी संकाय के समन्वयकों द्वारा दिया गया।

समाज की जरुरतमंद छात्राओं को मुख्य धारा से जोड़ने और गुणवत्ता परक शिक्षा के साथ–साथ उनके सर्वांगीण विकास के लिये महाविद्यालय में पिछले दस वर्षो से लगातार Spoken English & Personality Development कोर्स संचालित किया जा रहा है। यह कोर्स छात्राओं की रोजगार संभावनाओं को बढ़ाने के साथ ही महाविद्यालय की उत्कृष्टता वृद्धि में भी सहायक है। M/s HP4 इलाहाबाद द्वारा निर्मित दो महीने के शार्ट टर्म कोर्स में 158 छात्राओं ने प्रतिभागिता कर प्रभावकारी सैद्धान्तिक और प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

महाविद्यालय में शोध संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिये **शोध समिति** ने '**सुखत्व के लिये योग**, '**स्वच्छता**' और '**डिजिटल लिट्रेसी**' इन तीन क्षेत्रों में क्रियात्मक शोध की योजना तैयार की।

महाविद्यालय प्लेसमेन्ट सेल छात्राओं को आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनाने के लिये सतत् क्रियाशील है। 'CONCENTRIX INDIA LIMITED' द्वारा कई चरणों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार उपरान्त वाणिज्य संकाय से सात छात्राओं का चयन हुआ। DAKSH INDIA PRIVATE LIMITED ने दो छात्राओं का, CAREER LAUNCHER द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला के आयोजन उपरान्त तीन छात्राओं का चयन विभिन्न पदों पर किया गया। भारत सरकार की कौशल विकास योजना के अन्तर्गत कार्यशाला का आयोजन हुआ। महाविद्यालय की 27 छात्राओं को विभिन्न कौशल प्रशिक्षण हेतु चुना गया। RUCHI'S CREATIVE ARTS में महाविद्यालय की दो छात्राओं को शिक्षिका का कार्यभार ग्रहण कराया गया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के FASHION DESIGNING INSTITUTE के लिये एक तथा विभिन्न स्कूलों में शिक्षण कार्य हेतु पाँच छात्राध्यापिकाओं का चयन हुआ।

महाविद्यालय में विस्तार कार्य योजना के अन्तर्गत विस्तार कार्य समिति द्वारा पर्यावरण, साक्षरता, रोजगार केन्द्रित शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, मतदाता जागरुकता, महिला अल्प बचत योजना, पौधारोपण, स्वच्छता कार्यक्रम, डिजिटल इंडिया, जल संरक्षण, सामाजिक सेवा भाव कार्यक्रम तथा मतदाता दिवस एवं राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन हुआ। सत्र के प्रारम्भ में IQAC समन्वयक डॉ. रीता चौहान द्वारा 'पॉलीथिन प्रयोग और पर्यावरण क्षति' विषय पर व्याख्यान के द्वारा छात्राओं को पर्यावरण के प्रति जागरुक कर पॉलीथिन प्रयोग न करने का संकल्प दिलाया गया। 'Say No. to Polythene' विषय पर बी.एड. छात्राध्यापिकाओं द्वारा वॉल मैगज़ीन का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम का विस्तार करते हुये IQAC विस्तार कार्य समिति तथा बी.एड. संकाय के संयुक्त तत्वावधान में 'Say No to Polythene' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित कर पोस्टर प्रदर्शनी लगाई गई। विज़ित प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर पर्यावरण सुरक्षा के संदेश को और प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया। प्राचार्या द्वारा पौधारोपण कर पृथ्वी को हरा–भरा रखने का संदेश दिया गया। ग्लोबल ग्रीन संस्था के निदेशक श्री मनोज श्रीवास्तव

द्वारा पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन से जल संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस कार्यक्रम में श्री संजय पुरुषार्थी एवं श्री राजू श्रीवास्तव तथा श्री प्रशांत त्रिपाठी ने भी छात्राओं को संबोधित किया। छात्राओं को रोजगार अवसर प्राप्त कराने के लिये विस्तार कार्य समिति द्वारा रोजगार केन्द्रित शिक्षा कार्यक्रम आयोजित कर विविध रोजगार परक कोर्स की जानकारी दी गई। वाणिज्य संकाय के संयुक्त तत्वावधान में 'करिअर केन्द्रित शिक्षा' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें विषय विशेषज्ञ श्री वैभव बाजपेयी और श्री रवि प्रकाश ने परिवर्तित होते शैक्षिक उद्देश्यों से छात्राओं को परिचित कराया और कॉरपोरेट क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा ग्रहण करने पर बल दिया।

छात्राओं के आर्थिक स्वावलम्बन की दिशा में कदम बढ़ाते हुये 'महिला अल्प बचत योजना के अन्तर्गत यूको बैंक की मीरापुर शाखा द्वारा एक दिवसीय कैम्प का आयोजन किया गया। जिसमें शून्य बैलेन्स से खाता खुलवाने की जानकारी दी गई। बैक कर्मियों द्वारा अधिक से अधिक छात्राओं का, परिसर में ही खाते संबंधी औपचारिकताओं को पूरा कर खाता खुलवाया गया। गरीब बच्चों को चयन कर उन्हें साक्षर बनाने के साथ ही, उत्साहपूर्वक प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को भी गति प्रदान की गई। उन्हें डिजिटल इंडिया अभियान से लाभान्वित करने के लिये मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड, आधार कार्ड बनवाने संबंधी जानकारी देते हुये मोबाइल प्रयोग का प्रशिक्षण दिया गया। प्रौढ़ शिक्षा अभियान तथा बाल साक्षरता अभियान की समस्त गतिविधियों को वॉल मैगज़ीन पर प्रदर्शित किया गया। छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर से स्वच्छता अभियान का प्रारम्भ कर उसे समिति सदस्यों के सहयोग से राज अंधविद्यालय, इसराजी देवी शिक्षण संस्थान एल्गिन रोड, करैली स्थित कुष्ठ आश्रम, अरैल घाट तक विस्तार दिया। इन स्थानों को कचरा मुक्त कर छात्राओं ने अरैल घाट पर रैली निकाली और जन जागरूकता अभियान से स्वच्छ गंगा, हरित पर्यावरण और पॉलीथिन मुक्त पर्यावरण का संदेश दिया। सामाजिक सेवाभाव का विस्तार करते हुये छात्राओं ने कुष्ठ आश्रम में खाद्य सामग्री दैनन्दिन उपयोग की वस्तुएँ, ऊनी एवं सूती वस्त्रादि वितरित किया। महाविद्यालय राजअन्ध विद्यालय को उनकी आवश्यकतानुसार विगत वर्षो में ब्रेल पुस्तकें, फ्रिज आदि भेंट करता रहा हैं। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुये दैनन्दिन उपयोगी वस्तुओं के साथ ही बच्चों के लिये नाल वाली ढोलक भेंट दी गई। Green and Clean India विषय पर अन्तर इकाई पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय और समस्त संघटक महाविद्यालय से छात्र–छात्राओं ने प्रतिभागिता की। स्वयं निर्णय लेना महिला सशक्तिकरण की ओर सबल कदम है। डॉ. मधु टण्डन बी.एड. संकाय के संयुक्त तत्वावधान में निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागिता विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विजित प्रतिभागियों को पुरस्कृत कर उत्साह वर्धन किया गया।

शिक्षा प्रद फिल्में स्वस्थ मनोरंजन के साथ–साथ सामाजिक और राष्ट्रीय यथार्थ से जुड़ने का सशक्त माध्यम है। इसी उद्देश्य से सामाजिक विज्ञान परिषद और छात्र परिषद के तत्वावधान में अकादमिक कैलेन्डर में पारित कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक बृहस्पतिवार को 'दी पाठशाला आडिटोरियम में 'मदारी, नीरजा' 'अकीरा', निल बटा सन्नाटा', रूस्तम, 'दो दूनी चार' दंगल और पिन्क' फिल्में दिखाकर छात्राओं को जीवन की विविध परिस्थितियों से रुबरु कराने की कोशिश की गई।

विद्यार्थी एवं कम्यूनिटी में कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये यू.जी.सी. में 'कम्यूनिटी कॉलेज मॉडल को स्वीकार किया गया। Advance Diploma पद Communication and Printing Skills' कोर्स यू.जी.सी. के निर्देशानुसार महाविद्यालय में संचालित हो रहा है। समस्त छात्र सहयोगी सेवाओं में गुणवत्ता परक योजनाओं से महाविद्यालय छात्राओं को सर्वांगीण विकास के साथ अकादमिक उन्नयन के पथ पर अग्रसर कर रहा है। छात्राएं श्रेष्ठ मानव संसाधन के रूप में राष्ट्र निर्माण के लिये उपयोगी हो इसी आशा से महाविद्यालय प्रशासन और प्रबंधन संसाधन और सुविधा में वृद्धि के लिये सदैव तत्पर है।

प्रगति आख्या–2

IQAC

सत्र (2016–17 में) 2016 से 2018 के लिए IQAC का गठन किया गया। संशोधित IQAC समिति इस प्रकार है –

1. Dr. Lalima Singh - Chairperson (Principal)
2. Senior Teachers
   1. Dr. Alpana Agrawal
   2. Mrs. Gunjan Sharma
   3. Dr. Neerja Sachdeva
   4. Dr. Asha Upadhyaya
   5. Dr. Meenu Agrawal
   6. Dr. Archana Tripathi
   7. Dr. Manjari Shukla
   8. Dr. Soni Srivastava
3. Administrative Official - Mr. Rajeev Khanna
4. External Expert
   1. Prof. K.K. Bhutani
   2. Prof. S.K. Seth
5. Employer - Mr. Dilip Mehrotra
6. Management Representative - Dr. Ram Krishna Tandon
7. Alumni - Ms. Anuja Pathak
8. Student President of Student union
9. Office Suptd. - Mr. Umesh Chandra Sharma
10. Community representative - Dr. Suman Seth
11. Director/Coordinator - Dr. Rita Chauhan

- इस सत्र में IQAC ने Newsletter का प्रकाशन किया। सत्र 2016-17 में 5 Newsletter प्रकाशित किए गए।
- संस्थागत योजना के अन्तर्गत 16 मई, 2017 से 30 जून, 2017 तक निःशुल्क कोचिंग कक्षाएं (प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु) संचालित की जाएंगी, जिसमें महाविद्यालय की वर्तमान तथा भूतपूर्व छात्राएं कोचिंग प्राप्त करने का अवसर प्राप्त कर सकेंगी।
- जून, 2017 में महाविद्यालय के तृतीय श्रेणी के सदस्यों के लिए CCC+ के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

शिक्षा और शिक्षक

माहेज़ेया सरफराज, एम.ए. प्रथम वर्ष

भारत में सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म दिवस शिक्षक दिवस के रूप में आयोजित किया जाता है। इनका जन्म 05 सितम्बर, 1888 को हुआ था। सन् 1962 में डॉ. राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति चुने गये।

शिक्षा का पर्याय केवल विद्यालय में पढ़ाने वाला व्यक्ति ही नहीं होता। वे सब होते हैं जिनसे हम कुछ न कुछ सीखने को मिलता है, चाहे वह छोटा हो बड़ा। कहा जाता है कि प्रकृति हमारी सबसे बड़ी शिक्षिका है, जिससे हमें जीवन के बारे में इतना कुछ सीखने को मिलता है। माता को बालक की प्रथम शिक्षिका कहा जाता है। शायद इसी कारण 'गुरू रवीन्द्रनाथ टैगोर' शान्ति निकेतन में पेड़ों के नीचे बच्चों की कक्षाएँ लगाते थे, ताकि वह प्रकृति से भी कुछ न कुछ सीखें। इसके अलावा जापान के 'सोसुकी कोबायाशी' के बारे में बताया जाता है कि वह अपने स्कूल में रेल के डिब्बे रखे हुए थे। बच्चों की कक्षाएं इन्हीं डिब्बों में लगती थीं। सच बात तो यह है कि स्कूल में अगर अच्छे अध्यापक हो, तो हर स्कूल अच्छा लगता है।

विद्यार्थी जीवन में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पर क्या आज के विद्यार्थी इसका महत्त्व समझते है? मेरे विचार से जीवन एक 'पथ' है और 'शिक्षक' उसका 'पथ-प्रदर्शक।' जर्मनी के प्रमुख शिक्षाशास्त्री 'फैड्रिक विलियम ऑगस्त फ्रोबेल' के शब्दों में "पाठशाला एक बाग है, जिसमें बालक रूपी पौधा शिक्षक रूपी माली की देख-रेख में बढ़ता है।"

शिक्षक का ऐसा पथ प्रदर्शक है जो हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे साथ है। परन्तु प्रत्येक जगह उसके रूप अलग-अलग होते हैं, परन्तु लक्ष्य एक ही होता है कि सही मार्ग दिखाये, सच्चाई एवम् सफल नागरिक बनने के लिए प्रेरित करे। जन्म के समय हमारे माता-पिता हमारे शिक्षक होते हैं। माँ हमारी पहली शिक्षक होती है। वो जो शिक्षा देती है वह हमारे साथ सारी जिन्दगी रहती है। यह हम कभी नहीं भूलते है क्योंकि हम भावात्मक रूप से उससे जुड़े है। इसलिए माँ का स्थान हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण एवं सर्वोच्च है।

"जान एडम्स" ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया मानी है। जिसमें शिक्षक का स्थान मुख्य है। शिक्षक वह है जो विद्यार्थी का सम्पूर्ण मानसिक विकास करता है और विद्यार्थी ही हर समस्या का समाधान करता है। प्राचीन साहित्य में सत्य ही कहा गया है कि "गुरू" का स्थान हमारे जीवन में सर्वोच्च होता है।

जिस प्रकार एक कली को खिलते हुए देखकर मन में प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों, को जब अपने से सर्वोच्च स्थान पर पाता है तो उसे भी ठीक उसी प्रकार की प्रसन्नता होती है। जिस प्रकार "कली की पंखुड़ियों का विकास सूर्य की किरणों से होता है।" ठीक उसी प्रकार विद्यार्थी रूपी पंखुड़ियों का विकास शिक्षक रूपी सूर्य से होता है। शिक्षक का हृदय नारियल के फल के सदृश होता है। वह बाहर से दिखने में कठोर किन्तु अन्दर से अत्यन्त कोमल एरां मधुरता लिए होते हैं। वह छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए ही कठोर होने का नाटक करता है। हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि कबीरदास जी ने अपने एक सुप्रसिद्ध दोहे में कहा है-

"गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट।
अन्दर हाथ सराहि दे, बाहर बाहै चोट।"

आकदमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

प्रगति आख्या–3

अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियां

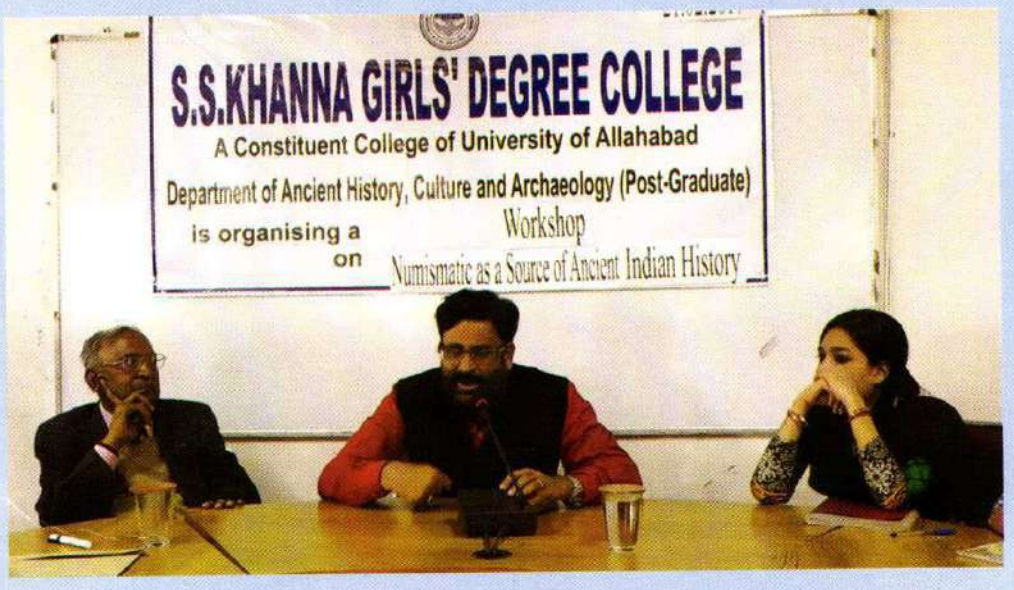

महाविद्यालय छात्राओं ने सत्र पर्यन्त महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, अन्तर इकाई, जिला, प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर की अकादमिक और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार प्राप्त किया। छात्राओं की अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभागिता और उपलब्धियों से उनके व्यक्तिगत यश के साथ ही महाविद्यालय गौरव में भी वृद्धि हुई।

यूनाइटेड नेशन्स इन्फॉरमेशन सेन्टर फॉर इंडिया एन्ड भूटान तथा श्री राम चन्द्र मिशन के संयुक्त तत्वावधान में 'शिक्षा का समग्र उद्देश्य है, आइनों को झरोखों में बदलना' – सिडने जे हेरिस विषय पर आयोजित अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में महाविद्यालय के कला, विज्ञान, वाणिज्य और बी.एड. संकाय से 100 छात्राओं ने भाग लिया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की 10,000 संस्थाओं और 11 भाषाओं में आयोजित दो लाख प्रतिभागियों में महाविद्यालय की बी.ए. प्रथम वर्ष की पूनम कुशवाहा, स्नेहा यादव, नेहा खन्ना, द्वितीय वर्ष की श्यान इकबॉल, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की अराधना श्रीवास्तव, एकता, सिमरन गुप्ता, खदीज़ा नाबिया, बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की नेहा सिंह, वैशाली गुप्ता, कृति पाठक, केसर फातिमा, बी.एड. संकाय की राज पल्लवी सिंह, आयशा एहसान, सुमन पाण्डेय और कल्पना सिंह का निबन्ध जोनल स्तर पर चयन किया गया। कु. शिवानी त्रिपाठी बी.ए. द्वितीय वर्ष ने जोनल स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया। पुरस्कार वितरण समारोह में शिवानी त्रिपाठी को पदक एवं अन्य चयनित प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। यू.जी.सी. निर्देशानुसार अकादमिक समिति ने आजादी 70, याद करो कुर्बानी'' के अन्तर्गत पौधारोपण स्वरचित काव्य पाठ, पर्यावरण संरक्षण संबंधी कार्यक्रम आयोजित किया। पूर्व प्राचार्या डॉ. शिप्रा सान्याल ने पौधारोपण कर छात्राओं को पर्यावरण हरा भरा बनाने का संकल्प कराया। बी.ए. द्वितीय वर्ष की शिवानी त्रिपाठी ने स्वरचित काव्य पाठ किया। बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की नवनीत कौर, वंदिता अग्रवाल, तृतीय वर्ष की छात्रा कुलसूम महमूद, एवं रश्मि ने पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार प्रस्तुत कर छात्राओं को जागरुक किया। पेन्टिंग एवं नारा लेखन प्रतियोगिता में विजित प्रतिभागियों को प्रमाण

पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया गया। '1857 का स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीम को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन महाविद्यालय परिसर में निर्धारित समय पर शिक्षक, शिक्षणेतर कर्मचारियों और छात्राओं द्वारा 'राष्ट्र गान' हुआ।

आर्यकन्या पी.जी. कॉलेज द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़े में अन्तर्महाविद्यालयीय निबंध प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की शिवानी त्रिपाठी ने द्वितीय तथा काव्य पाठ प्रतियोगिता में तृतीय स्थान, प्रपत्र वाचन में छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त कर पुरस्कार प्राप्त किया। राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय में हिन्दी पखवाड़े के अन्तर्गत अन्तर महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता हुई। जिसमें बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की अंकिता तिवारी को प्रथम स्थान, कविता लेखन में बी.ए. द्वितीय वर्ष की शिवानी त्रिपाठी को द्वितीय स्थान और बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की साक्षी सिंह को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। ईश्वरशरण पी.जी. कॉलेज इलाहाबाद द्वारा हिन्दी पखवाड़े में आयोजित अन्तर इकाई निबंध प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की शिवानी त्रिपाठी को प्रथम स्थान एवं कविता लेखन प्रतियोगिता में बी.एड. संकाय की छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर पुरस्कृत किया गया।

आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज में प्रकाश चन्द्र जुगमन्दर दास अग्रवाल लोकहित ट्रस्ट द्वारा आयोजित अन्तर महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता में महाविद्यालय की आठ छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

इलाहाबाद डिग्री कॉलेज में आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में बी.एड. संकाय की 'छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा को प्रथम निबंध प्रतियोगिता में कु. शिवानी त्रिपाठी को तृतीय स्थान एवं नीलू मिश्रा को सान्त्वना एवं स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में नीलू मिश्रा को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आर्य कन्या पी.जी. कॉलेज द्वारा आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में बी.एड. द्वितीय वर्ष की छात्राध्यापिका कल्पना सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज में आयोजित vivacious2k17 में पेन्टिंग प्रतियोगिता में महाविद्यालय बी.ए. प्रथम वर्ष की कु. सदफ अशरफ ने प्रथम और बी. कॉम. द्वितीय वर्ष की छात्रा साक्षी सिंह ने तृतीय स्थान अर्जित किया।

के.पी. ट्रेनिंग कॉलेज इलाहाबाद द्वारा आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में बी.एड. द्वितीय वर्ष की छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर सर्वोत्तम वक्ता का प्रमाणपत्र और मेडल एवं शील्ड प्राप्त किया। काव्य पाठ प्रतियोगिता में बी.एड. द्वितीय वर्ष की छात्राध्यापिका कल्पना सिंह ने प्रथम स्थान अर्जित कर मेडल और शील्ड प्राप्त किया।

सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज द्वारा आयोजित निबंध

प्रतियोगिता में छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। काव्य पाठ प्रतियोगिता में बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की छात्रा साक्षी सिंह को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

त्रिवेणिका संस्कृत परिषद द्वारा आयोजित संस्कृत निबंध प्रतियोगिता में बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा कु. शिवानी त्रिपाठी को प्रथम स्थान मिला। संस्कृत समूह गीत प्रतियोगिता में महाविद्यालय छात्राओं के समूह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

यू.जी.सी. के निर्देशानुसार महाविद्यालय में 'मातृभाषा दिवस' पर विविध प्रतियोगिताएं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'मातृभूमि मातृभाषा और हमारी अस्मिता' विषय पर निबंध प्रतियोगिता हुई। जिसमें स्नातक और परास्नातक स्तर की लगभग 100 छात्राओं ने भाग लिया। परास्नातक छात्रा भाग्यश्री ओझा को प्रथम, प्रीति त्रिपाठी और श्वेता पाण्डेय को द्वितीय, सृष्टि सिंह और वन्दना सिंह तथा स्नातक छात्रा शिवानी त्रिपाठी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। परास्नातक छात्राएं रूचि विश्वकर्मा, गुमश्ता परवीन, माहेजेया सरफ़राज, सुमैय्या सरफराज, कनीज़ जेहरा, आसिफा अमन, तसबीहा ताब जर्रीन एवं स्नातक छात्रा अंजलि पटेल को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। चित्रकारी में मातृभाषा के विविध रूप' विषय पर पोस्टर पेन्टिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में परास्नातक छात्रा रागिनी सिंह को प्रथम, शिवानी सिंह को द्वितीय और शमा परवीन को तृतीय स्थान तथा छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। ''भावनाएं सहज रूप से मातृभाषा में ही व्यक्त हो सकती है'' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। एम.एस–सी. की छात्रा खदीज़ा फातिमा को प्रथम, एम.ए. की छात्रा स्मृति त्रिपाठी को द्वितीय तथा बी.एड. संकाय से छात्राध्यापिका मोमिता होर को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। मातृभाषा दिवस पर शिवानी त्रिपाठी ने भोजपुरी कजरी, मोमिता होर ने बाग्ला गीत, प्रियंका चौहान ने भोजपुरी लोकगीत एवं नीलू मिश्रा ने अवधि में स्वागत गीत की प्रभावकारी प्रस्तुति की। 'Ruchis Institute of Creative Arts' द्वारा सुशील त्रिपाठी मेमोरियल' कॉन्टेस्ट में आयोजित पेन्टिंग प्रतियोगिता में महाविद्यालय बी.ए. प्रथम वर्ष की शानू वर्मा को द्वितीय, तृतीय वर्ष की कुमारी बुशरा को द्वितीय और बी.ए. द्वितीय वर्ष की रुपिन्दर कौर को सान्त्वना पुरस्कार मिला। रंगोली प्रतियोगिता में शानू

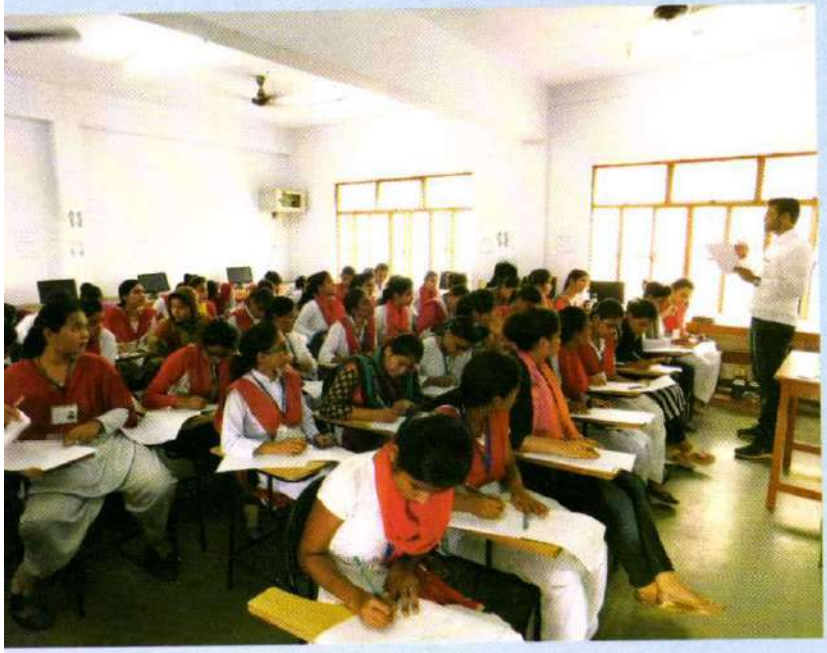

वर्मा को तृतीय पुरस्कार तथा छात्राध्यापिका लवी वर्मा और वन्दना वर्मा को प्रतिभागिता प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

'National Academy of Sciences' इलाहाबाद द्वारा आयोजित कार्यशाला में महाविद्यालय की एम.एस–सी. जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और रसायन विज्ञान की 25 छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता कर विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान से अपने ज्ञान में वृद्धि की।

National Graduate Physics Examination में महाविद्यालय की भौतिक विज्ञान की 43 छात्राओं ने भाग लिया। Indian Association Physics Teaching द्वारा विगत सत्र की परीक्षा में प्रतिभागिता करने वाली बी. एस–सी. प्रथम वर्ष की छात्रा वर्तिका सिंह, मरियम अबुबकर, रमीज़ा आइमन तथा अबीहा वासिफ को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। Indian Science Association के Allahabad Chapter द्वारा National Science Day के उपलक्ष्य में Science & Technology with Specially Abled Persons' विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में रसायन विभाग की एम. एस–सी. छात्रा कीर्ति पाण्डेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

National Board of Higher Mathematics (NBHM) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रायोजित 'Madhav Mathematics Competition' में गणित विभाग की 64 छात्राओं ने भाग लिया। विगत वर्ष में प्रतिभागी 25 छात्राओं को प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

वनस्पति विज्ञान विभाग में 'Environment and Sustainable Development' विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय एवं विभिन्न महाविद्यालय के परास्नातक छात्र–छात्राओं द्वारा पावर–प्वाइंट पर प्रपत्र प्रस्तुत किया गया। जिसमें एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय की जैनिश फात्मा प्रथम, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज के छात्र सुरेश कुमार को द्वितीय तथा एस.एस. खन्ना की आसिफ ऑमना को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

National Academy of Sciences, Allahabad द्वारा आयोजित सेमिनार में जन्तु विज्ञान विभाग की छात्राओं ने सक्रिय सहभागिता की।

National Academy of Sciences द्वारा महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बी.एस–सी. एवं एम.एस–सी. की छात्राओं ने भाग लिया।

जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित लघु शोध पत्र प्रस्तुति प्रतियोगिता में महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय की छात्राओं ने प्रतिभागिता की। द्वितीय वर्ष की वन्दिता अग्रवाल ने प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

हिन्दी विभाग द्वारा 'संविधान की आठवीं अनुसूची और बोलियाँ' विषय पर कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अमरनाथ का सारगर्भित व्याख्यान आयोजित किया गया

पी.जी. और यू.जी. छात्राओं को व्यावहारिक हिन्दी के महत्त्व और उपयोगिता से जुड़ी जानकारी दी गयी।

शिक्षाशास्त्र विभाग में विश्वविद्यालय स्तरीय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद–विवाद प्रतियोगिता का विषय था "भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी केवल बहसों और संगोष्ठियों में है।" प्रतियोगिता में महाविद्यालय टीम के अतिरिक्त आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज, ए.एन. झा की टीम ने भाग लिया। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में उपस्थित थी जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज की शिक्षाशास्त्र की एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. काजल देव, पूर्व उपशिक्षा निदेशक (उ.प्र. बोर्ड) श्रीमती प्रेमा राय तथा समाज सेविका श्रीमती किरण चावला। प्रतियोगिता में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सैयद आसिफ को प्रथम सी. एम.पी. डिग्री कॉलेज की स्वाती मिश्रा को द्वितीय और एस. एस. खन्ना डिग्री कॉलेज की पल्लवी मिश्रा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

समाजशास्त्र विभाग में परास्नातक छात्राओं को विषय विशेषज्ञ आई.आई.टी. कानपुर मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग के प्रो. ए.के. शर्मा एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. आशीष सक्सेना द्वारा "Contextualizing Gender and Development in India: Issues and Concerns" विषय पर व्याख्यान दिया गया। अन्य अवसर पर हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग की अध्यक्ष श्रीमती इरम उस्मानी द्वारा "Max weber: Politics and Vocation" विषय पर व्याख्यान दिया गया। उर्दू विभाग में फिराक़ गोरखपुरी की पुण्य तिथि पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अली अहमद फातमी ने "फिराकः शख्सियत और शायरी' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान् दिया।

अंग्रेजी विभाग में स्नातक एवं परास्नातक छात्राओं को लाभान्वित करने के उद्देश्य से "INDIAN THEATRE" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रो. संजय दत्ता रॉय ने "The Development of Theatre in India: The Modern Phase" विषय पर कार्यशाला को केन्द्रित करते हुए थियेटर की उत्पत्ति और उसकी तकनीक के मूलभूत संप्रत्यय को स्पष्ट किया। अन्य विशेषज्ञ डॉ. जया चड्ढ़ा ने थियेटर के आधुनिक और उत्तर उपनिवेश काल के विकास को रेखांकित किया। एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज की छात्राओं के साथ–साथ यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज के छात्र–छात्राओं ने नाटक की संक्षिप्त पटकथा को अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया। कार्यशाला का इन्टरेक्टिव सेशन अत्यन्त प्रभावी था। विभाग में स्नातक वर्ग की छात्राओं के लिये Extempore Speech Competition और Intercollegiate Essay Competition कराया गया। बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं को पाठ्यक्रम में प्रस्तावित फिक्शन फिल्में दिखाई गई। National Diversity Lifetime Achievement Award से सम्मानित Asia Pacific Writers and Translators (APWT) Manchester U.K. की निदेशक प्रसिद्ध उपन्यासकार, पटकथा लेखिका तथा शैक्षिक

परामर्शदात्रि (M.A., PGCE, FRSA) प्रो. कैसर शहनाज़ का 'Women's Rights and Women's Issues' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

संस्कृत विभाग द्वारा 'वर्तमान संदर्भ में गीता की प्रासंगिकता' विषय पर अन्तर्महाविद्यालयीय संस्कृत निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का परिणाम निम्नवत् रहा –

नाम	कक्षा	संस्था	स्थान
ऋषिदेव पाण्डेय	बी.ए. III	ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद।	प्रथम
शिवानी त्रिपाठी	बी.ए. II	एस.एस. खन्ना डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	प्रथम
सुमन यादव	बी.ए. II	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय	द्वितीय
मनीषा द्विवेदी	बी.ए. II	इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	द्वितीय
दीपमाला सिंह वर्मा	बी.ए. III	ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद।	द्वितीय
संध्या तिवारी	बी.ए. III	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय	तृतीय
नेहा राय	बी.ए. II	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय	तृतीय
श्रेया श्रीवास्तव	बी.ए. II	इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	तृतीय
वैशाली कुमारी	बी.ए. III	ईश्वर शरण पी.जी. कॉलेज, इलाहाबाद।	सान्त्वना
वैशाली	बी.ए. II	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय	सान्त्वना
सुशीला देवी	बी.ए. I	एस.एस. खन्ना डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	सान्त्वना
आरती साहू	बी.ए. I	एस.एस. खन्ना डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	सान्त्वना
कीर्ति तिवारी	बी.ए. I	राजर्षि टण्डन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	सान्त्वना
प्रज्ञा मालवीय	बी.ए. III	राजर्षि टण्डन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	सान्त्वना
ऋचा ओझा	बी.ए. II	इलाहाबाद डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद।	सान्त्वना

दर्शन विभाग द्वारा सत्र के प्रारम्भ में दर्शनशास्त्र की विषय वस्तु और उपयोगिता संबंधी छात्राओं की जिज्ञासा का सामाधान करने के उद्देश्य से 'जीवन दृष्टि के निर्माण में दर्शन की उपयोगिता' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान उपरान्त छात्राओं को चार समूह में विभाजित कर परस्पर प्रश्नोत्तर रूप में 'संवाद और अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। द्वितीय और तृतीय वर्ष की छात्राओं को दर्शन और फिलास्फी का सूक्ष्म भेद रेखांकित करते हुए धर्म परिवर्तन, दर्शन में तर्क और श्रुति, राजनीति और नैतिकता विषय पर विचार अभिव्यक्ति प्रतियोगिता आयोजित की गई। दर्शन पर समाज का प्रभाव स्वाभाविक है। तत्कालीन समय के ज्वलंत विषय पर विधा विशेषज्ञ श्री अमित अग्रवाल ने "वर्तमान संदर्भ में डिमॉनेटाइज़ेशन और कैशलेस ट्रान्जेक्शन' विषय में निहित अर्थदर्शन को व्याख्यान द्वारा स्पष्ट किया। छात्राओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समाधान उन्होंने इन्टरेक्शन सेशन में किया।

प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में "मानव ने उपकरण क्यों और कैसे बनाए" विषय पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. प्रकाश सिन्हा का व्याख्यान आयोजित किया गया। विषय विशेषज्ञ ने पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन के माध्यम से छात्राओं को आदि मानव के उपकरण, हथियारों के प्रकार, निर्माण तकनीक, विकास उपयोग आदि पर चर्चा करते हुये मानव की खाद्य संग्रहक स्थिति से पशुचारण और कृषि अन्न उत्पादकता की स्थिति पर विस्तृत प्रकाश डाला। विभाग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था – "प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में मुद्राराक्षस"। राजकीय संग्रहालय झांसी और राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर के पूर्व निदेशक, पुरावशेष कलाकृति विभाग के रजिस्ट्रीकरण अधिकारी पद से सेवा निवृत्त हुए विषय विशेषज्ञ डॉ. ओम प्रकाश लाल श्रीवास्तव ने अपने विद्वतापूर्ण उद्बोधन में ऐतिहासिक तथ्यों के आलोक में पांचाल के सिक्कों और कौशाम्बी के सिक्कों पर विशेष प्रकाश डाला। कार्यशाला के मुख्य वक्ता ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के प्राचार्य तथा ICHR के सेक्रेटरी डॉ. आनन्द शंकर सिंह ने राजनैतिक इतिहास के पुनर्निमाण में प्राचीन मुद्राओं के महत्व को रेखांकित किया और मुद्राओं के आधार पर ज्ञात प्रामाणिक इतिहास की जानकारी दी। परास्नातक कक्षाओं में शिक्षक वर्ग एवं छात्राओं को CBCS या क्रेडिट बेस्ड च्वॉइस सिस्टम की जानकारी देने के लिये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन एवं स्त्रातजिक विभाग के सेवानिवृत्त प्रो. आर.के. टण्डन का पावर प्वाइंट द्वारा 'CBCS System in higher Education' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

मध्यकालीन इतिहास विभाग, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग तथा इतिहास परिषद के संयुक्त

तत्वावधान में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की स्मृति में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के उपलक्ष्य में एक रैली निकाली गई। सरदार पटेल की जयंती यानी राष्ट्रीय एकता दिवस पर –'देशी रियायतों के एकीकरण में वल्लभ भाई पटेल का योगदान' विषय पर अन्तर संकाय भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। सभी संकाय से उत्साहपूर्ण प्रस्तुति की गई जिसमें बी.एड. संकाय की छात्राध्यापिका नीलू मिश्रा ने प्रथम, कला संकाय के मध्यकालीन इतिहास विभाग की बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा श्रेया श्रीवास्तव और रेनू पाण्डेय ने द्वितीय स्थान तथा प्राचीन इतिहास विभाग की बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा वर्षा निषाद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ''आजादी 70 – जरा याद करो कुर्बानी पखवारा के अन्तर्गत – '1857 की क्रान्ति' विषय पर इतिहास परिषद द्वारा प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार था –

टीम सी	कनिका, सिमरन गुप्ता शुभांगी सिन्हा, सोनाली चौरसिया सीमा नाज़	प्रथम
टीम ए	अख्शा मरियम, खदीजा अंकिता श्रीवास्तव, वर्षा निषाद विनीता कुमारी	द्वितीय
टीम डी	शादमा, कुलसुम, सिदरा कायनात् फात्मा, श्रेया श्रीवास्तव	तृतीय

फिल्में मनोरंजन के साथ ही शिक्षा का भी माध्यम हैं इसी विचार के अनुरूप सामाजिक विज्ञान परिषद द्वारा अकादमिक कैलेन्डर में पारित कार्यक्रम के अनुरूप दिसम्बर माह तक प्रत्येक बृहस्पतिवार 'पाठशाला ऑडिटोरियम' में फिल्में प्रदर्शित की गई। मदारी, नीरजा, अकीरा, निल बटा सन्नाटा रूस्तम, दो दूनी चार, दंगल और पिन्क फिल्म द्वारा छात्राओं को जीवन की विविध परिस्थितियों से अवगत कराया गया। विभिन्न सामाजिक समस्याओं के निदान और समाधान खोजने को प्रेरित करने के साथ ही शिक्षाशास्त्र की स्नातक और परास्नातक छात्राओं द्वारा फिल्मों की समीक्षा लिखवाई गई। समीक्षा लेखन का उद्देश्य छात्राओं की कल्पना और अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करना था। स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता के लिये दन्तरोग विशेषज्ञ डॉ. आतिफा करीम द्वारा डेन्टल केयर एवं हेल्थ विषय पर पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन द्वारा व्याख्यान और इन्टरेक्शन सेशन आयोजित किया गया। छात्राओं को मतदाता के रूप में जागरूक करने के उद्देश्य से मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें R.J. गोविन्द ने मतदान संबंधी जानकारी देते हुये छात्राओं को निष्पक्ष और बुद्धिमानी से अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिये प्रेरित किया।

संगीत विभाग में छात्राओं के संकल्प पथ को सत्य शिव और सुन्दर की ओर अग्रसर करने के उद्देश्य से सत्र भर विविध कार्यक्रम आयोजित किये गए। विभाग में आयोजित 'सप्तस्वर' अन्तर्महाविद्यालयीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सामूहिक गायन में 'कजरी', एकल गायन में 'भजन' प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता में एस.एस. खन्ना के अतिरिक्त सात अन्य महाविद्यालय एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय की टीम ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

प्रतियोगिता	प्रतिभागी	स्थान
'कजरी' सामूहिक गायन	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	प्रथम प्रथम द्वितीय
'भजन' एकल गायन	काजल पटेल एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	प्रथम
	वैशाली यादव आर्य कन्या डिग्री कॉलेज कु. वर्षा मिश्रा श्यामा प्रसाद राजकीय महाविद्यालय	द्वितीय तृतीय
	पूजा खरवार इलाहाबाद विश्वविद्यालय	सान्त्वना

उक्त प्रतियोगिता में निर्णायक थे आकाशवाणी के 'A' ग्रेड कलाकार 'तबला' वादक श्री अनूप बनर्जी एवं प्रसिद्ध लोक संगीत गायक आकाशवाणी 'A' ग्रेड कलाकार श्री उदय चन्द्र परदेशी। विभाग में 'वसंतोत्सव' के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ श्री अनूप बनर्जी ने छात्राओं के समक्ष तीन ताल में पेशकारा पेशबंदी, छंद, कायदा प्रस्तुत किया। विषय विशेषज्ञ डॉ. रेनू जौहरी ने दिल्ली और बनारस घराने की विशेषताओं से छात्राओं को अवगत कराया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के

प्रो. जयंत खोत ने समयानुकूल राग संदर्भ बताते हुये, जौनपुरी शुद्ध सारंग एवं रामकली रागों का प्रदर्शन किया। राग भूपाली में रास गायकी प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त राग खमाज में टप्पा व ठुमरी को गायन के माध्यम से छात्राओं को समझाया। कार्यशाला में छात्राओं ने प्रसिद्ध कलाकारों से सीखने और अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने का अवसर प्राप्त किया। संगीत विभाग में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा आई.सी.सी.आर. अजर बैजान यूनिवर्सिटी के विजिटिंग प्रोफेसर डॉ. मुकेश गर्ग का "संगीत कला ही मनुष्यता का संस्कार देती है" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। संगीत विभाग की छात्रा कु. काजल सिंह पटेल ने 58 वीं देशराज डॉ. मेजर रणजीत सिंह स्मृति अखिल भारतीय संगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

चित्रकला विभाग की छात्राओं द्वारा क्रिएटिव आर्ट के अन्तर्गत कार्ड मेकिंग, बुक मार्क, डायरी कवर और फाइल कवर मेंकिंग इत्यादि कराया गया। जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित 'ओजोन जागरूकता' विषय पर पोस्टर पेन्टिंग प्रतियोगिता में विभाग की छात्राओं ने प्रतिभागिता कर पुरस्कार प्राप्त किया। रूचीज़ इंस्टिट्यूट ऑफ क्रिएटिव आर्ट्स द्वारा आयोजित 'क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट में विभाग की छात्राओं ने पेन्टिंग, मेंहदी और रंगोली प्रतियोगिता में प्रतिभागिता किया। मेंहदी और प्रेन्टिंग प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार विभाग की छात्राओं ने ही जीते। स्नातक और परास्नातक छात्राओं के क्रियात्मक विकास हेतु एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। पिडिलाइट कलर कम्पनी की तरफ से प्रशिक्षित शिक्षिका द्वारा छात्राओं को दीया, कलश, रंगोली, वन्दनवार बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। परास्नातक कक्षा की दस छात्राओं ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग द्वारा आयोजित ग्रूप रंगोली मेकिंग प्रतियोगिता" में भाग लिया। छात्राओं कों उनकी रंगोली के लिये विश्वविद्यालय गणतंत्र दिवस समारोह में कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू द्वारा सम्मानित किया गया। महाविद्यालय संस्थापना सत्र में ऑफीसर ऑन स्पेशल ड्यूटी के रूप में योगदान देने वाले यशःशेष वी.एस. भटनागर की स्मृति में नई दिल्ली AIIMS में कार्यरत उनके शिष्य प्रो. डॉ. ए.के. बनर्जी द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से वी.एस. भ्टनागर पेन्टिंग और फोटोग्रेफी प्रतियोगिता का प्रारम्भ किया गया। पूर्व प्राचार्या डॉ. आशा सेठ एवं अधिशासी निकाय के सदस्य प्रो. आर.के. टंडन के निदेशन में आयोजित स्नातक स्तरीय प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

पेन्टिंग प्रतियोगिता

नाम	कक्षा	स्थान
एरम हज़ीज	बी.ए. I	प्रथम
प्रगति जायसवाल	बी.ए. II	द्वितीय
रूपिन्दर कौर	बी.ए. II	तृतीय
अनामिका केसरवानी	बी.ए. II	सान्त्वना

प्रतियोगिता में विजित प्रतिभागियों को क्रमशः ₹ 2000/–, 1500/–, 1000/– और 500/– की धनराशि पुरस्कार के रूप में प्रदान की गई।

यूनाइटेड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट द्वारा आयोजित 'ज्ञान मंथन' में विभाग की परास्नातक छात्राओं ने प्रतिभागिता की। 'प्रतिबिम्ब इंडियन हेरिटेज विषय पर फेस पेन्टिंग प्रतियोगिता में मुस्कान रस्तोगी और जकिया जुनैद ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। परास्नातक छात्राओं के लिये विभाग में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग के डॉ. अभिनव गुप्त ने 'पोस्टर निर्माण में कैलीग्रेफी का महत्व' विषय पर डिमॉन्स्ट्रेशन दिया।

सरोज लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय में वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा एम.एस–सी. की छात्राओं को इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के Roxburgh Botanical Garden एवं Agharcar Botanical Museum में अध्ययन हेतु ले जाया गया। वहां

Prof. D.K. Chauhan ने छात्राओं को वनस्पतियों एवं जीवाश्मों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी। इसके अतिरिक्त एम.एस–सी. की छात्राओं को Botanical Survey of India, Central Regional Centre, Allahabad भी ले जाया गया, जहाँ Dr. G.P Sinha एवं Dr. Arti Garg ने छात्राओं को अनेक वनस्पतियों के बारे में जानकारी दी। एम.एस–सी की छात्राओं के लिए विभाग द्वारा शैक्षिक सम्मेलन (Colloquiun) का आयोजन भी कराया गया, जिसमें छात्राओं ने विविध विषयों पर Power Point Presentations दिया। विभाग में 'Environment and Sustainable Development विषय पर Inter Collegiate Seminar' आयोजित किया गया। जिसमें विभिन्न महाविद्यालयों के एम.एस–सी. के छात्र–छात्राओं ने Power Point पर अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये। एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय की जैनिश फात्मा ने प्रथम स्थान, सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज के सुरेश कुमार ने द्वितीय स्थान तथा एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय की आसिफा आमना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वनस्पति विज्ञान विभाग के स्नातक वर्ग की छात्राओं हेतु प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं की चार टीमों – आयंगर टीम, सदाशिवन टीम, कश्यप टीम एवं साहनी टीम ने प्रतिभागिता की। इसमें सदाशिवन टीम प्रथम स्थान पर तथा कश्यप टीम द्वितीय स्थान पर रही। विभाग द्वारा 'Culture Medium Preparation & Sterilisation' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त 'Plant Resources and Mankind' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। जिसमें बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने Power Point पर प्रपत्र प्रस्तुत किया।

गणित विभाग की 64 छात्राओं ने National Board of Higher Mathematics (NBHM) द्वारा प्रायोजित Madhav Mathematics Competition में प्रतिभागिता की। विभाग की 6 छात्राओं ने दामोदर श्री निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में भाग लिया।

रसायन विज्ञान विभाग में नवम्बर माह में बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका विषय था "Study of Food Adulteration"। कार्यशाला का उद्देश्य छात्राओं को रासायनिक परीक्षणों द्वारा खाद्य पदार्थो में मिलावट का ज्ञान कराना था। कार्यशाला में पहले दिन छात्राओं को विभिन्न खाद्य पदार्थो जैसे घी, तेल, चीनी, हल्दी, पिसी मिर्च आदि के विभिन्न नमूनों के रासायनिक परीक्षण कराए गये। कार्यशाला के दूसरे दिन विभिन्न रासायनिक परीक्षणों के परिणामों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त छात्राओं को पावर प्वाइंट द्वारा Food Adulteration के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कुछ छात्राओं ने भी विषय से सम्बन्धित पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण दिया। विभाग में बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष की छात्राओं को ग्लोबल वार्मिंग की ज्वलंत समस्या से सम्बन्धित Algore नामक डॉक्यूमेन्टरी फिल्म दिखाई गई। फिल्म के बाद छात्राओं ने इस समस्या के गंभीर परिणामों के बारे में विचार विमर्श किया। इसके अतिरिक्त बी. एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने 'Chemistry In the Sevice of Mankind' विषय पर पावर प्वाइंट पर प्रपत्र प्रस्तुत किये। 'राष्ट्रीय विज्ञान' दिवस पर रसायन विभाग की एम.एस–सी. की छात्राओं के लिए Inter Institutional Quiz Competition – CHEM QUIZ आयोजित किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के अतिरिक्त इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं तीन अन्य महाविद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रत्येक टीम में चार छात्र छात्राएं थे। प्रतियोगिता के अन्त में सभी विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र दिये गए। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

स्थान	संस्था	प्रतिभागी
प्रथम स्थान	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	स्मृति कुशवाहा कीर्ति पाण्डेय खान्सा कमाल जैनब फातमा सिद्दीकी
द्वितीय स्थान	इलाहाबाद विश्वविद्यालय	नवीन कुमार मौर्य रघुवीर कुमार बरखा श्रीवास्तव प्रियंका मौर्य
तृतीय स्थान	यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज	दीक्षा सहाय श्रीवास्तव रुदाक्ष श्रीवास्तव शालमा खातून अमूल्या सिन्हा
प्रथम सान्त्वना पुरस्कार	सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज	अश्विनी शर्मा आशुतोष सिंह प्रभंजन कुमार चौबे अरूण कुमार पटेल
द्वितीय सान्त्वना पुरस्कार	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय डिग्री कॉलेज	प्रिंस कुमार गुप्ता ललित कुमार शुक्ला अमित यादव अंकिता धूरिया

जन्तु विज्ञान विभाग में और बायोटेक्नोलॉजी डिप्लोमा कोर्स के संयुक्त तत्वावधान में कार्यशाला का आयोजन किया गया। एम.एस–सी. एवं डिप्लोमा कोर्स की छात्राओं ने शैक्षिक भ्रमण के दौरान गंगा और यमुना की अलग–अलग साइट्स से वॉटर सैम्पल एकत्र किए। Microbial diversity Identification के साथ–साथ Texture, Temperature, dissolved oxygen, alkalinity आदि मानकों के आधार पर पानी की गुणवत्ता का विश्लेषण किया गया। विश्व ओजोन दिवस पर छात्राओं द्वारा टिप्पणी सहित पोस्टर निर्मित किये गये। National Academy of Sciences, Allahabad और जन्तु विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वावधान में Nutrition & Health विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। छात्राओं ने NASI द्वारा आयोजित सेमिनार में भी सक्रिय सहभागिता की। MNNIT में 'Self Financed Short Term Course on Research methodologies, Data analysis and stress tolerance in Plants' विषय पर आयोजित कार्यशाला में बायोटेक्नोलॉजी की छात्राएं अरशी फात्मा, अपराजिता त्रिपाठी, महिमा सिंह, दीक्षा मिश्रा अनुकृति श्रीवास्तव और सादिया मुमताज़ ने Different Molecular biological techniques पर प्रयोगात्मक कार्य किया।

नन्द किशोर खन्ना वाणिज्य संकाय में छात्राओं को महिला उद्यमियों के सराहनीय योगदान वाले क्षेत्रों से अवगत कराने के लिये 'Women Entrepreneurship' विषय पर पावर प्वाइंट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अन्तर संकाय प्रतियोगिता परिणाम में बी.कॉम. तृतीय वर्ष की जैनब बुतुल को प्रथम स्थान, यशी जायसवाल को द्वितीय स्थान तथा रश्मि लखमानी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। महाविद्यालय छात्र कल्याण परिषद, AIMA तथा वाणिज्य संकाय के संयुक्त तत्वावधान में 'Paradigm Shift From College to Corporate' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। संकाय में आयोजित शिक्षक अभिभावक संघ की बैठक में अन्य मुद्दों के साथ ही 75% उपस्थिति एवं दुपहिया वाहन से आने वाली छात्राओं के लिये लाइसेंस व हेलमेट की अनिवार्यता के नियम से अभिभावकों को अवगत कराया गया। पिछले सात वर्षो से निरन्तर आयोजित होने वाली प्रो. जी.सी. अग्रवाल मेमोरियल अन्तर महाविद्यालयीय प्रपत्र लेखन एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रपत्र लेखन का विषय था – 'India@70: A Journey Through Economic Reforms'A इस प्रतियोगिता में सभी संघटक महाविद्यालयों से प्रपत्र प्राप्त हुए। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा –

नाम	कक्षा	संस्थान	स्थान
कृति बासु	बी.कॉम. III	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	प्रथम
मनीषा सिंह	बी.कॉम. II	जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज	द्वितीय
कीर्ति जायसवाल	बी.कॉम. I	इलाहाबाद डिग्री कॉलेज	तृतीय
सिमरन गुप्ता	बी.कॉम. II	एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	सान्त्वना

प्रश्न मंच प्रतियोगिता में इलाहाबाद विश्वविद्यालय सहित छः संघटक महाविद्यालय की टीम ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विजयी टीम का विवरण इस प्रकार है –

टीम	स्थान
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज गर्ल्स विंग	प्रथम
ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज	द्वितीय
एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज	तृतीय
इलाहाबाद डिग्री कॉलेज ब्वायज़ विंग	सान्त्वना

'Green and clean Allahabad' विषय पर महाविद्यालय विस्तार कार्य समिति द्वारा आयोजित पोस्टर पेन्टिंग प्रतियोगिता में बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की छात्रा मरियम मोइन को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा शीज़ा लईक ने विश्वविद्यालय की मेरिट सूची में सातवां स्थान प्राप्त किया। बी.कॉम. तृतीय वर्ष की सात छात्राओं का Concentrix कम्पनी के लिये कैम्पस चयन हुआ।

डॉ. मधु टण्डन बी.एड. संकाय में सत्र के प्रारम्भ में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के पिछले दो सेमेस्टर में संचालित गतिविधियों की समीक्षा बैठक हुई जिसमें अगले सेमेस्टर हेतु कार्य योजना तैयार की गई। संकाय में अभ्यास शिक्षण, रैली, सामुदायिक खेल, SUPW कार्यशाला, प्रदर्शनी,

उपलब्धि परीक्षण कार्यशाला कक्षा प्रबन्धन एवं व्याख्यान आदि गतिविधियों का संचालन किया गया। अभ्यास शिक्षण में प्रत्येक विषय में 20 पाठ योजनाओं का निर्माण छात्राध्यापिकाओं द्वारा किया गया और प्रत्येक विषय की एम.एस.पाठ्य योजना का मूल्यांकन किया गया। तृतीय

सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं द्वारा समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं रैली का आयोजन किया गया। सामुदायिक खेल के अन्तर्गत खो–खो, रस्साकसी, दौड़ प्रतिस्पर्धाएं हुई। SUPW दो दिवसीय कार्यशाला में छात्राध्यापिकाओं द्वारा समाजोपयोगी वस्तुओं का निर्माण कर प्रदर्शनी लगायी गई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू ने प्रदर्शनी की सराहना की। उपलब्धि परीक्षण कार्यशाला में उपलब्धि परीक्षण निर्माण किया गया। संकाय में 'कक्षा प्रबन्धन' विषय पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रक्षा अध्ययन एवं स्त्रैतजिक विभाग के प्रो. आर.के. टंडन का व्याख्यान आयोजित कर कक्ष प्रबन्धन के साथ ही शिक्षक का व्यवहार एवं विषय विशेष में छात्राओं की रूचि कैसे जागृत हो आदि विविध जानकारियों से छात्राध्यापिकाओं को लाभान्वित किया गया। डॉ. मधु टण्डन बी.एड. संकाय में 2016–18 सत्र की नव प्रविष्ट छात्राध्यापिकाओं हेतु सूक्ष्म शिक्षण का आयोजन कर विभिन्न कौशलों का ज्ञान प्रदान कर सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास कराया गया। छात्राध्यापिकाओं ने बागवानी एवं सौन्दर्यीकरण, विद्यार्थी परिषद का गठन, स्वच्छता कार्य एवं विभिन्न अवसरों पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की।

छात्राध्यापिकाओं को प्रदान की जाने वाली सुविधाएं, अनुशासन संबंधी नियमों एवं अकादमिक एवं अन्य सहयोगी गतिविधियों से संबंधित जानकारी देने के लिये शिक्षक अभिभावक संघ की बैठक का आयोजन किया गया। प्रथम सेमेस्टर की छात्राध्यापिकाओं हेतु क्ले मॉडलिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया। विद्यार्थी परिषद के गठन का आधार छात्राध्यापिकाओं द्वारा दिये गये विषय पर विचार प्रस्तुतिकरण था। विभाग में संचालित गतिविधियों का मूल्यांकन बाह्य परीक्षक के रूप में इलाहाबाद शिक्षाशास्त्र विभाग की अध्यक्ष प्रो. सुजाता रघुवंश एवं प्रो. पी.के. साहू और प्रो. धनन्जय यादव द्वारा किया गया। मण्डल के सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त (स्काउट) के निर्देशानुसार छात्रध्यापिकाओं का तीन दिवसीय स्काउट/गाइडिंग प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। शिविर में प्रशिक्षक श्रीमती शशी जायसवाल लीडर ट्रेनर (गाइड) इलाहाबाद एवं कु. मृदुला पाल एडवांस गाइड कैप्टन प्रतापगढ़ के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कैप्टन डॉ. रेखा रानी द्वारा छात्राध्यापिकाओं को प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण दिया गया।

बी.एड. संकाय में आई.आई.टी. कानपुर मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग के प्रो. ए.के. शर्मा का 'Gender Issue' पर व्याख्यान हुआ। छात्राध्यापिकाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य से विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू का Kashmir : Issues & Problems विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान उपरान्त इन्टरेक्शन सेशन में उन्होंने छात्राध्यापिकाओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों का समाधान भी किया। कुलपति ने विज्ञान प्रदर्शनी का अवलोकन किया और छात्राध्यापिकाओं से निर्मित मॉडल संबंधी प्रश्न भी पूछा और मॉडल की सराहना

की। बी.एड. संकाय में डॉ. मधु टण्डन मेमोरियल क्विज़ प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें चार महाविद्यालय की टीम ने प्रतिभागिता की। विजित प्रतिभागिता को कार्यक्रम पर्यवेक्षक के रूप में आमंत्रित इलाहाबाद विश्वविद्यालय की असिस्टेन्ट प्रोफेसर सरोज यादव, मुख्य अतिथि सारस्वत खत्री पाठशाला के अध्यक्ष श्री हरिशचन्द्र खन्ना तथा विशिष्ट अतिथि महाविद्यालय अधिशासी निकाय के कोषाध्यक्ष श्री दिलीप मेहरोत्रा एवं प्राचार्या डॉ. लालिमा सिंह द्वारा प्रमाण पत्र, पुस्तकें एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। छात्राध्यापिकाओं के सुझाव और महाविद्यालय में उनके अनुभव को स्वयं उनके ही माध्यम से प्रबंध तन्त्र तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक छोटी सी मुलाकात ''कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में न्यायमूर्ति अरूण टंडन, श्री हरिश चन्द्र खन्ना, डॉ. आशा सेठ, डॉ. एस.के. सेठ, श्री जी.एस. मल्होत्रा, श्री विनायक टंडन, श्रीमती अंशिका बुधवार, पूर्व प्राचार्या डॉ. शिप्रा सान्याल एवं प्राचार्या डॉ. लालिमा सिंह के समक्ष छात्राध्यापिकाओं ने संकाय के विकास को गति प्रदान करने के लिये अपने सुझाव प्रस्तुत किये।

छात्राओं की सांस्कृतिक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के लिये महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के निदेशन में स्वतंत्रता दिवस, शिक्षक दिवस, नवोत्कर्ष, दामोदर श्री राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह, गणतंन्त्र समारोह कार्यक्रम में छात्राओं ने गणेश वंदना, सरस्वती वंदना व राष्ट्र वंदना की मोहक प्रस्तुति की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतन लाल हांगलू के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम 'प्रवर्तन' में छात्राओं ने वंदना, कजरी और मुशायरे की प्रस्तुति की। मुख्य अतिथि ने छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम विशेष रूप से मुशायरे की प्रशंसा कर छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। महाविद्यालय वार्षिकोत्सव 'उदिता' में वंदना, सूफी कव्वाली तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित नाटक 'अंधेर नगरी' का सफल मंचन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इलाहाबाद के जिलाधिकारी श्री संजय कुमार ने सांस्कृतिक कार्यक्रम को उच्च शिक्षा संस्थान के अनुरूप स्तरीय समसामयिक और प्रशंसनीय कहा। गणतन्त्र दिवस पर छात्राओं में राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा उत्पन्न करने वाले गीत की सामूहिक प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन इलाहाबाद के कर्नल श्री सुनील चतुर्वेदी ने अपने उद्बोधन में सांस्कृतिक कार्यक्रम को भावपूर्ण तथा महाविद्यालय को राष्ट्र निर्माण के अनुरूप कहा।

पुरस्कार और छात्राएँ

मुख्य अतिथि - श्री संजय कुमार सिंह
जिलाधिकारी, इलाहाबाद

मुख्य अतिथि - प्रो. रतन लाल हांगलू
कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

मुख्य अतिथि - प्रो. ए.के. गर्ग
कॉमर्स विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

मुख्य अतिथि - प्रो. रंजना कक्कड़

बायें से श्री राजीव खन्ना, चेयनमैन, महाविद्यालय
श्री दिलीप मेहरोत्रा - कोषाध्यक्ष, महाविद्यालय

प्रगति आख्या–4

रेन्जर

चारित्रिक श्रेष्ठता, सेवा और समर्पण रेंजर्स प्रशिक्षण के आधार स्तम्भ हैं। इस प्रशिक्षण से छात्राएं राष्ट्र निर्माण के दायित्व बोध के प्रति जागरूक होती हैं। दायित्व पूर्ति हेतु स्वस्थ शरीर ही व्यक्ति का वास्तविक धन हैं। छात्राओं को सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में रेजंर्स शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रवेश के 52 और निपुण के 18 रेंजर्स को प्रशिक्षित किया गया। रेंजर्स को दो टीम **'रानी लक्ष्मीबाई'** और **'सरोजनी नायडू'** में विभाजित कर बी पी सिक्स, वी फारमेशन, ध्वज गीत, झंडा गीत, तंबू गाड़ना, पुल बनाना एवं प्राथमिक चिकित्सा आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

शिविर में विभिन्न समसामयिक विषयों जैसे नोट बंदी, डिजिटल पेमेंट, स्वच्छता, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, बालश्रम, वृक्षारोपण, भूमण्डलीकरण आदि पर भाषण एवं संवाद कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। संयुक्त शिक्षा निदेशक महेंद्र सिंह (स्काउट एण्ड गाइड स्टेट कमिशनर) ने रेंजर्स को समाज सेवा के प्रति जागरुक किया तथा कैम्प का निरीक्षण किया। प्राचार्या डॉ. लालिमा सिंह ने छात्राओं का उत्साह वर्धन किया। लीडर ट्रेनर उषा कुशवाहा तथा रेंजर लीडर डॉ. रेखा रानी ने रेंजर्स को प्रशिक्षण दिया। कैंप आयोजन में डॉ. रुचि मालवीय तथा डॉ. जेबा नकवी ने सहयोग किया।

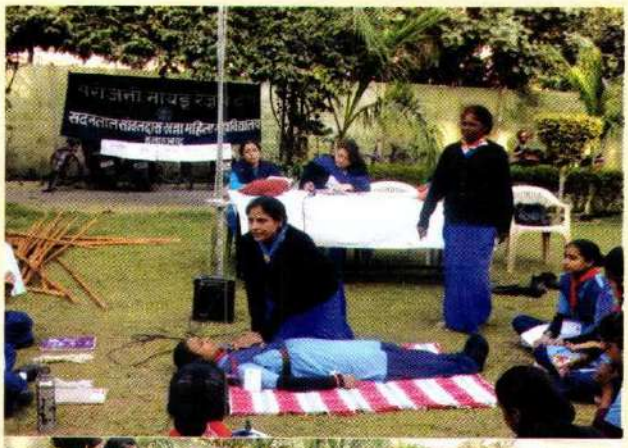

भारतीय मुद्रा का विमौद्रीकरण - एक बार फिर

अमीषा पाण्डेय, बी.एड. द्वितीय वर्ष

Demonetization अर्थात् विमौद्रीकरण। यह एक आर्थिक गतिविधि है। किसी मुद्रा इकाई की स्थिति। मूल्य को अमान्य कर देना ही विमौद्रीकरण है। जब भ्रष्टाचार बढ़ जाता है और लोग नोटों को बैंको से दूर जमाखोरी करते है तो विमौद्रीकरण आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान में भारत में 500 और 1000 के चलन वाले नोट अब इतिहास हो गए हैं। पूरा देश पुराने नोटों को बदलने के लिए कतार में लगा है। आम जनता का एक बड़ा तबका नोटबंदी से उत्साहित है और इस कदम का स्वागत करता दिखाई दे रहा है।

सवाल है कि ऐसा क्यों ? दरअसल, ज्यादातर लोगों का मानना है कि मोदी सरकार के इस कदम से जिन बड़े उद्देश्यों की पूर्ति का लक्ष्य रखा गया है, वो अगर सफल होते हैं, तो इससे देश और देश के नागरिकों की बड़ी मुश्किलें आसान हो सकती है।

देश में नोटबंदी के फायदे-

1. भारत देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, 2. राजनीति और चुनाव प्रक्रिया बनेगी पारदर्शी, 3. सस्ते होंगे रियल एस्टेट उद्योग, 4. कृत्रिम अमीरी पर नकेल कसेगी, 5. नकली नोट बंद होंगे, 6. इस्लामिक आतंकवाद से मिलेगा छुटकारा, 7. हवाला कारोबार, 8. आम जनता की ई.एम.आई. कम, 9. शैडो बैंकिंग, 10. बैंक शक्तिशाली बनेंगे तो इंफ्रास्ट्रक्चर मजबूत होगा।

पिता-पुत्री संवाद

रचना शर्मा, बी.एड. प्रथम वर्ष

बिटिया पूछे अपने पिता से-
उस दिन अपने चोट को छिपाया क्यों ?
हर रात ठंड में बाहर बिताया क्यों ?
आधी पेट खाकर रात गुजारा क्यों ?
दो जोड़ी कपड़ों में महीनों गुजारा क्यों ?
सुनकर प्रश्न पिता मुसकाया
तुझे आंसू न आये, तो चोट छिपा लिया
तुझे कंबल मिले, तो ठंड में रात बिता दिया।
तुझे हर एक व्यंजन मिले,
तो आधी पेट खाकर गुजार लिया।
तुझे नये कपड़े मिले,
तो दो जोड़ी कपड़ों में महीनों बिता दिया।
रोकर कह पड़ी बिटिया,
क्यों मुझको इतना प्यार किया ?
क्यों मुझ पर अपना सम्पूर्ण जीवन वार दिया ?
सुन मेरी बिटिया रानी
तेरी मुस्कान, मलहम है मेरा।
तेरी बेफ्रिक नींद, चैन है मेरा।
तेरा भरा पेट, सुकून है मेरा।
तेरे नये कपड़े संतोष है मेरा।
है तू ही तो अंश मेरा।
है तू ही तो अभिमान मेरा।
है तू ही तो सिर का ताज मेरा
है तू ही तो जीवन का सार मेरा।
फिर रोती क्यों है, मेरी गुड़िया रानी।
हंस कर दिखा दे, मेरी बिटिया रानी।।

वैचारिक-सांस्कृतिक परिवेश और रामचरित मानस

डॉ. आशा उपाध्याय, एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी

युग और साहित्य सापेक्ष होते हैं और उनकी पारस्परिक सापेक्षता ही किसी रचना के औचित्य को स्पष्ट करती है। साहित्य जितना ही युग-सापेक्ष होता है उतना ही उसमें सामाजिक सरोकार दिखाई देता है। प्रत्येक युग की अपनी अवधारणाएं और चिंताएं होती हैं। इन अवधारणाओं और चिंताओं के मध्य दिखने वाले प्रेरणा बिन्दु वे कालजयी बिन्दु हैं जो मनुष्य को और अधिक मनुष्य बनाने की अनिवार्य रेखाओं की संरचना करते हैं।

भक्ति इतिहास नहीं संस्कृति है। काल-प्रवाह के समान भक्ति-प्रवाह भी मनुष्य के अनुभव में अखंड होता है। इसलिए भक्ति काव्य में आचार्यों ने 'शक्ति' को ही 'भक्ति' मानकर उसे पंचम पुरुषार्थ की श्रेणी प्रदान की है। भक्ति आंदोलन को हम जन आन्दोलन के रूप में देख सकते हैं। अध्यात्म में वह शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य स्वार्थ और संकीर्णता के धरातल से ऊपर उठ जाता है। भक्ति का अर्थ जीवन अथवा जीवन के संघर्षों से विरत होकर ईश्वर के चरणों में लीन हो जाना नहीं है बल्कि जीवन के संघर्षों से जूझना है। गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति भावना के विविध रूप हमारी भावनाओं में उन तत्त्वों का समावेश करते हैं जिनसे हम जीवन की तेजस्विता और शक्ति प्राप्त करते हैं। 'रामचरित मानस' में तुलसी अपनी भक्ति द्वारा सम्पूर्ण विश्व को विस्तारवादी दृष्टि से देखने का सामर्थ्य प्रदान करते हैं।

विश्व में सर्वत्र स्वार्थ, संकीर्णता, बेईमानी, भौतिकता आदि संकीर्ण मनोवृत्तियां परिव्याप्त हैं। तुलसी के राम ने जिन मानवीय गुणों को समाज में उत्पन्न करने की चेष्टा की है, वे गुण राष्ट्र ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांध देने में सक्षम हैं। त्याग, प्रेम, सौहार्द, शांति एवं अंहिसा वे गुण है, जिनकी कामना गोला-बारूद की ढेर पर बैठा हुआ पूरा विश्व आज पुरजोर तरीके से कर रहा है। देश हो या विश्व, दोनों की प्रमुख समस्या आज शांति की समस्या है। तुलसी के राम काव्य के मानवीय गुण मनुष्य, समाज, राष्ट्र और विश्व तक अपने विस्तार की सामर्थ्य रखते हैं। आज अपने सुख की चिन्ता में मनुष्य दूसरों को दुख देने में किसी भी प्रकार का अपराध बोध महसूस नहीं करता। भौतिक सुख की लालसा में विश्व मनुष्य को पीछे छोड़ रहा है। वर्तमान समय की यह विसंगति है कि जिसके लिये ये सारे उपादान हैं वही मनुष्य केन्द्र में अपना स्वरूप खोता जा रहा है। मनुष्य बनता है भावनाओं से। उदात्त और रचनात्मक भाव भूमि का ही दूसरा नाम 'मनुष्य' है। आज मानुषी और राक्षसी मनोवृत्तियों का संघर्ष चरम पर पहुंच गया है। इन मनोवृत्तियों के कारण टूटते विश्व को भक्ति अर्थात् शक्ति का साधना करना आज अनिवार्य हो गया है। समाज में व्याप्त कटुता के विषाक्त वातावरण को दूर करने के लिए तुलसी के इन शब्दों को जीवन में साधना होगा-

तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुं ओर
वशीकरण यह मंत्र है, परिहरि बचन कठोर।।

तुलसी का रामकाव्य हमारी उन संवेदनाओं से गहरा सम्बन्ध रखता है जिनकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

आर्थिक वैषम्य का प्रश्न आज भी जोर-शोर से उठाया जा रहा है ऐसे विश्वव्यापी परिदृश्य में राम राज का आदर्श हमारे सामने है, आवश्यकता है उसके अनुरूप चलने की। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' संस्कृति की चेतना का प्रसार ही राम काव्य का उद्देश्य है-

राम राज बैठे त्रैलोका। हर्षित भये गये सब सोका।।
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।।
दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहिं व्यापा।।

भक्ति मानव की आंतरिक संस्कृति है और यही भाव तुलसीदास के रामचरितमानस में विद्यमान है जो आज भी प्रासांगिक है। भक्ति आज की आवश्यकता है। उसके बिना हमारा जीवन नीरस हो जायेगा।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का शील, शक्ति एवं सौन्दर्ययुक्त गरिमामय दिव्य व्यक्तित्व आधुनिक युवा पीढ़ी को आकृष्ट करने में समर्थ रहा है। वैयक्तिकता एवं भौतिकता की बढ़ती प्रवृत्ति ने मानव को इतना अधिक आत्मकेन्द्रित एवं सुविधा भोगी बना दिया है कि वह अपने अलावा और किसी के बारे में नहीं सोचना चाहता, इस कारण उसके अन्तर्मन और बाह्य परिस्थितियों में असन्तुलन आ गया है। इस असन्तुलन को दूर करने के लिये मानवीय विचारों से जुड़ना आवश्यक है, जैसा कि रामचरित मानस में लिखा है-

परहित सरिस धर्म नहि भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

रामयुग के दस शीश वाले रावण की तरह आज भी सहस्रमुखी रावण लोगों के मन के भीतर बैठा है। इस सहस्रमुखी रावण को जीतने के लिये 'धर्ममय रथ' का होना अनिवार्य है-

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

तुलसी ने राम के माध्यम से मानवीय संवेदना को व्यापकता प्रदान की है। आज स्वार्थ और अहं के कारण मानवीय संवेदना का अजस्र सूखता जा रहा है। ऐसे में संवेदना से परिपूरित राम हमें जड़-चेतना में व्याप्त चेतना से जुड़ने के लिये प्रेरित करते हैं। तुलसी ने विश्व की चेतनाओं में आध्यात्मिकता का पुट देकर उन्हें मननशील बनाया है। इसलिए इससे जहां व्यक्ति के कुसंस्कार दूर हुए हैं, वहीं सामाजिक विभिन्नताओं का सामाजीकरण हुआ है। विश्व की समरसता इसी की देन है।

तुलसी का रामकाव्य आधुनिक समाजवाद का पोषक है, जिसमें सभी व्यक्ति समान हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार काम चाहिए, काम के अनुसार उसका फल चाहिए रामकाव्य का वर्णाश्रम धर्म आधुनिक मानवतावाद का पोषक है, जहां सब समान कर्म में रत रहते हैं-

वर्णाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथ लोग।

चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भय सोक न रोग।।

रामचरित मानस में संतुलित अर्थ नीति से त्यागवृत्ति की प्रवृत्ति मिलती है। इस संतुलित अर्थवृत्ति में त्याग का भाव भी रहता है जो मनुष्य को दानशील बनाता है। मर्यादा रामचरित मानस का बीज मन्त्र है और आज के भौतिकवादी युग में इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

तुलसी के रामचरित मानस की समतावादी दृष्टि समरसता वादी दृष्टि है जहां जाति-पाँत, ऊँच-नीच, छोटे-बड़े धनी-निर्धन का प्रश्न गौण हो जाता है। तुलसी की दृष्टि में मानव मात्र की एकता, समता, स्वतन्त्रता, सुख और शांति जैसी स्थिति का नाम समतावाद है।

'मानव-धर्म' के अभाव में लोग अनेकानेक भय जैसे - मंहगाई, आतंकवाद, जान-माल की असुरक्षा, जीविकोपार्जन का अभाव, शासन का भय आदि से ग्रस्त हैं। रोगों से कोई मुक्त नहीं। रोग हैं तो इलाज के साधन नहीं, अस्पताल है तो डॉक्टर नहीं। इसीलिए वैश्विक सन्दर्भ में आज राम काव्य की चेतना के प्रसार की आवश्यकता है। गला काट प्रतिस्पर्धा, स्वार्थ तथा ईर्ष्या-द्वेष के इस युग में रामचरित मानस परस्पर प्रेम से रहने तथा स्वधर्म-रत रहने की शिक्षा देता है।

आज लोगों के सामाजिक आचरण में निरन्तर गिरावट आ रही है, नैतिक पतन हो रहा है। व्यभिचार का बोलबाला है। भौतिक सुखों की प्राप्ति की दौड़ में 'पैसा' और 'स्त्री' का आश्रय लिया जा रहा है। वैवाहिक मूल्यों, मान्यताओं का पराभव हो रहा है। अतः तुलसी के 'एक नारी व्रत' और पातिव्रत्य धर्म' को आचरण में उतारने की महती अवश्यकता है। वर्तमान समय में पूरे विश्व में झूठ, पाखंड और अराजकता विद्यमान है जिसे तुलसी के शब्दों में हम असाध्य रोग और पाप कह सकते हैं, "नहि असत्य सम पातक दूजा" और 'अहंकार अति दुःखद डमरूआ।' तुलसी ने नैतिक मूल्यानुराग' पर विशेष बल दिया है और आज भी इसकी परम आवश्यकता है। प्रवंचना, शोषण, निराशावाद, चारित्रिक पतन, दायित्वहीनता, टूटता परिवेश केवल आज की समस्या नहीं है, यह पहले भी था जिसका विरोध तुलसी के मानस में मिलता है।

वैश्विक सन्दर्भ में आज पर्यावरण-प्रदूषण की बात बड़े जोर-शोर से की जा रही है। यह केवल आधुनिक युग की समस्या नहीं है बल्कि तुलसी के 'रामचरित मानस' में प्रकृति-प्रेम का संदेश जगह-जगह मिलता है। तुलसी ने मानस में पेड़-पौधे, खग-मृग सबके महत्त्व को दर्शाया है-

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहि एक संग गज पंचानन।

प्रकृति और पर्यावरण से यदि मानव छेड़-छाड़ न करे, पशु-पक्षियों का शिकार न करते हुए पशु-पालन करे तो प्रकृति हमारा भरपूर साथ देगी। हम वन-सम्पदा से परिपूर्ण रहेंगे, पर्यावरण शुद्ध और सात्विक रहेगा, समुद्र अपनी मर्यादा में रहेंगे। वर्तमान समय में जीवनदायी जल भंडार केमिकल्स या अन्य अपशिष्ट पदार्थों के कारण संक्रमित हो गये हैं ऐसे प्रदूषण से पीड़ित समाज के सम्मुख तुलसी के विचार मार्गदर्शक प्रतीत होते हैं-

सरिता सकल बहहि बरबारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी।।

राम का चरित्र शासकों को यह शिक्षा देता है कि शासक को अनासक्त होना चाहिए। रामचरित मानस हमारी श्रद्धा, आस्था, सेवा, विश्वास, त्याग प्रेम और हमारी पारिवारिक, सामाजिक और मानवीय भावनाओं का जीवन्त प्रमाण है। आज के इस बौद्धिक चिन्तन और वैज्ञानिक चमत्कारों के मध्य व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को कल्याण, विश्व शांति, विश्व मानवता एवं विश्व बन्धुतव की ओर अभिमुख करना ही मानस का संदेश है। मानस में तुलसी ने आत्म परिष्कार की बात की है और उसे मानव धर्म माना है। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, राग, द्वेष, दम्भ और माया से मुक्त मनुष्य में ईश्वर की उपस्थिति है-

काम, क्रोध मद मान न मोहा। लोभ न छोभ राग न द्रोहा।।
जिनके कपट, दम्भ नहिं माया। तिनके हृदय बसहु रघुराया।।

मनुष्य की संवेदना मरती जा रही है। उसका सारा सम्बन्ध व्यापार-बुद्धि से होता है। व्यक्ति एक-दूसरे को धोखा देने में लगे हैं, यह बात तुलसी के मानस में भी है जहां उन्होंने लिखा है-

प्रीति सगाई सकल बिधि, बनिज उपाय अनेक।
कल, बल, छल कलि मल मलिन, डहकत एकहिं एक।।

स्त्री के अधिकारों की, समानता की बड़ी ऊंची बातें की जाती हैं लेकिन वास्तविकता तो यह है कि परिवार, समाज में आज भी पुरुषों का वर्चस्व है। तुलसीदास ने इसको समझा था-

का विधि सृजि नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।।

तुलसी के समय में भी आम आदमी जीविका के लिए जूझ रहा था। दरिद्रता रूपी रावण ने समस्त दुनिया को दबा रखा था। अब यह रावण दरिद्रता के साथ-साथ महंगाई, भ्रष्टाचार हर रूप में है। वर्तमान समय में शासक, प्रशासक और जनता अपने कर्तव्य को भूलकर नियमों को तोड़ने में विश्वास रखते हैं। तुलसी का रामचरित मानस इस दृष्टि से भी प्रासंगिक है, क्योंकि वे आत्मानुशासन के पक्षधर हैं। वे देश में कानून और संविधान तथा नीति का स्वेच्छा से पालन करते हुए प्रेमपूर्ण सामाजिक सम्बन्धों पर विश्वास करते हैं।

उत्तर आधुनिक युग में समय की धारणा थोड़ी अलग है। अतीत और वर्तमान अलग-अलग होते हुए भी अतीत वर्तमान में ही समाहित होता है। अतीत का केवल उल्लेख किया जाता हैं। अतीत और वर्तमान का द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध न होकर, वर्तमान द्वारा अतीत का विखंडन होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उत्तर आधुनिकतावादी केवल वर्तमान में विश्वास रखते हैं। तुलसी के 'राम' और आज के संवेदनशील मनुष्य के अंतःसंघर्ष की व्यथा में युगों का अंतराल अवश्य है पर दोनों को ही उस संघर्ष से गुजरना पड़ता है। परम्परा की एक विस्तृत प्रक्रिया होती है। परम्परा की इस लम्बी यात्रा-प्रक्रिया को कोई भी रचना स्वीकार और अस्वीकार दोनों रूपों में ग्रहण करती है। ऐसी रचनाएं केवल समय से जुड़ती नहीं हैं बल्कि चुनौती भी देती हैं।

कविताएँ

अकेली

फरहीन मेहदी, बी.एड. प्रथम वर्ष

चलती हूँ बस अकेली
न मेरा कोई साथी संग सहारा
न मेरा कोई भला चाहने वाला
न मेरे संग कोई चलने वाला
मेरा साया भी नहीं मेरे संग
मैं हूँ अकेली या हूँ कोई पहेली
कभी तो तेरा चलना भी
रास नहीं आता किसी को भी
न लिया किसी से कुछ
न लेती हूँ न कभी लूँगी
मैं तो ठंडी हवा का झोंका हूँ
जिसकी न कोई संग सहेली
मैं तो हूँ बस अकेली
चलती रहूँगी मैं अकेली
चलती हूँ बस अकेली।।

अध्यापक दिवस

माहेजेया सरफराज, एम.ए. प्रथम वर्ष

आए थे इस बगिया में हम कली बनकर
सींचा आपने ऐसे कि बन गए फूल खिलकर।
कभी हम जो बहे गलत रास्ते पर
आपने हमें रोका बाँध बनकर।
हम थे उगते हुए, सूरज आता नहीं था चमकना
आपने हमें सिखाया चमकना क्षितिज पर।
थे अन्जान हम दुनिया से अब तक
आपने हमें सिखाया चलना जीवन-पथ पर।
चल पड़े है कुछ बनने को मंजिल पर
आशा है रहे यह हस्त सदा हमारे सिर पर।
जन्म दिया भले ही माता-पिता ने
रखना याद सदा हे अनुजों!
चलना है सदा इन्हीं के पद चिन्हों पर!!

मानवता

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

ये मेरे स्वयं के विचार हैं
परमारथ मानवता का आधार है।
हम यह सोच कर चलें, हर क्षण आगे बढ़ें
अपना भला कर दूसरों का भी भला करें
अभिमान न कभी करें उदारता ग्रहण करें
सहर्ष खेलते हुए सत्यपथ पर जो चले
मानवता उसी में है जो मानव कल्याण करे।
बाधा-विपत्ति जो पड़े वीरता से सामना करे
सभी को तार स्वयं तरे सत्कर्म करता चले।
नम्रता से पूर्ण हो, मैत्रीभाव सम्पूर्ण हो
निर्बलों की रक्षा करे, दान की इच्छा करें
कष्ट में भी प्रसन्न हो, कितने दुःखी विपन्न हो
निष्कलुष हृदय से जो सतत् प्रयत्न करता चले।
भूखे को भोजन दे प्यासे की प्यास बुझाए
वस्त्रहीन को वस्त्र देकर प्रगति का मार्ग सुझाए।
जनकल्याण को अग्रसर रहे, मानवता को महत्त्व दे
कर्म को प्रमुखता दे, मिल-जुलकर रहे
तामसिकता को त्यागकर ईश्वरीय ज्योति का प्रकाश दे।
परमारथ-परउपकार करे, निश्छल जीवन निर्वाह करे
स्वार्थपरता से दूर रहे, मानव के अनुकूल रहे
वही सद्मानव कहलाते, जिनका चित परउपकारी हो
मुझको भी प्रिय हैं वे मानव, मानवता जिनको प्यारी हो।

नारीवाद-भारतीय परिप्रेक्ष्य

अमीषा पाण्डेय, बी.एड. द्वितीय वर्ष

औरतों और पुरुषों को बराबर मानने वाला और उनकी बराबरी के लिए लड़ने वाला हर इंसान फेमिनिस्ट कहलाता है। फेमिनिस्ट विचार यह नहीं है कि सत्ता के ढांचे को पलट दिया जाए बल्कि फेमिनिस्ट विचार यह है कि औरतों और पुरुषों के बीच सत्ता का संबंध खत्म हो जाए।

वर्तमान में अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा का खुद को 'फेमिनिस्ट' कहना वाकई काबिले तारीफ है। उन्होंने एक लेखा लिखा, जो दुनिया की राजनीति या अर्थव्यवस्था से परे केन्द्रित था - महिलाओं पर। कहते है न कि 'बात निकलेगी तो दूर तलक जायेगी।' नारीवाद (फेमिनिस्ट) की चर्चा को आगे बढ़ाते हुए हम भारतीय सन्दर्भ में भी इस पर चर्चा करते है।

सर्वप्रथम, हमारे समाज में नारीवाद को समझने से पहले इन भ्रांतियों का जिक्र करना जरूरी है जो 'नारीवाद' शब्द को हमारे बीच कुख्यात करने में अहम भूमिका निभा रहे है। जैसे - नारीवाद का मतलब पुरुषों की आलोचना करना है, या सिर्फ महिलाएं ही नारीवादी हो सकती है नारीवादी होने का तात्पर्य मातृसत्ता से है या हर कामयाब औरत नारीवादी होती है इत्यादि।

इन सभी भ्रांतियों के विपरीत, नारीवाद एक ऐसा दर्शन है जिसका उद्देश्य है-समाज में नारी की विशेष स्थिति के कारणों का पता लगाना और उसकी बेहतरी के लिए वैकल्पिक समाधान प्रस्तुत करना। नारीवाद ही बता सकता है कि किस समाज में नारी-सशक्तीकरण के कौन-कौन से तरीके या रणनीति अपनाई जानी चाहिये। लेकिन दुर्भाग्यवश आज भी हमारे समाज में बहुत से लोग यह मानते ही नहीं कि महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की है। महिलाएं किसी भी मामले में पुरुषों से कम नहीं हैं, इसके बावजूद उन्हें अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। नारीवाद ऐसी परिस्थितियों के विषय में बताता है।

नारीवाद, औरतों की निर्णय लेने और चयन की स्वतंत्रता की बात करता है, न कि सभी औरतों को अपने स्वाभाविक गुण छोड़ देने की, चाहे वे नारीसुलभ गुण हो या कोई और। आज हमारे समाज में भ्रूण हत्या, लड़का-लड़की में भेद, दहेज, यौन शोषण, बलात्कार आदि ऐसी कई समस्याएँ हैं, जिनके लिए एक संगठित विचारधारा की जरूरत है। इसलिए आज भारत में नारीवाद की सख्त जरूरत है। भारतीय नारीवाद, जो कि भारत में नारी की विशेष परिस्थितियों मे मद्देनजर एक सही और संतुलित सोच तैयार करते हुए 'वैचारिक संघर्ष' में विराम लगा सके। ताकि नारी सशक्तीकरण के कार्य में सहायता मिले।

प्रेम और सृजन

नीलू मिश्रा, बी.एड. द्वितीय वर्ष

प्रेम और सृजन मानवता के अनुराग हैं,
जीवन दर्शन वर्ग में तुलसी के चिराग हैं
वात्सल्य रस की अभिव्यक्ति यह वीर रस की गाथा है
भक्ति में मीरा, कबीर और रहीम की परिभाषा है।।
मानवता एक रस है, कल्पना की उड़ान है
पावनता, निर्मलता, उज्ज्वलता की स्नेह सूरा है
जीवन के संघर्ष की मृत्तिका विभूति का बखान है
विविध वर्ग की सरोज स्मृति में यह गीता और कुरान है।।
प्रयास है, उपयोग है, विपणन और संप्रेषण है
मानव से मानव की भिन्नता में एकता का सम्पूर्ण है
रीति है, रिवाज़ है, यह पर्वों का काव्यात्मक योग है
भावनाओं की विशिष्टताओं में विचारात्मक योग है।।
प्रेममार्गी शाखा में यह साहित्य और संस्कृति की कहानी है
राजतंत्र से प्रजातंत्र तक मानवता की निशानी है
शृंगारपरक, समृद्ध, सुशोभित विविध धर्म की बातें हैं
संस्कारों का अटूट मिलन यह अनकही फरियादें हैं।।
अलंकार है, नूतन प्रवृत्ति, स्मृतियों का अवशेष है
दुलार है, ममता है, संघर्ष है विचारों का
अभिव्यक्ति इसकी सुरभित और सुंदर है
प्रेम और सौंदर्य मानवता का मंदिर है।।

जातक कथा (गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मो की कथा)

आरती साहू, बी.ए. प्रथम वर्ष

१. उलूकजातकम्

अतीते प्रथमकल्पे जनाः एकमभिरूपं सौभाग्यप्राप्तं सर्वाकारपरि पूर्ण पुरूषं राजानमकुर्वन् । चतुष्पदाः अपि सन्निपत्य एकं सिंह राजानमकुर्वन्। ततः शंकुनिगणाः हिमवत् प्रदेशे एकस्मिन् पाषाणे सन्निपत्य। मनुष्येषु राजा प्रज्ञायते तथा चतुष्पदेषु च । अस्माकं पुनरन्तरे राजा नास्ति। अराजको वासो नाम न वर्तते। एको राजस्थाने स्थापयितव्यः, इति उक्तवन्तः। अथ ते परस्परमवलोकयन्तः एकमूलकं दृष्टवा 'अपं नो रोचते इत्यवोचन् । अथैकः शकुनिः सर्वेषां मध्यादाशपग्रहणार्थं त्रिकृत्वः अश्रावयत् । ततः एकः काकः उत्थाय 'तिष्ठ तावत् अस्य एतस्मिन् राज्यभिषेककाले एवं रूपं मुखं क्रुद्धस्य च कीदृशं भविष्यति अनेन हि क्रुद्धेन अवलोकिताः वयं तप्तकटाहे प्रक्षिप्तास्तिला इव तत्र धङ्क्ष्यामः। ईदृशो राजा मह्यं न रोचते इत्याह

न मे रोचते मद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम् ।
अक्रूद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति।।

२. नृत्यजातकम्

अतीत प्रथमकल्पे चतुष्पदाः सिंह राजानमकुर्वन् । मत्स्या आनन्दमत्स्यं शकुनयः सुर्वणहंसम् । तस्प पुनः सुवर्ण राजहंसस्य दुहिता हंसपोतिका अतीव रूपवती असीत् । स तस्यै वरमदात यत् सा आत्मनश्चित्तरूचितं स्वामिनं वृणुयात् इति। हंसराजः तस्यै परं दत्वा हिमवती शकुनिससङ्घे संन्यवतत् । नानाप्रकाराः हसमपूरादयः शकुनिगणाः समागत्य एकस्मिन् महति पाषाणतले संन्यपतन् । हंसराजः आत्मनः चित्तरूचितं स्वामिक्रम आगत्य वृणुयात् इति दुहितरमादिदेश। साशकुनि संङ्घे अवलोकपन्ती मणिवर्णग्रीवं चित्रप्रेक्षणं मयूरं दृष्ट्वा 'अयं मे स्वामिको भवतु' इत्यभाषात् । मयूरः 'अद्यपि तावन्मे बलं न पश्यसि' इति अतिगर्वेण लञ्जाञ्च त्यक्त्वा तावन्महतः शकुनिगणस्य मध्ये पक्षौ प्रसार्य नर्तितुमारब्धवान् नृत्यन् चाप्रतिच्छन्नोडभूत।

मातुलचन्द्र!!

रजनी साहू, बी.ए. प्रथम वर्ष

कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र ?
कुत्र गमिष्यसि मातुलचन्द्र ?
अतिशयविस्तृतनीलाकाशः
नैव दृश्यते क्वचिदवकाशः
कथं प्रयास्यसि मातुलचन्द्र ?
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र ?
कथमायासि न भो! मम गेहम्
मातुल! किरसि कथं न स्नेहम्
कदा गमिष्यसि मातुलचन्द्र ?
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र ?
धवलं तव चन्द्रिकावितानम्
तारकखचितं सितपरिधानम्
मह्यं दास्यसि मातुलचन्द्र ?
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र ?
त्वरितमेहि मां श्रावय गीतिम्
प्रिय मातुल! वर्धय मे प्रीतिम्
किन्नायास्यसि मातुलचन्द्र ?
कुत आगच्छसि मातुलचन्द्र ?

सुदामा-श्रीकृष्णस्य मित्रता

रजनी साहू, बी.ए. प्रथम वर्ष

सुदामा श्रीकृष्णस्य मित्रम् आसीत् । सः सर्वप्रथमं गुरूकुले श्रीकृष्णेन सह अपठातम् । एतौ मिलित्वा गुरोः समीपम् एकादश पाठान् अमिलत्। कालक्रमेण वासुदेवः द्वारिकायाः नृपः अभवत् । सुदामा तु दरिद्रः एवं आसीत् ।

सुदामा श्रीकृष्णदर्शनाय द्वारिकाम् अगच्छत् । द्वाररक्षकाः तं राजसभाम् अनयन् । बाल्यबन्धुः वासुदेवः तस्य आलिङ्गनम् अकरोत् । श्रीकृष्णः सुदाम्नः भार्यया प्रदत्तान् तण्डुलान् अखादत् । दारिद्रयस्य निवारणाय श्रीकृष्णः तस्मै सुखं ऐश्वर्यम् अयच्छत् ।

सिद्धि मन्त्रः

(सफलता का मन्त्र)

कोमल केसरवानी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

रामदासः नारायणपुरे निवसति। सः नित्य ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति, ततः परं पशुभ्यः घासं ददाति। अनन्तंर पुत्रेण सह सः क्षेत्राणि गच्छति। तत्र सः कठिनं श्रमं करोति। तस्य श्रमेण निरीक्षणेन च कृषौ प्रभूतम् अत्रम् उत्पद्यते। तस्य पशवः दृष्ट-पुष्टाङ्गाः सन्ति, गृहं च धनधान्या-दिपूर्णम् अस्ति। अत्रैव ग्रामे पैतृकधनेन धनवान् धर्म दासः निवसति। तस्य सकलं कार्यं सेवकाः सम्पादयन्ति सेवकानाम् उपेक्षया तस्य पशवः दुर्बलाः क्षेत्रेषु च वीजमात्रमपि अत्रं नोत्पद्यते। क्रमशः तस्य पैतृकं धनं समाप्तम् अभवत् । तस्य जीवनम् अभावग्रस्तं जातम एकदा वनात् प्रत्यागत रामदासः स्वद्वारि उपविष्टं धर्मदासः दुर्बलं खिन्नं च दृष्टवा अपृच्छत् "मित्र धर्म दास! चिराद् दृष्टोडसि! किं केनापि रोगेण ग्रस्तः, येन एवं दुर्बलः।" धर्मदासः प्रसन्नवदनं तम् अवदत् "मित्र! नाहं रुग्णः, परं क्षीणतिभतः इदानीम् अन्य इव संजातः। इदमेव चिन्तयामि केनोपयेन मन्त्रेण वा सम्पन्नः भवेयम् ।" रामदासः तस्य दारिद्रयस्य कारणं तस्यैव अकर्मण्यता इति विचार्य एवम् अकथयत् "मित्र! पूर्व केनापि, दयालुना साधुना मह्यम् एकः सम्पत्तिकारकः मन्त्रः दत्तः, यदि भवान् अपि तं मन्त्रं इच्छति तर्हि तेन उपदिष्टम् अनुष्ठानम् आचरतु, मित्र! शीघ्र कथयः तदनुष्ठानं येनाहं पुनः सम्पन्नः भवेयम् ।" रामदासः अवदत् ,"मित्र! नित्यं सुर्पोदयात् पूर्वम् उतिष्ठ, स्वपशूनां च उपचर्यां स्वयमेव कुरू, प्रतिदिनं च क्षेत्रेषु कर्मकाराणां कार्याणि निरीक्षस्व। अनेन तव अनुष्ठानेन प्रसन्नः सः महात्मावर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमंत्र दास्यति इति।"

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम
शूरं कृतज्ञं दृढसौहदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।

नीतिश्लोकाः

सोनम केसरवानी, बी.ए. प्रथम वर्ष

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।
प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।
नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।
अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विघा यशो बलम् ।।
काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनने च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।
पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम् ।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ।।
हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ।।
विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।
न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपुः।
व्यवहारेण मित्राणि जायन्ते रिपवस्तथा।।

प्रहेलिकाः

कोमल केसरवानी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

तिष्ठति रविणा साकं, गच्छति रविणा सह।
अन्धहारस्य यः शत्रुः हः स सर्वप्रहाशहः।।

आतपः (धर्मः)

पादै पिबानि खादामि, दूषितं पवनं सदा।
तिष्ठति सुस्थिरो भूमौ, न च गच्छामि कुत्तचित् ।।

पादपः (वृक्षः)

विविधानि तु रूपाणि दर्शयामि प्रतिक्षणम्।
वदामि विविधाः वार्ताः नास्ति यदमपि मे मुखम् ।।

दूर दर्शनम

न तस्यादिः न तस्यान्तः मध्येयः तस्य तिष्ठति।
तवाप्यास्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद् वद् ।।

नयनम्

एकचक्षुर्न काकोडयं बिलमिच्छन् न पन्नगः।
क्षीयते वधर्ते चैव न समुद्रो न चन्द्रमाः।।

चन्द्रः (चन्द्रमा)

प्रकाशः शीतलः यस्य यः कलाभिः च वर्धते।
तापं हरति सर्वेषां चकोरस्य प्रियः स कः।।

नारिकेल (नारियल)

समुद्रतटः

प्रगति चौधरी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

एषः समुद्रतटः अस्ति। प्रणवः अत्र मित्रैः सह क्रीडति। सः बालुकाभिः गृहं रचयति। बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति। ते पादेन कन्दुकं क्षिपन्ति। केचन तरङ्गैः सह क्रीडन्ति। अपरे तरङ्गैः साकम् समुच्छलन्ति। अत्र अनेकाः नौकाः अपि सन्ति। धीवरैः सह पर्यटकाः नौकाभिः समुद्रविहारं कुर्वन्ति केचन जनाः प्रातः समुद्रं गच्छन्ति। तत्र साधवः मुनयः च स्नान्ति। भक्ताः देवलायं गच्छन्ति। तत्र ते देवेभ्यः देवीभ्यः च पुष्पाणि अर्पयन्ति प्रार्थयन्ति च-

नमो देवेभ्यः सर्वेभ्यः
पालकेभ्यो नमो नमः।
अखिलाभ्यः पवित्राभ्यः,
देवीभ्यश्च नमो नमः।।

ततः परं पूजकः सर्वेभ्यः प्रसादं यच्छति, उपदिशति च-

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डेलन,
दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करूणापरानां
परोपकारैर्न तु चन्दनने।।

ततः जनाः द्विचक्रिकया, यानेनम् , पादाभ्याम् वा स्व-स्व गृहम् प्रति गच्छन्ति।

व्यर्थम्

सुमय्या, बी.ए. द्वितीय वर्ष

मानवरहितं दानं व्यर्थम् ।
गानं तानरहितं व्यर्थम् ।।
सिद्धिरहितः योगः व्यर्थः ।
बालः चरणरहितः व्यर्थः ।।
वस्त्ररहितः शृंगारः व्यर्थः।
अलंकारः सुवर्णरहितः व्यर्थः।।
राज्यरहितः भूपालः व्यर्थः।
तपोरहितः भिक्षुः व्यर्थः।।
मुष्टिरहितः कृपाणः व्यर्थः।
बाणः पक्षरहितः व्यर्थः।।
वेदरहितः बाह्मणः व्यर्थः।
वृक्षः फलरहितः व्यर्थः।।

यमुना विषरहिता जाता

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. द्वितीय वर्ष

एकदा षड्वर्षीयः श्रीकृष्णः वृन्दावने यमुनातटम् अगच्छत् । गोपाः अपि तेन सह अगच्छन् । गोपाः पिपासया आकुलाः अभवन् । ते यमुनाजलम् अपिबन् । जलं पीत्वा ते मूर्च्छिताः अभवन् । श्रीकृष्णः तान् मूर्च्छितान् दृष्ट्वा व्याकुलः अभवत् । वस्तुतः यमुनाजले कालियानागस्य कुण्डम् आसीत् । तेन यमुनाजलं विषज्वालाभिः विषाक्तं जातम् । अनेके खगाः पशव, च तत् जलं पीत्वा मृत्युं प्राप्ताः। वायुः अपि तेन विषयुक्तः अभवत् । तेन वायुना वृक्षाः शुष्काः जाताः।

यदा श्रीकृष्णः एतत् सर्वम् अपश्यत् सः एकं वृक्षम् अरोहत् । तस्मात् वृक्षात् सः विषयुक्ते जले अकूर्दत् कालियानागस्य एकाधिकशतं फणाः आसन् । सः तान् प्रसार्य कृष्णं प्रहर्तुम् ऐच्छत् । श्रीकृष्णः तस्य फणान् आरूह्य अनृत्यत् । कालियानागस्य फणाः शनैः शनैः छिन्नाः-भिन्नाः अभवन् । मुखात् रक्तं प्रावहत् । सः हस्तौ संयोज्य अवदत् - "भगवन् ! वयं नागाः जन्मतः एव विषयुक्ताः अयं न मम अपराधः। भवान् एव सर्वप्राणिनां प्रभुः। अनुग्रहं करोतु निग्रहं वा" इति। एवं प्रार्थितः श्रीकृष्णः अनुग्रहं कुर्वन् अवदत् - "रे दुष्ट! किं न जानासि त्वं यत् तव कारणात् सर्वं जलं विषयुक्तं भवति। इतः कुत्रापि अन्यत्र गच्छ" इति। सर्पः ततः पलायितः। एवं च यमुना विषरहिता जाता।

प्रियकविः कालिदासः

सुमय्या, बी.ए. द्वितीय वर्ष

कः न जानाति प्रियकविं कालिदासम् । कविकुलगुरूः कालिदासः न केवलं भारतस्य अपितु विश्वस्य श्रेष्ठः कविः अस्ति।

अस्य महाकवेः जन्मादि-विषये अल्पीयसी सूचना मिलति। सः सम्राट - विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एकः आसीत् । सः प्राप्तराजाश्रयः कविः आसीत् ।

कालिदास-विषये जनश्रुतिः अस्ति यत् पूर्वं कालिदासः महामूर्खः आसीत् । परञ्च जनाः तस्य विवाहं विदुष्या विधोत्तमया सह कारितवन्तः। पत्न्याः प्रताडना-कारणात् सः गृहात् निर्गतः। देव्याः प्रसादात् सः ज्ञानं प्राप्य पुनः गृहमागत वान् । आगत्य 'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' इति पत्न्याः मुखात् श्रुतस्य वाक्यस्य एकैकं पदं स्वीकृत्य त्रीणि काव्यानि अरचयत् । कुमारसम्भवं मेघदूतं रघुवंशं च एतानि त्रीणि काव्यानि सन्ति। अभिज्ञानशाकुन्तलं, विक्रमोर्वशीयं मालविकग्निमित्रं च त्रीणि नाटकानि सन्ति। एतदतिरिच्य त्रहतुसंहारमपि एका रचना अस्ति।

कालिदासः सरलभाषया प्रसादशैल्या काव्यानि रचितवान् । कालिदासस्य प्रकृति-वर्णनम् अद्भुतम् अस्ति। प्रकृतेः मानवीकरणं तस्य रचनायां विशेषतः दृश्यते। उपमा-अलंकारस्य प्रयोगे तु स अद्वितीयः कविः अस्ति। तस्मात् कथितम् 'उपमा कालिदासस्य।'

एवंभूतस्य प्रियकवेः कालिदासस्य विषये सर्वेऽपि भारतीयाः गौरवं धारयन्ति।

गुरु महिमा

चित्रलेखा त्रिपाठी, बी.एड. प्रथम वर्ष

यस्य तेजः सूर्यः समं,
यस्य व्यक्तित्व शोभनः।
यस्य ज्ञानं अद्भुतं,
यस्य प्रभावः विलक्षणः।
तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

यस्य हृदयं सागरं समं,
यस्य वाणी पुष्पं समं।
यस्य शिक्षा प्रभावशालिनी,
यस्मै परिवर्तितं हृदयं।
तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

यस्मै साक्षात्कारं परब्रह्म,
यस्य वक्तव्यं अमूल्यं।
यत् पूजितं ईश्वरं समं,
तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

यस्य महिमा अवर्णनीयम् ,
तस्य विषये किम् कथम् ?
यस्य विद्या मोक्षदायिनी,
यस्मै सन्मार्गं दर्शितं,
तस्मै श्री गुरूवे नमः।।
तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

स्पोर्ट्स

भारतीय सांस्कृतिक एकता का प्रतीक खेल शारीरिक और मानसिक विकास का मुख्य स्रोत है। छात्राओं ने महाविद्यालय के अतिरिक्त प्रान्तीय और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विविध खेल प्रतियोगिता में सक्रिय प्रतिभागिता की। राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालयीय कबड्डी प्रतियोगिता 2016–17 में बी.ए. प्रथम वर्ष की गुलफ्शां फातिमा, कीर्ति अरोरा, सुनैना तथा द्वितीय वर्ष की रत्ना शर्मा ने प्रतिभागिता की।

गुरु गोविन्द सिंह विश्वविद्यालय अमृतसर में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालय हॉकी प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम वर्ष की सोनी सिंह, माहिम बेगम, दीपाली गुप्ता और बी.ए. द्वितीय वर्ष की सोनी ने प्रतिभागिता की।

47 वीं राष्ट्रीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता गोवा में बी.ए. तृतीय वर्ष की जिया फिरदौस और बी.ए. प्रथम वर्ष की प्रीति शर्मा ने सराहनीय खेल प्रदर्शन किया और प्रतियोगिता में उपजेता रहीं।

देश भगत सिंह विश्वविद्यालय पंजाब में आयोजित अन्तर्विश्वविद्यालयीय खो–खो प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम वर्ष की सुनैना, मोनिका गुप्ता, माहिम बेगम, द्वितीय वर्ष की रत्ना शर्मा, सोनी, आयुषी, सोनी सिंह तृतीय वर्ष की आकांक्षा पाण्डेय, रचना कौशल तथा रूबी पाल ने भाग लिया।

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद, में आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय ऐथेलेटिक्स प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें गुलअफ्शा फातिमा (बी.ए. प्रथम वर्ष डिसकसथ्रो, शॉटपुट प्रथम स्थान), रत्ना शर्मा (बी.ए. द्वितीय वर्ष, शॉटपुट, जैवलिंन, द्वितीय, तृतीय स्थान), रूबीना बानो (बी.ए. द्वितीय वर्ष, 100 मी., 200 मी. रेस, प्रथम, प्रथम), रचना कौशल (बी.ए. प्रथम वर्ष, 100 मी., 200 मी. रेस, द्वितीय, द्वितीय), कीर्ति अरोरा (बी.ए. प्रथम वर्ष, जैवलिंन, द्वितीय), सोनी सिंह (बी.ए. प्रथम वर्ष, 400 मी. रेस, प्रथम), माहिम बेगम (बी.ए. प्रथम वर्ष, 400 मी., 800 मी. रेस, द्वितीय, द्वितीय), सुनैना (बी.ए. प्रथम वर्ष, 800 मी. रेस, प्रथम), आकांक्षा पाण्डेय (बी.ए. तृतीय वर्ष, 400 मी. रेस, तृतीय), प्रीति शर्मा (बी.ए. प्रथम वर्ष, 800 मी. रेस, तृतीय) ने स्थान प्राप्त किया।

अन्तर्विश्वविद्यालय वॉलीबाल प्रतियोगिता कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दीपाली गुप्ता, बी.कॉम. तृतीय वर्ष ने प्रतिभागिता की।

महाविद्यालय में खेल वातावरण निर्मित करने तथा खेल प्रतिभागियों को अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय में अन्तर इकाई कबड्डी प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें विश्वविद्यालय सहित कई संघटक महाविद्यालय की टीम ने प्रतिभागिता की। एस. एस. खन्ना की टीम विजेता रही। टीम में भाग लेने वाली खिलाड़ी छात्रा थी बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा गुलफ्शा फातिमा, सुनैना, कीर्ति अरोरा, रूबीना बानो, प्रीति शर्मा,

शिवाक्षी कसेरा, अनुपमा पाल, आकांक्षा तिवारी तथा द्वितीय वर्ष की रत्ना शर्मा, ज्योति कुमारी तथा श्वेता त्रिपाठी।

महाविद्यालय में आयोजित वार्षिक क्रीड़ा सत्र में बैडमिन्टन, रस्सा–कसी, खो–खो, कबड्डी, बास्केट बॉल, एथलेटिक्स में अन्तर हाउस प्रतियोगिता आयोजित की गई। रस्सा कसी में संजुली शुक्ला प्रथम और रचना कौशल द्वितीय, 100 मी. रेस में रूबीना बानो प्रथम, रचना कौशल द्वितीय, रत्ना शर्मा तृतीय, 200 मी. रेस में रुबीना बानों प्रथम, रचना कौशल द्वितीय और शिवांक्षी कसेरा तृतीय, शॉटपुट थ्रो में गुलफ्शां फातिमा प्रथम, रत्ना शर्मा द्वितीय, कीर्ति अरोरा तृतीय, डिस्कस थ्रो में गुलफ्शां फातिमा प्रथम, असना कमर द्वितीय, प्रीति शर्मा तृतीय, हाई जम्प में रुबीना बानो प्रथम, मोहिनी मिश्रा द्वितीय, वर्षा निषाद तृतीय, लॉन्ग जम्प में नसीमा खान प्रथम, संजुली शुक्ला द्वितीय और प्रीति शर्मा तृतीय स्थान पर रहीं। रिले रेस में ब्लू हाउस की रत्ना शर्मा, शिवाक्षी कसेरा, अनुपमा पॉल, रुबीना बानो प्रथम, यलो हाउस की रचना कौशल, प्रीति शर्मा, जिया फिरदौर, नसीमा खान द्वितीय तथा ग्रीन हाउस की संजली शुक्ला, गुलफ्शां, वर्षा निषाद, मोहिनी मिश्रा तृतीय स्थान पर रहीं। खो–खो में रेड हाउस की आयुषी सिंह प्रथम, ब्लू हाउस की रत्ना शर्मा द्वितीय रहीं। कबड्डी में रत्ना शर्मा प्रथम तथा संजली शुक्ला द्वितीय तथा बॉस्केट बॉल में रचना कौशल यलो हाउस ने प्रथम तथा रत्ना शर्मा ब्लू हाउस ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

महाविद्यालय की इण्टर हाउस क्रीड़ा प्रतियोगिता में ब्लू हाउस विनर रहा तथा यलो हाउस रनर रहा। बेस्ट प्लेयर का खिताब संयुक्त रूप से गुलफ्शा फातिमा व रूबीना बानो को दिया गया गणतंत्र दिवस के अवसर पर मार्च पास्ट करते हुए खिलाड़ी छात्राओं ने ध्वज को सलामी दी। ध्वजारोहण के पश्चात खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि कर्नल सुनील चतुर्वेदी द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया तथा विजेता ब्लू हाउस उपविजेता यलो हाउस को शील्ड प्रदान की गयी।

क्रीड़ा प्रतिभाएँ

रूबिना बानो
B.Com. – III
बेस्ट प्लेयर

जिया फिरदौस
B.A. – III
बास्केट बाल

प्रीति शर्मा
B.A. – I
बास्केट बाल

सोनी सिंह
B.A. – II
खो-खो एवं हॉकी

रत्ना शर्मा
B.A. – II
कबड्डी एवं खो-खो

माहिम बेगम
B.A. – I
खो-खो एवं हॉकी

सोनी
B.A. – II
खो-खो एवं हॉकी

कृति अरोरा
B.A. – I
कबड्डी

सुनैना
B.A. – I
कबड्डी एवं खो-खो

आकांक्षा पाण्डेय
B.A. – III
खो-खो

रचना कौशल
B.A. – I
खो-खो

आयुषी सिंह
B.A. – II
खो-खो

मोनिका गुप्ता
B.A. – I
खो-खो

प्रगति आख्या–6

N.S.S.

The National Service Scheme is an Indian Government- sponsored public service programme conducted by the Department of Youth Affairs and Sports of the Government of India. The programme aims to inculcate social welfare in students and to provide service to society without bias. In our college too, N.S.S. has been running as an important unit with the object of making students aware of their responsibilities. There are four units of N.S.S., running successfully under the supervision of four programme officers Dr. Preeti Singh [Senior Programme Officer-unit -1], Dr. Ruchi Gupta [unit 2] Dr. Ruchi Malaviya [unit -3], Dr. Zeba Naqvi [unit-4]. In the session 2016-17 multifarious creative activities were organized by the N.S.S. Programme officers. Some of them to be mentioned are like- Independence Day celebration, Sadbhawana Pakhwara [20 Aug-3Sep],Quiz competition on Azadi 70-Zara Yaad Karo Kurbani, Lecture on Choose your Profession fortnight [15.8.16-31.8.16], Teachers Day, World Literacy Day [8 Sep], Swachhta Pakhwara [1 Sep-15 Sep.], Rally on Traffic rules, N.S.S. foundation day[24 Sep], Damodar Shree National Award for Excellence [2 Oct], Voter Awareness Rally on 17September and an awareness drive for the adults regarding Adhar card, Voter card Bachat Yojana, Pan card and the use of

mobiles. Apart from this there were many more projects which were held throughout the year. One special 7 day camp was also held from 6 to 12 Jan. 2017. The N.S.S. volunteers exhibited their talents through various competitions like speech, essay writing, poster, painting, slogan and debate competitions during this camp. Renowned guest speakers from different fields of society were invited to deliver their motivating lectures on various contemporary issues. "Bhudape Ki Lakari "by Dr. P.K.Sinha [Ex.C.M.O., Allahabad] "Digital Literacy" by Miss Zeenat Fatima [Assistant Manager, Syndicate Bank, Allahabad], "Army as a career" by Miss. Farhadeeba and" Mental Stress and Fatigue" by Dr. Saurabh Tandon were some memorable lectures. Our Principal Dr. Lalima Singh, in her thought provoking lecture, guided the students for their social responsibilities and attitude towards life. Not only this the N.S.S. volunteers were also privileged to listen thought inspiring words of some of their teachers- Dr. Reeta Chauhan Dr. Meenu Agrwal, Dr. Rekha Rani, Dr. Preeti Singh, Dr. Ruchi Gupta, Dr. Ruchi Malaviya and Dr. Zeba Naqvi. Besides these illuminating speeches a workshop on Sahaj Yoga by Colonel Mahabali Singh and some cultural activities like patriotic song competition, folk dance competition, skit on Demonetization, Avas Yojana and Beti Bachao Beti Padhao, and S.U.P.W. Exhibition were also organized. On 13 Jan. a lecture on Vitiya Saksharta was also conducted by the N.S.S. wing of the college. Besides all these activities, under "Skill Development and Harmony," around the whole session a number of programmes were organized by the N.S.S. Volunteers.

प्रगति आख्या–7

एन सी सी

देश सेवा का जज्बा हर युवा का सपना होता है। इसी सपने को साकार रुप देने का सशक्त माध्यम नेशनल कैडेट कोर अर्थात सम सैन्य अभ्यास है। एन सी सी कैडेट में प्रशिक्षण द्वारा अनुशासन, साहस, मैत्री, निःस्वार्थ सेवा, क्रीड़ा कौशल, नैतिक मूल्यों को विकसित किया जाता है। कैडेट की प्रतिभा को राष्ट्रोन्मुखी बनाने के लिए महाविद्यालय में विगत 9 वर्षो से निरन्तर सुचारु रुप से एन सी सी प्रशिक्षण दिया जा रहा हैं। प्रशिक्षण के दौरान ड्रिल, हथियारों का प्रशिक्षण, राष्ट्रीय एकता, लीडरशिप प्रशिक्षण, सिविल अधिकारियों को मदद, नागरिक सुरक्षा, इकोलॉजी, प्राथमिक उपचार, स्वास्थ्य और स्वच्छता, समाज सेवा, साहसिक क्रिया कलाप, मानचित्र का अध्ययन, पाश्चर ट्रेनिंग, सिग्नल्स व गृह परिचर्या इत्यादि विषयों का अध्ययन कराया जाता है।

सीनियर डिवीजन हेतु 'बी' प्रमाण पत्र की अवधि दो वर्ष व 'सी' प्रमाण पत्र प्राप्त करने की अवधि एक वर्ष है। कुल मिलाकर प्रशिक्षण की अवधि 3 वर्ष है। 6 यू. पी. गर्ल्स बटालियन एन सी सी इलाहाबाद द्वारा महाविद्यालय में एन सी सी की एक प्लाटून (55 कैडेट्स) कार्यरत है। कर्नल सुनील चतुर्वेदी समादेश अधिकारी व डा. लेफ्टि. रेखा रानी एन सी सी ऑफीसर हैं।

भारतवर्ष में एन सी सी के 17 निदेशालय हैं। 17 निदेशालयों की राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभागिता दिल्ली में सम्पन्न होती है। अब तक महाविद्यालय से राष्ट्रीय स्तर पर 13 कैडेट ने प्रतिभागिता की है। इस वर्ष महाविद्यालय से तीन कैडेट का राष्ट्रीय स्तर पर चयन हुआ हैं।

1. गणतंत्र दिवस परेड में **कैडेट नेहा B.Com IIIrd** ने गणतंत्र दल व प्रधानमंत्री रैली में भाग लिया। उल्लेखनीय हैं कि राजपथ के लिए पूरे इलाहाबाद ग्रुप में आर्मी कोर से एकमात्र कैडेट नेहा चयनित हुई है।
2. राष्ट्रीय स्तर पर थल सैनिक कैंप दिल्ली में 2 कैडेट चयनित हुई हैं –
   1. कैडेट कु. दीप शिखा बी. ए. II
   2. कैडेट कु. अनुपमा पाल बी0 ए0 II
   3. प्रदेश स्तर पर प्रतिभागिता

1. आई.जी.सी. II कु. सृष्टि कुशवाहा बी.ए. II
2. आई.जी.सी. II कु. मंजरी शुक्ला बी.ए. II
3. आई.जी.सी. II कु. स्वाती यादव बी. ए. II

- अतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में एन सी सी कैडेट्स को महाविद्यालय में तीन दिवसीय योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- पौधारोपण अभियान के द्वारा उन्हें पर्यावरण को हरा भरा रखने का संदेश दिया गया। कारगिल शहीदों के लिए राष्ट्रीय एकता दिवस पर कैडेट्स ने साइकिल रैली निकाली और स्टेनली रोड़, ममफोर्ड गंज, ब्वॉयज हाईस्कूल तक जाकर जन जन को राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। स्वरुपरानी नेहरु चिकित्सालय इलाहाबाद द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में महाविद्यालय की 4 कैडेट

1. कैडेट रंजना शक्या बी. एस–सी. II
2. कैडेट राधा निषाद बी.ए. II
3. कैडेट श्वेता त्रिपाठी बी.ए. II
4. कैडेट कौशीन खान बी.ए. II

ने रक्त दान किया। चारों कैडेट्स को अनुशंसा प्रमाण पत्र व रक्तदाता प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। सिंडिकेट बैंक शाखा मीरापुर इलाहाबाद की उपप्रबंधक जीनत फात्मा से ई पेमेन्ट कैशलेस मनी, डिजिटल पेमेंट की जानकारी प्राप्त कर कैडेट्स ने रैली के माध्यम से जन–जन को इस जानकारी के प्रति जागरुक किया।

विधान सभा चुनाव के पहले महाविद्यालय कैडेट्स ने मतदान जागरुकता अभियान संचालित कर जन–जन को मतदान के लिये प्रेरित किया। महाविद्यालय में गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन के समादेश अधिकारी कर्नल सुनील चतुर्वेदी द्वारा ध्वज शिष्टाचार के दायित्व का निर्वहन किया गया। मुख्य अतिथि के सम्मान में महाविद्यालय के एन सी सी कैडेट ने 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया। मुख्य अतिथि ने गार्ड ऑफ कमान का निरीक्षण कर परेड कमान की सलामी ली। विशिष्ट उपलब्धि हेतु कैडेट्स व छात्राओं को कर्नल चतुर्वेदी व श्रीमती भारती चतुर्वेदी ने पुरस्कार के रुप में ट्रैक सूट देकर उनका उत्साहवर्द्धन किया गया। 'प्रवर्तन' कार्यक्रम में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रतन लाल हांगलू के स्वागत में कैडेट नेहा व कैडेट सृष्टि कुशवाहा ने पॉयलेटिंग का कार्य किया।

Indian Women - Towards Empowerment

Smt. Krishna Banerjee
Associate Professor, Department of Sociology

The concept of **women empowerment** is not new to **India.** Here eminent women of ancient times like **Gargi, Maitreyi** and many others participated in discourses and discussions equal to men and were given as much respect as men. Indian women also participated in National Freedom Movement at a time when literate women were only 2%. The epistemological meaning of Empowerment is, **giving or delegating of power and authority.** In other words empowerment is the granting of political, social and economic power to an individual or group. Empowerment refers to increasing the spiritual, political, social and economic strength of individuals and various communities; it involves **developing confidence** in their own capacities.

'Women Empowerment' thus is.....Enjoyment of all human rights and fundamental freedom; Strengthening of life chances; Equal access to participation and decision making process; Collective involvement in the cultural, social, political and economic growth process and changes that are never ending; and of course it is a continuous process. A woman is said to be empowered when she is **aware of herself, her rights and her self-esteeem.** Women empowerment has a positive effect on personal, social and national development. At a personal level it gives women; a chance to make their own choices, challenge the worthiness of old traditions and to actually look for opportunities away from their families. Women empowerment also gives them other opportunities in life **other than marriage and motherhood,** such as being part of the work force. In poor families empowerment helps these women to become more than another mouth to feed and they can be a **valuable asset** to their families.

Empowerment of women is the most effective way **to reduce birth rate** as well as **childhood mortality** of the country. Women empowerment would contribute to economic growth by its powerful role. It is fundamental to the advancement of **human rights, social justice and qualitative development.** The need for women empowerment in India as quoted by **Smt. Prathbha Devi Singh Patil,** President of Indian in the inaugural function of **"Mukhya Mantri Kanya Vivah Yojana"** at Patna, is "Our full potential as a nation only be realized when women who constitute about half of our population, can fully realize their potential. As long as that does not happen, half the talent, half the progress, half the development would be lost. For a chariot to move forward both wheels have to be strong and if one is weak it cannot move forward. So to move, the chariot of our country forward both the wheels; men and women have to be strong and to **move ahead jointly."**

To get the benefit of all the above mentioned advantages of women power, the need for women's empowerment was felt in India long back. **Father of the nation** said at the second Round Table Conference that his aim was to establish a Political society in India where women would enjoy the same rights as men. After Independence the **Indian**

constitution not only granted **equality to women** but also empowered the state to adopt measures of positive discrimination in favor of women. According to census Reports, the **population of women** in India is roughly 48% of the Indian Population. Therefor, definitely their welfare and progress should hold a central position in the development plans.

In last six decades, there has been a marked change in the approaches related to women's issues. During 70's emphasis was laid on 'women welfare'; 80's focused on 'women development', where as in 90's major attention was paid on 'women empowerment'. The Ninth Plan (1997-2002) recognized the 'Empowerment of women' as one of the nine primary objectives of the plan. The Tenth Plan also aimed at empowering women by adopting its **three fold path** i.e. **social empowerment, economic empowerment and gender justice.** The government adopted certain measures in order to **safeguard the right and privileges** of the women as constitutional provision, legal provision, implementation of important policies, passing of important bills and reports etc. **The Articles 14, 15, 15(3), 16, 39, 42, 51(A) (e)** of the Indian constitution gave various types of provisions for equal rights and opportunities for women and for eliminating discrimination against them in different spheres of life. It also provided **voting rights** to them.

Large numbers of women-related laws have been enacted. Some are; the **Special Marriage Act 1954;** the **Hindu Marriage Act 1955;** the **Immoral Traffic (Prevention) Act 1956;** the **Prohibition Act 1961;** the **Indecent Representation of women (Prohibition) Act 1986;** the Commission of **Sati (Prevention) Act 1987;** the **Child Marriage Restraint Act 1988;** the **Pre-Natal Diagnostic Technique (Regulation and Prevention of Misuse) Act 1994;** the **Domestic Violence Act 2005.** The important policies which have vital implications for Indian women are : (a) **National commission for women** 1990 which made number of recommendations in 34 laws and 8 bills. (b) **Committee on Empowerment** of women 1997, which was constituted as a resolution passed by the Parliament on 8th March 1996 on the occasion of International women's Day (c) National Policy for **empowerment o women** 2001. (d) Report of Ministry of Rural Development 2001 especially sought for empowerment of rural women. (e) A new bill has tabled in Parliament for introducing **1/3rd reservation for women** in legislatures.

The government has also given greater focus to issues relating to women through creation of an independent **Ministry of women and child Development,** Despite all the safeguards provided by the government through above mentioned different measures, the women in our country continue to suffer. Indian myth has the concept of **Ardha Narishwar** (God as half woman the half man). Yet in actual practice even today in our male dominated society women are treated as **Second grade citizens,** Hardly 5%, to 7% women are able to enjoy human rights in our country.

It is unfortunate that social evils like **child marriage, dowry, female infanticide and prostitution** still exist in our society. They need to be dealt with and eradicated. To **root out the obstacles** from the pat of women emancipation, special **short term programs** should be arranged for men to change **their attitude, outlook and approach towards women.** Both men and women must join hands to fight against the old age and

outdated customs. Women themselves should come forward in the movement for **equality with man.** Upliftment of women must be done on a global scale. Policies and Programs should be designed **according to women's need and concerns.**

Every girl must be assured for free and compulsory education. Women should be empowered at every level of education and those schemes should be implemented which give **incentive for the education** of the girl child. Special attention should be laid on adult education and **women literacy** should be linked with other development actions such as health, skill development and cultural growth. Women must have equal opportunities for employment and they should be helped to set up their own business with the support of self help groups and availability of credit facilities. Government should make efforts for strict implementation of women related laws and scheme, whereas all sections of **society, social organization, media and the government** should work together collectively.

Education is the most powerful agent in empowerment of women. GAP (The Gender Achievement and Prospects in Education) 2005 report quotes "Illiteracy is catastrophe for any child, but particularly devastating for girls." The **consequence of education on women** have a ripple effect beginning from the **individual level to the National level.** When women are educated benefit of empowerment can be seen immediately. As the world works to implement the goal of Education for All **(EFA)** and Millennium Development Goals **(MDG),** women literacy occupies a place of importance. Different education based policies; as National Policy on Education 1986; The National Literacy Mission 1988; Plan of Action 1992 and also the 11th Plan placed the highest priority on women education with special focus on **Sc's STs minorities and rural women.** Thus, female literacy rate in the last 10 years has grown at a faster rate (3%) than the male literacy rate.

The specical intervention Kishori Shakit Yojana **(KSY)** and Nutrition Program for Adolescent Girls **(NPAG)** are being implemented for adolescent girls (11-18 years). These programs aim at improving the **educational, nutritional and health status** of adolescent girls, who would grow as empowered women in future. But much work remains to be done. A social environment should be created **where women can live with pride as women and despite being women.** It would be proper to end with the following lines expressing the aspiration of Indian women :

"Hata do sab badhayein mere path se
Mita do akanshayein sab maan ki
Jamane ko badalne ki shakti ko samjho
Kadam se kadam mila kar chalne do mujhko"

My Teacher

Naghma Nafees, B.Ed. First Year

You've given me so much
encouragement to learn and grow
you always managed the time
to help me understand
And whenever I needed
A friendly advice or a Problem Solved
You never complained
You handled your work so well,
That's why respected and Dear Teacher
You're loved more than these few words can tell.
I hope you know well
How much you are appreciated
And how much you support
And guidance mean to me even today.
Though I've become a teacher now
Yet I need your help and guidance all the time.
You've given me so much.
To repay you in any way is impossible
But you can smell the fragrance of the love and regard.
I have for you
You've given me so much
through the years....
Your help and thought fulness and concern.
Through the years
You've been my greatest source of inspiration
Cheering me or Believing in me
Encouraging me to reach the sky
Whatever I am today. I owe
In a big way to you.
With fond thoughts
It is said rightly
"Teachers are the gardeners
Who plant the seeds of knowledge and wisdom in our minds
They are the rain and sunshine
That help those seeds to grow."

Think Positive And Do Positive

(Teenagers Commiting Suicide Due to Depression.....)

Kashifa Itrat, B.Ed. Part - One

Today, we are leading a mechanical life overloaded with the bundle of work. The coming days appear to be really horrible and the only thing which gives the satisfaction is the hope that we would be able to cope with the battle of life.

In the daily newspapers as we see that maximum percentage of teenagers commit suicide due to extreme stress and pressure some of the parents do advice their parents to take it easy. But the children are targeted by the example of other scholars. This leads to major cause that "Teenagers commit suicide" due to mental depression.

The modern generation should have the potential to face the difficulties of their life. A person should try to overcome these hurdles with full zeal and fervour. We should accept our weaknesses and make up our minds to address them.

The ground reality should be accepted instead of living in a fantasy world.

I conclude by stating that 'If we have the will power, then no one would be able to step us back in achieving the utmost and the ultimate goal of our life. Therefore,

'Think Positive and Do Positive'

Don't Quit

Shazia Ashraf, B.A. Part -Two

When things go wrong, as sometimes will,
When the road you are trudging seems uphill
When the funds are low and debts are high.
And you want to smile, but you have to sing,
When cares is pressing you down a bit.
Rest if you must, but don't you quit.
Life is green with its twists and turns.
As everyone of us sometimes learns,
And many of failures turn about,
When he might have won had he stuck it out.
Don't give up though the pace seems slow.
You may succeed with another blow.
Success is failure turned inside out.
The silver tint of the clouds of doubts.
And you never fail when it seems so far.
So stick to the fight when you're hardest hit.
It's when things seem worse.
That you must not quit.....

A Teacher

Mahezeya Sarfaraz, M.A. Previous

Teacher is like a lamp
Who gives us light of knowledge
Teacher is like a flower
Who gives us the scent of education
Teacher is like a captain
Who gives a direction to our life ship
Teacher is like a pillar
Who supports the building of programs
Teacher is like a gardener
Who cultivates good qualities in the students
Teacher is like a mother
Who equally love all her children
Teacher is like a God
Who give us new life and new vision
Oh! Teacher is great, teacher is lovable
Teacher is noble, Teacher is unforgettable..

My Daughter

Sumaiya Sarfaraz, M.A. Previous

When I look at you and I see my past,
present and future, I see my little girl
dressing up, covering her face with makeup.....
I see you running in the garden, picking flowers
and bringing one to me.....
I see that beautiful smile on your face, and
knowing in that moment the pride of being a parent....
No matter how old you are, you will always
be my baby girl.. I am so proud of you.
and I will love you for
all eternity....!

D is for dazzling, because you are my star,
A is for AMBITION, I want you to go far,
U is for UNCONDITIONAL, my love is for you,
G is for GORGEOUS, if only you knew..
H is for HAPPY, all that I wish you to be,
T is for TRUE, my love and what you mean to me,
E is for EVERLASTING, your place in my heart,
R is for REAL, my love from the start.....

Take Time

Shefali Kesarwani, B.Ed. Second Year

Take time to think–
It is the source of all power.
Take time to read–
It is the fountain of wisdom.
Take time to be play–
It is the source of perpetual youth.
Take time to quiet–
It is the opportunity to seek God.
Take time to be aware–
It is the opportunity to help others.
Take time to love and be loved–
It is God's greatest gift.
Take time to laugh–
It is the music of the soul.
Take time to be friendly–
It is the road to happiness.
Take time to dream–
It is what the future is made of.
Take time to pray–
It is the greatest power on earth
Take time to give–
It is too shot a day to be selfish.
Take time to work–
It is the price of success.
There is a time for everthing.....

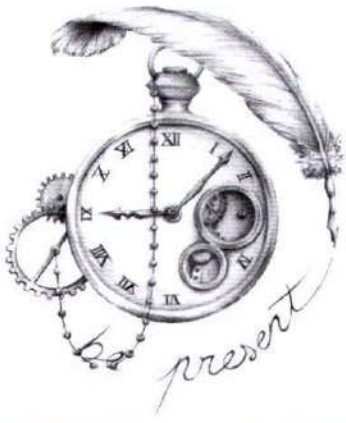

Value of Tme

Anjali Singh, B.Ed. Second Year

To realize the value of one year,
ask student who has failed in his examination.
To realize the value of one month,
ask a mother who has given birth to a premature baby.
To realize the value of one week,
ask an editor of weekly.
To realize the value of one day,
ask a daily wage labour.
To realize the value of one hour,
ask a lover who is waiting to meet.
To realize the value of one minute,
ask a person who has missed his train.
To realize the value of one second,
ask a person who has survived an accident.
To realize the value of one million second
ask a person who has won the sliver Medal in Olympics.

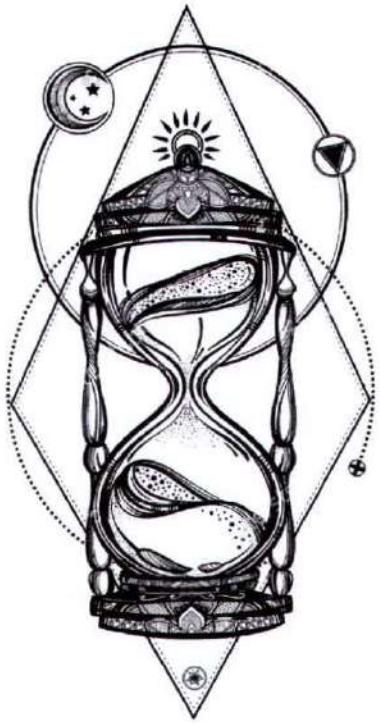

Disaster Management for Smart Cities

Dr. Preeti Singh
Department of Botany,

Smart Cities have recently become the mainstream approach for urbanization. "Smart City" offers sustainability in terms of economic activities and employment opportunities to a wide section of its residents, regardless of their educational, skills or income levels. Frost & Sullivan, identified eight key aspects that define a Smart City : Smart governance, Smart energy, Smart building, Smart mobility, Smart infrastructure, Smart technology, Smart healthcare; and Smart citizen.

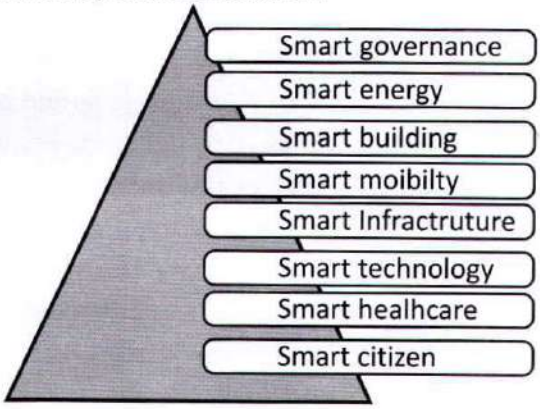

A smart city uses digital technologies to enhance performance and well being, to reduce costs and resource consumption, and to engage more effectively and actively with its citizens. With this context, Prime Minister Narendra Modi's vision "Digital India," has set an ambitious plan to build 100 smart across the country. Modi in his speech quoted, "Cities in the past were built on riverbanks. They are now build along highway. But in the future, they will be based on availability of optical fiber networks and next-generation infrastructure.

The Government of Indian allocated INR 70.6 billion for Smart Cities in Budget 2014-15. The government machinery is working on putting together the standards for executing this mega plan, and identifying the cities to be developed in consultation with states. A few smart cities are already coming up across the country, including Kochi City, Gujarat International Finance Tee-City (GIFT) in city near New Delhi. In a boost to India's 100 smart city programme, the US will help India in developing three such cities apart from joining hands with civil society and authorities, to provide clean water and sewage facilities in 500 cities in the country. The three cities are : Allahabad, Ajmar and Visakhapatnam. This announcement was made after the talks between Prime Minister Shri Narendra Modi and President Barack Obama during the visit of Shri Narendra Modi to the U.S.A.

Emergency response system and resilience are among the most crucial dimensions of smart and future cities design due to the increase in various disruptions caused by frequent natural and manmade disasters. Urban resilience is closely linked to "dynamic notions of urban development and growth." In recent years, unplanned fast-paced urbanization and the destruction of local ecosystems have contributed to increase the risk of disasters in urban areas. The effects of climate change and the lack of political will on the part of many States to combat it have compounded this situation and have contributed in increasing the vulnerability of many regions across the globe.

Disasters cause great economic and human loss each year throughout the world. There is no country that is immune from disaster, though vulnerability to disaster varies. The United Nations define a disaster as : *"A serious disruption of the functioning of a community or a society. Disasters involve widespread human, material economic or environmental impacts, which exceed the ability of*

the affected community or society to cope using its own resources.

Types of Disasters : There are four main types of disasters–

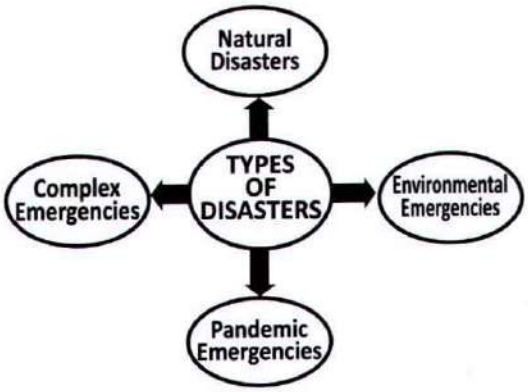

- **Natural Disasters**–including earthquakes, volcano eruptions, floods, landslides, fires, hurricanes, hud-hud and tsunamis; that have immediate impact on human health and secondary impacts causing further death and sufferings.
- **Environmental Emergencies**–including industrial or technological accidents, usually involving the production, use or transportation of hazardous material and occur where these materials are produced, used or transported, and forest fires caused by humans.
- **Pandemic Emergencies**–involving a sudden onset of contagious disease that affects health, disrupts services and businesses at economic and social costs.
- **Complex Emergencies**–involving a break-down of authority, looting and attacks on strategic installations, including conflict situations and war.

Disasters have a major and long-lasting impact on people long after the immediate effect has been mitigated. Poorly planned relief activities can have a significant negative impact not only on the disaster victims but also on donors and relief agencies.

Disaster Management can be defined as: **'the organization and management of resources and responsibilities for dealing with all humanitarian aspects of emergencies, in particular preparedness, response and recovery in order to lessen the impact of disasters.'** In January 2005, United Nation member States passed a ten year global plan for natural disaster risk reduction called the **"Hyogo Framework."** If offers guiding principles, priorities for action, and practical means for achieving established through the Disaster Management Act enacted by the Government of India in December 2005. NDMA is an agency of the Ministry of Home Affairs whose primary purpose is to coordinate response to natural or man made disasters & capacity building in disaster resiliency and crisis response. The NDMA is governed by a nine member board chaired by the Prime Minister of India. The remainder of the board consists of members nominated based on their expertise in areas such of policy, planning infrastructure management, communications, meteorology and natural sciences. The agency is responsible for framing policies, laying down guidelines and best-practices and coordinating with the State Disaster Management Authorities (SDMAs) to ensure a holistic and distributed approach to disaster management. NDMA eqips and trains other government officials, institutions and the community in mitigation for and response during a crisis situation or a disaster. It operates the National Institute of Disaster Management, which develops practices, delivers hands-on training and organizes drills for disaster management. It collaborated with the Ministry of Health and Family welfare in developing emergency health and ambulance services.

Disaster management plans cover prevention,

preparedness, relief and recovery.

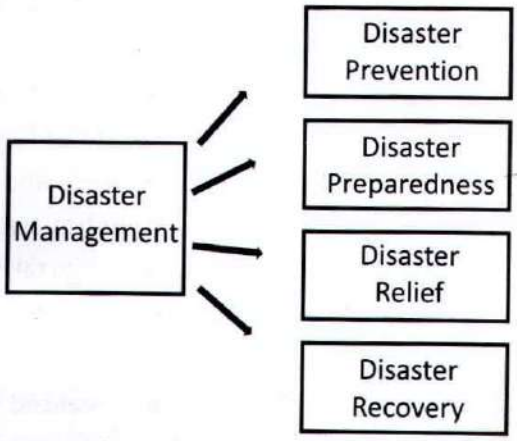

- **Disaster Prevention**–Not all catastrophes can be prevented, but the risk of loss of life and injury can be mitigated with good evacuation plans, environmental planning and design standards. These activities are designed to provide permanent protection from disasters.
- **Disaster Preparedness**–It is the main way of reducing the impact of disasters. These activities are designed to minimize loss of life and damage. For example, by removing people and property from a threatened location and by facilitating timely and effective rescue, relief and rehabilitation.
- **Disaster Relief**–Relief activities include rescue, relocation, providing food and water, preventing disease and disability, repairing vital services such as telecommunications and transport, providing temporary shelter and emergency health care.
- **Disaster Recovery**–Once emergency needs have been met and the initial crisis is over, the people affected and the communities that support them are still vulnerable. Disaster Recovery activities include rebuilding infrastructure, health care and rehabilitation. These should blend with development activities, such as building human resources for health and developing policies and practices to avoid similar situation in future.

Disaster management also often addresses the issue of communication. Many disaster can cause communication networks to fail, so a competent plan will include the quick setup of alternative communication capabilities that do not rely on the switches, towers and hubs that are usually part of telephone and cellular communication network. By making use of short-wave transmissions that are supported by satellite technology, for example, communication can continue to flow from the area affected by the disaster.

Creating an effective disaster management plan is often easier said that done. As many cities, countries and organizations have learned, emergency plans that had been though to be comprehensive have turned out to be partially effective at best. This has caused many companies and government agencies to revisit all aspects of their plans and run computer simulations to identify their weaknesses and refine them so they can be carried out with more speed and efficiency.

An Interdisciplinary approach to risk and disaster management, which involves different levels of State and civil society organizations, particularly those committed to this issue and those working on sustainable development and climate change, is required for a city to become resilient.

Today we have become a major cause of disrupting the ecological system, that eventually lead to the kind of havoc taking place. Why are we forgetting that nature is the supreme power and runs in its own way ? Interrupting its way will always lead to havoc. So let's wake up and follow the rule of nature. It is the only plan that can help in survival of all living beings !

A Visit that changed my Life

Kashifa Itrat, B.Ed. Part - One

In the words of Hellen Keller, 'The Worlds' most beautiful things cannot be seen or even touched with the hands, they can be only felt from the heart.'

I once got the opportunity to take a visit to the blind school located on Elgin Road, Allahabad. The school is owned by Dr. Veena Sing. The principal of the school, Mr. Kundan Lal is himself blind. There were around fifty two students who shared their experiences with me.

My eyes was filled with tears when I heard their stories. The students are taught with book which have embossed letters. They are trained to write Braille (Language meant for the blind). The most striking point was that even though they are deprived of eye sight, they aim at becoming eminent personalities. Many among them had melodious voices and they even sang for me. I spent time with them and prayed for their well-being Joy was writ large on the face of every child. I also distributed sweets to them. It is apt to quote from the Holy Quran (Chapter 3, Verse 92)–"You will not attain righteousness till you spend in charity the things you love." It is our duty to think about those who are deprived of the basic things in life and help them in whatever possible way we can. Only then can we understand the true meaning of life.

After my visit to the blind school, I feel fortunate enough to have received all the blessings from the Almighty. I have decided to reach out to them and to other unfortunate people so that I can bring smile on their faces and joy into their lives. Since then, I am trying to be an altruistic person.

How often do we complain our parents for not having the latest fashionable clothes and freaking gadgets! It's a fact we detest ourselves too often for not looking pretty on a particular day. How often do we compare ourselves with the models and the actresses ! We fail to realise that God has created each one with a distint identity. One should take the flaws of one's life positively and should thank Almighty for whatever he has given us.

Having visited the blind school, I realised that Almighty do have a self corner for me in his heart. Now I complain and demand less from my parents. I feel whatever I'm blessed with is the best for me. Now, there is something more than my clothes, shoes, bags, parties etc. Now, I have a vision for my life. The day keeps knocking in my memory repeatedly and I have decided to extend my help to the unfortunates.

Braille alphabet

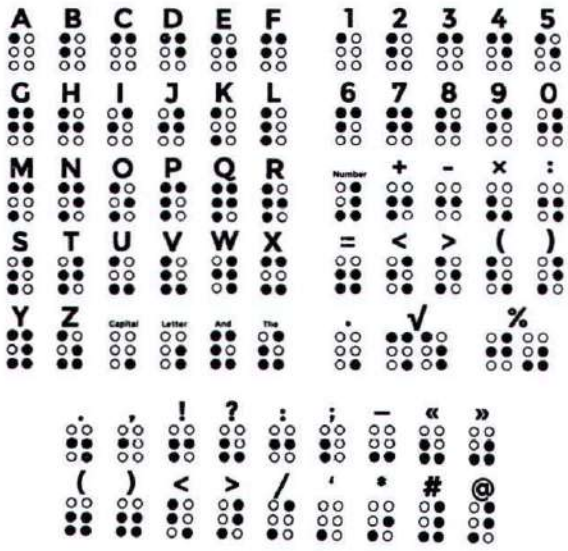

Let's Talk about Gender Equality

Gunjan Gupta, B.Ed. 1st Year

She wants freedom.

Yes, the wants to explore the world like her brother does.

But Alas ! She expects father or brother to drop her to the coaching institute.

Oh ! wait, but she is the feminist and she wants equality to prevail.

She wants equal right.

Yes, she is the one who parades on a March and light candles for female equality.

But Alas ! She is the one who claims for reserved seats in Metros and Buses.

Oh ! wait, but she is the feminist and she wants equality to prevail.

She wants to be 'Independent.'

Yes, that's the world she flaunts everyday

But Alas ! she is the one who expects her boy friend to pay on their date.

Oh ! wait, but she is the feminist and the wants equality to prevail.

She wants to marry a settled man.

Yes, she does have a decent earning.

But Alas ! She here self earns meager salary but wants a man who earns gigantic salary.

Oh ! wait, but she is the feminist and she wants equality to prevail.

She hates giving dowry.

Yes, she will marry the one who dosenot demand dowry.

But Alas ! She is the one who expects her father to throw a hefty marriage and pamper her with plush gifts.

Oh ! Wait, but she is the feminist and she wants equality to prevail.

She wants to continue her job after marriage.

Yes, she will work the same way as her husband does.

But Alas ! She would never bear the household expenses.

After all it is the man's duty to bear expenses.

Oh ! Wait, but she is the feminist and she wants equality to prevail.

She wants a girl child.

Yes, she doesn't discriminate between a boy and a girl.

But Alas ! She would expect her daughter-in-law to deliver a baby boy.

Oh ! Wait, but she is the feminist and she wants equality to prevail.

It is easy to talk about equality but tougher to follow it. It's easy to say that women need men only to have a child.

No, women and men need each other through out their life. This is how it is meant to be. Men are indeed the best part of a woman's life. Yes, I agree, there are some monsters roaming around this world but claiming that only men are monsters, wouldn't be right. We judge people and become fault finders, but never stop to think that we are at fault too. Let's talk about making this world better. Let's not talk about female equality but instead talk about ' GENDER EQUALITY.'

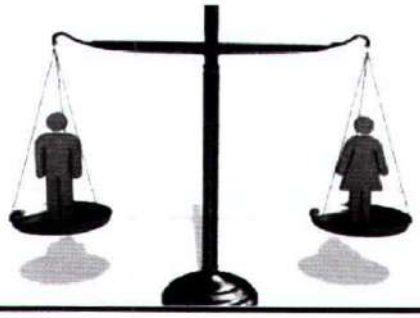

THINKING OUT OF THE BOX

Nahida Nafees, B.Ed. First Year.

Long years ago in a small town, a merchant had the misfortune of owing a large sum of money to the moneylender, who was an old and yguly man. He fancied the merchant's beautiful daughter so he proposed a bargain. He said he would forgo the merchant's debt, if he could marry his daughter. Both the merchant and his daughter were horrified by the proposal.

The moneylender told them that he would put a black pebble and a white pebble into an empty bag. The girl would have to pick one pebble from the bag. If she picked the black pebble, she would become the moneylenders wife and her father's debt would be forgiven. If she packed the white pebble she need not marry him and her father's debt would still be forgiven. But if she refused to pick a pebble, her father would be thrown into jail.

They were standing on a pebble strewn path in the merchant's garden. As they talked, the moneylender bent over to pick up two pebbles. As she picked them up, the sharp-eyed girl noticed that he had picked up two black pebble and put them into the bag. He then asked the girl to pick her pebble from the bag.

The girl put her hand into the moneybag and drew out a pebble. Without looking at it, she let it fall onto the pebble strewn path where it immediately became lost among all the other pebbles.

"Oh how clumsy of me," she said. "But if you look into the bag for the one that is left, you will be able to tell which pebble I picked." Since the remaining pebble is black, it must be assumed that she had picked the white one. Since the moneylender dared not admit his dishonesty, the girl changed what seemed an impossible situation into an advantageous one.

MORAL– "Most complex problems do have a solution, sometimes we have to think about them in a differnt way."

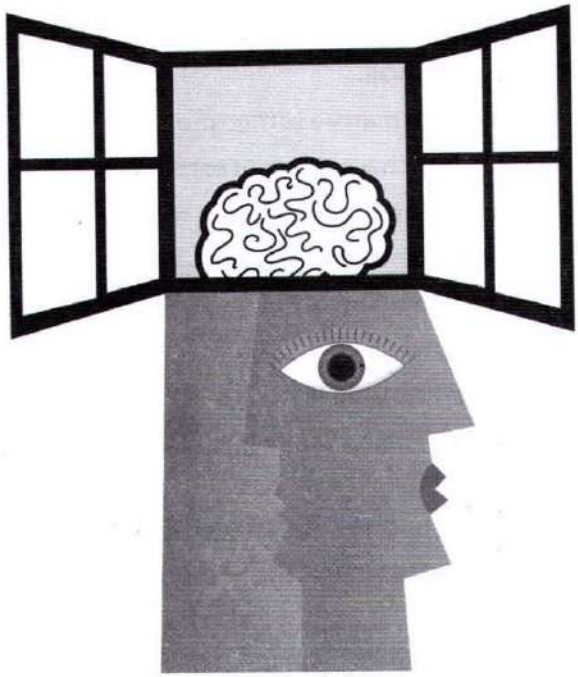

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"

द्वारा वार्षिक देय स्थाई छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2016–17

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
1.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1975	1000/-
2.	श्री भोला नाथ कपूर श्री राजीव खन्ना 645/560 ए, मालवीय नगर, इला0	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती रमा कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1977	100/-
3.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सदनलाल एवं श्रीमती भगवान देई खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1979	400/-
4.	श्री कृष्ण कपूर 13, म्योर रोड, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एन0 सी0 कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1979	500/-
5.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74,रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री मट्टूमल एवं श्रीमती ज्वाला देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1980	400/-
6.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री शिवचरण दास एवं श्रीमती अचम्भी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1981	400/-
7.	श्री राम किशोर खन्ना श्री अरूण किशोर खन्ना 71, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम किशोर खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1983	100/-
8.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/73, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती छगन देवी एवं कु0 मंजू खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1985	400/-
9.	श्री राजा राम मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इला0	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी माधोराम मेहरा एवं श्रीमती बिब्बो बीबी स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1987	500/-
10.	श्री संजय कपूर 619, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती सावित्री कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1988	400/-
11.	श्री दामोदर दास खन्ना श्री नीरज खन्ना ब्लाक आर. ई., 7 फ्लोर, पूर्वा रिवीरिया, मुन्ने कोलाला विलेज, व्हाइट फील्ड, मराठा हल्ली रोड, बैंगलोर–37	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चुन्नी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	2000/-	1988	200/-
12.	श्री वृज किशोर टण्डन श्रीमती राज टण्डन मे0 काशी आर्नामेन्ट हाउस 393, रानी मण्डी, इलाहाबाद	बी0 कॉम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कामता प्रसाद टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	1991	1500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
13	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्ड्रस्ट्रीज (प्रा0) लिमिटेड गाँव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला, खंडासा रोड, गुड़गाँव – 122 001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1991	500/-
14.	श्री पन्ना लाल कपूर श्री अंकित कपूर सैमसन ड्रेस डीपो 27/12 महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कु0 मन्जू कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1992	500/-
15.	श्री संजय मेहरोत्रा डी–501 विशप्रेंज पाम्स एक्सक्यूजिव लोखण्डवाल अकरौली रोड काम्पलेक्स काँदीवली, ईस्ट, मुम्बई 400101 मो0 09324805186	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलराम किशोर मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1994	500/-
16.	श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1994	500/-
17.	श्री ए. सी. सहगल श्री मुकुल सहगल EG-3/2 गर्डन इस्टेट महरौली गुड़गाँव रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती शिव प्यारी सहगल स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	1995	1000/-
18.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1998 2016	500/- 500/- 1000/-
19.	डॉ0 सुशीला टण्डन डॉ0 राम कृष्ण टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 55% अंक से अधिक अंक प्राप्त करने वाली खत्री छात्रा को	श्री हर नारायण जी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
20.	श्री अशोक कुमार मेहरोत्रा C/O, हरीशचन्द्र खन्ना 536 मालवीय नगर, इलाहाबाद।	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री हीरा लाल एवं श्रीमती विजय कुमारी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
21.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ति कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
22.	डॉ0 इन्द्रा मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राज कुमार कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
23.	श्रीमती निर्मला टण्डन ब्लाक नं0 9, फलैट नं. 407 हेरिटेज सिटी अपार्टमेन्ट गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
24.	डॉ0 एस0 एस0 खन्ना 1616/899–ए, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी एवं जरूरतमन्द बी0 एस–सी0 तृतीय वर्ष की छात्रा को	श्री सत्य नारायण कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
25.	डॉ0 भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन, एम0 एसम0 39211, यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0, प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
26.	डॉ0 भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन एम0 एस0 39211 यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	8000/-	1998	800/-
27.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
28.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-	1998	1000/-
29.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाव युसुफ रोड इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती विट्टन देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1999	500/-
30.	श्री आन्नद प्रकाश वर्मा श्रीमती मधु वर्मा 1140, कल्याणी देवी इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलदेव कृष्ण वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2000	600/-
31.	श्री अखिल मेहरोत्रा साहित्य बिहार, किरन उत्सव मंडप कीरत पुर रोड, बिजनौर 246701	बी0 कॉम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
32.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सप्रू रोड इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
33.	डॉ0 रागनी मदान द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सप्रू रोड इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
34.	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्ड्स्ट्रीज प्रा0 लिमिटेड गॉव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला खंडासा रोड, गुड़गॉव –122001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2002	1000/-

प्रभा
2016-17

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
35.	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा फ्लैट लं. 1302 एल एण्ड टी साउथ सिटी, अरकेरे माइक्रो लेआउट बैगंलूरु	बी0 कॉम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा छात्रवृत्ति	5000/-	2002	500/-
36.	श्री रईस मोहम्मद 10/10ए, ताश्कन्द मार्ग इलाहाबाद –211001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती महमूदा बेगम स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
37.	श्री श्याम नारायण कपूर श्री विवेक कपूर 16/11A महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं को जिनकी न्यूनतम 50% अंक, पढ़ाई शुल्क का 50%।	अमर शहीद त्रिलोकी नाथ कपूर स्मृति छात्रवृति	60000/-	2003	6000/-
38.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डा. आशा सेठ A10 अग्निपथ, 7 सप्रू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भाग्यवती मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृति	6000/-	2003	600/-
39.	श्री अमर नाथ कक्कड़ 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम नाथ कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	14000/-	2004	700/-
40.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी.एड. में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	20000/-	2006	1400/-
41.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी0 कॉम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	48000/-	2006	3600/-
42.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	विज्ञान संकाय की छात्राओं को।	श्री श्रवण टण्डन स्मृति छात्रवृति	500000/-	2008	45000/-
43.	श्रीमती सरोजनी मेहरोत्रा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम भूषण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2008	1000/-
44.	डॉ. शालिनी रस्तोगी 8–डी/1 तपोवन बिहार पोन्नपा रोड, इलाहाबाद	बी.एड. संकाय की जरूरतमन्द छात्रा को।	प्रो. दामोदर दास खन्ना स्मृति छात्रवृति	10000/-	2011	800/-
45.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	बी.एड. संकाय की सर्वगुणोन्मुखी/उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्रवण टंडन स्मृति पुरस्कार	135000/-	2012	11000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
46.	श्रीमती शोभा भल्ला सी 159 सन सिटी, सेक्टर–54 गुडगाँव हरियाणा	ऑफिस मैनेजमेन्ट में प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को।	श्री वी. के. भल्ला स्मृति छात्रवृत्ति	125000/- 31000/-	2013 2013	4000/- 4000/- 4000/-
47.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री उदय पाल मिश्र स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
48.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भगवती शुक्ला स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
49.	श्री गोपाल चोपड़ा श्रीमती अंजली चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	2 विकलांग छात्राओं को।	श्रीमती शकुन्तला चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	50000/- 50000/-	2014 2014	5000/- 5000/-
50.	श्रीमती इन्द्रा चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं कों।	श्री राम लाल चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	100000/-	2014	10000/-
51.	श्रीमती उर्मिला संड 1116 कल्याणी देवी इलाहाबाद।	बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष में प्रतिभाशाली खत्री या सारस्वत छात्रा को।	श्री अतुल कुमार संड स्मृति छात्रवृत्ति	16000/-	2014	1200/-
52.	श्रीमती मीना टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्कीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष की खत्री छात्रा जिसने XII कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये हो।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2015	800/-

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"

द्वारा वार्षिक देय अन्य छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2016–17

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय विभाग

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
1.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती कश्मीरो देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
2.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती जयन्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
3.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती चुन्नी देवी कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
4.	श्रीमती मीरा खन्ना "मनोहर" 645/560– ए मालवीय नगर, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चन्दो खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1100/-
5.	श्रीमती मोनी खन्ना "मनोहर" 645/560, मालवीय नगर, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्री संजीव खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	600/-
6.	श्री अशोक कुमार सण्ड 1116ए/1337 ए, कल्याणी देवी, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	श्रीमती माधुरी सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
7.	श्री अशोक कुमार सण्ड 62/10 प्राईमरोज वाटिका सिटी सेक्टर 49, सोहाना रोड गुड़गॉव 122018	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	पं0 विश्व नाथ सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
8.	न्यायमूर्ति अरूण टण्डन 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती हीरा देवी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
9.	डा0 प्रभा कक्कड़ 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0ए0 प्रथम वर्ष एवं बी0ए0 द्वितीय वर्ष के शिक्षा शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओ को	श्रीमती शंति देवी कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
10.	श्री वाई. एन. मेहरा श्री अतुल मेहरा 5 ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री इन्द्र नरायण मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	5100/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
11.	डॉ0 लालिमा सिंह एस0 एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0ए0 तृतीय वर्ष में अर्थ शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	प्रो0 डी0 एस0 कुशवाहा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
12.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	देव गंगोत्री स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
13.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	मेजर वी0 पी0 स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
14.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 प्रथम/ द्वितीय वर्ष में गणित विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एम0 पी0 गांगुली स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
15.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष की संगीत गायन में 60% से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री जी0 सी0 सान्याल स्मृति छात्रवृत्रि	500/-
16.	श्रीमती ममता सिन्हा श्री ओ. पी. सिन्हा 117/52 बी / 1 दरियाबाद, इलाहाबाद	समाज शास्त्र विषय में न्यूनतम 60% अंक प्राप्त करने वाली मेधावी छात्रा को।	श्री अम्बिका प्रसाद श्रीवास्तव स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
17.	डा. अल्पना अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में दर्शन शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री प्रताप चन्द्र जैन स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
18.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रो. राजेन्द्र कुमार वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
19.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में हिन्दी विषय मे अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	पो. रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
20.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रबृत्ति	500/–

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
21.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
22.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती शिव दुलारी त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–
23.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–
24.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून–248001	बी.काम. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
25.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.काम. द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
26.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
27.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
28.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में मेधावी खत्री छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
29.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष में एक मेधावी छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
30.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी. प्रथम वर्ष में गणित विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
31.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एड. प्रथम वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
32.	डा. शिव शंकर श्रीवास्तव एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में मध्य कालीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम विलास स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
33.	श्री जी.सी. मेहरोत्रा बेली रोड इलाहाबाद	विज्ञान वर्ग की जरूरतमन्द एवं विकलांग छात्रा को	श्रीमती शशी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-
34.	श्री जी.सी. मेहरोत्रा बेली रोड इलाहाबाद	विज्ञान वर्ग की जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती शशी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
35.	दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी 179, अतरसुईया इलाहाबाद	महाविद्यालय की प्रतिभाशाली छात्राओं को	दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी, इलाहाबाद	10000/-

College-Governing Body

Mr. Rajeev Khanna	Chairperson
Mr. Dilip Mehrotra	Manager/Treasurer
Hon'ble Justice Arun Tandon	Member
Dr. Asha Seth	Member
Dr. Indira Mehrotra	Member
Dr. Ram Krishna Tandon	Member
Prof. Prahlad Kumar	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Dr. Suman Seth	Member
Dr. Lalima Singh	Principal/Scey.Ex-Officio
Mrs. Gunjan Sharma	Bursor

Members Nominated by Vice Chancellor University of Allahabad

Prof. Ramendu Roy	Commerce Department University of Allahabad
Prof. P.K.Sahu	Education Department University of Allahabad
Prof. B.N. Mishra	Geography Department University of Allahabad
Dr. Kaushal Kishore	18-A, Auckland Road Allahabad

Teacher Representative

Lt. Dr. Rekha Rani	Teacher Representative
Mrs. Sangeeta Gautam	Teacher Representative
Dr. Soni Srivastava	Teacher Representative Co-ordinator Science Faculty

Permanent Invitees

Mr. Amit Khanna	Secretary SKP Society / Manager, S.K. Inter College, Allahabad
Mrs. Meena Tandon	Manager, Navin Shishu Vatika, Allahabad

Special Invitees

Mr. Rajat Kapoor	C.A.
Mrs. Krishna Banerjee	Dean - Student Welfare
Dr. Lalima Singh	Coordinator - B.Ed. Faculty
Dr. Neerja Sachdeva	Coordinator-Arts Faculty
Dr. Archana Tripathi	Coordinator -Commerce Faculty
Dr. Manjari Shukla	Proctor

Joint Managing Committee
Saroj Lalji Mehrotra Science Faculty

Mr. S.K.Seth	Chairman
Hon'ble Justice Arun Tandon	
Mr. Chetan Mehrotra	
Dr. (Smt.) Asha Seth	
Mr. G.C.Mehrotra	
Mr. Y.N.Mehra	
Mr. Rajeev Khanna	
Mr. Dilip Mehrotra	
Dr. Lalima Singh	

Permanent Invitees

Mr. Vinayak Tandon
Mr. Rajat Kapoor
Mrs. Gunjan Sharma
Dr. Soni Srivastava

Board of Directors - B.Ed

Dr. Asha Seth	Chairperson
Mr. Rajeev Khanna	Chairman of College Governing Body
Hon'ble Justice Arun Tandon	Member
Mr. Dilip Mehrotra	Manager/Treasurer
Dr. R.K.Tandon	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Dr. Lalima Singh	Principal/Co-ordinator Chairman - Admission Committee
Dr. Sudha Melhotra	
Dr. Ritu Jaiswal	Member
Dr. Rachna Anand Gaur	Member
Dr. Ranjana Tripathi	Teacher Representative
Dr. Shruti Anand	Teacher Representative

Our Mission

To raise the level of education of the girls belonging to the lower and middle section of society as well as minority class. Achievement and realization of their goals. To make the girl student independent and self reliant. To undertake future courses and training programme in order to make them economically independent.

Our Vision

To help the girl student discover their innate potentials and promote them towards their personal and social benefits.

शिक्षक वर्ग

डॉ. लालिमा सिंह
प्राचार्या

कला संकाय
स्थायी शिक्षक वर्ग

डॉ. शिप्रा सान्याल	एसोसिएट प्रोफेसर– संगीत गायन
डॉ. अल्पना अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
डॉ. रीता चौहान	एसोसिएट प्रोफेसर– शिक्षाशास्त्र
श्रीमती गुंजन शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
श्रीमती कृष्णा बनर्जी	एसोसिएट प्रोफेसर– समाजशास्त्र
डॉ. नीरजा सचदेव	एसोसिएट प्रोफेसर– अंग्रेजी
डॉ. आशा उपाध्याय	एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. मीनू अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
डॉ. अर्चना त्रिपाठी	एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र
डॉ. ज्योति कपूर	एसोसिएट प्रोफेसर– संस्कृत
डॉ. रचना आनन्द गौड़	एसोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी
डॉ. मंजरी शुक्ला	एसोसिएट प्रोफेसर– दर्शनशास्त्र
डॉ. संध्या अरोरा	एसोसिएट प्रोफेसर– संगीत वादन
डॉ. रीतू जायसवाल	एसोसिएट प्रोफेसर– प्राचीन इतिहास
लेफ्टि. डॉ. रेखा रानी	एसोसिएट प्रोफेसर– संगीत गायन
श्रीमती संगीता गौतम	एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला

विज्ञान संकाय
स्थायी शिक्षक वर्ग

डॉ. सोनी श्रीवास्तव	एसोसिएट प्रोफेसर– जन्तु विज्ञान
डॉ. अर्चना ज्योति	एसोसिएट प्रोफेसर– रसायन विज्ञान
डॉ. प्रीति सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर– वनस्पति विज्ञान

अतिथि प्रवक्ता (A.U.)

डॉ. निधि श्रीवास्तव	अतिथि प्रवक्ता– संगीत वादन
डॉ. रुचि मालवीय	अतिथि प्रवक्ता– अंग्रेजी
डॉ. सुमिता सहगल	अतिथि प्रवक्ता – रसायन विज्ञान
डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव	अतिथि प्रवक्ता– मध्यकालीन इतिहास
डॉ ज्योति बैजल	अतिथि प्रवक्ता– शिक्षाशास्त्र
डॉ. शुभ्रा मालवीय	अतिथि प्रवक्ता– जन्तु विज्ञान
डॉ. आरिफा बेगम	अतिथि प्रवक्ता– उर्दू

कला संकाय (स्ववित्तपोषित)

श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर–कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा
डॉ. जेबा नकवी	एसिस्टेंट प्रोफेसर–मध्यकालीन इतिहास
डॉ. श्रद्धा त्रिपाठी	एसि. प्रो.–प्राचीन इतिहास (अंशकालिक)
डॉ. निशी सेठ	एसि. प्रो.–प्राचीन इतिहास (अंशकालिक)
डॉ. कल्पना मिश्रा	एसिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी (अंशकालिक)
डॉ. सुरभि त्रिपाठी	एसिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी (अंशकालिक)
डॉ. नरगिस खान	एसिस्टेंट प्रोफेसर– अंग्रेजी (अंशकालिक)
डॉ. सीमा पाण्डेय	एसि. प्रो.– समाज शास्त्र (अंशकालिक)
डॉ. शशी पाण्डेय	एसि. प्रो.– समाज शास्त्र (अंशकालिक)
डॉ. आँचल चौरसिया	एसिस्टेंट प्रो.– चित्रकला (अंशकालिक)
डॉ. ऋचा चौरसिया	एसिस्टेंट प्रो.– शिक्षाशास्त्र (अंशकालिक)
डॉ. प्रज्ञा केसरवानी	एसिस्टेंट प्रो.– चित्रकला (अंशकालिक)
डॉ. शमीनाज बानो	एसिस्टेंट प्रो.– अंग्रेजी (अंशकालिक)
डॉ. शिखा गुप्ता	एसिस्टेंट प्रो.– अंग्रेजी (Lecture Basis)

विज्ञान संकाय (स्ववित्तपोषित)

डॉ. आलोक मालवीय	एसिस्टेंट प्रोफेसर–वनस्पति विज्ञान
डॉ. प्रमिला गुप्ता	एसिस्टेंट प्रोफेसर–भौतिक विज्ञान
डॉ. शर्मिला वैश्य	एसिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
डॉ. अचला श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर – वनस्पति विज्ञान
डॉ. दीपा श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर – रसायन विज्ञान
डॉ. मनोज अग्निहोत्री	एसिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
डॉ. अर्चना यादव	एसिस्टेंट प्रोफेसर – जन्तु विज्ञान
श्री पृथ्वी राज सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर – भौतिक विज्ञान
डॉ. प्रियंका द्विवेदी	एसिस्टेंट प्रोफेसर – जन्तु विज्ञान/ बायोटेक्नोलाजी
श्री राम जी पाण्डेय	एसिस्टेंट प्रोफेसर – गणित
सुश्री दिव्य लक्ष्मी	एसिस्टेंट प्रोफेसर – भौतिक विज्ञान
डॉ. दीपिका श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर – जन्तु विज्ञान
डॉ. मो.एकलाकुर रहमान	एसिस्टेंट प्रोफेसर – बायोटेक्नोलाजी
डॉ. रानू दत्ता	एसिस्टेंट प्रोफेसर – बायोटेक्नोलाजी
डॉ. सिप्पी सिंह	एसि. प्रो.–जन्तु विज्ञान (अंशकालिक)
डॉ. शबनम परवीन	एसि. प्रो.–वनस्पति विज्ञान (अंशकालिक)
डॉ. देवेन्द्र सिंह	एसि. प्रो.–रसायन विज्ञान (अंशकालिक)
डॉ. आशुतोष पाठक	एसि. प्रो.–वनस्पति विज्ञान (अंशकालिक)
डॉ. मो. शाकीब	एसि. प्रो.–रसायन विज्ञान (अंशकालिक)

वाणिज्य संकाय (स्ववित्तपोषित)

डॉ. रुचि गुप्ता	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. मीना चतुर्वेदी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शिखा अग्रवाल	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. तनुश्री रॉय	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. विकास सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शिव शंकर शुक्ला	एसिस्टेंट प्रोफेसर

बी.एड. संकाय (स्ववित्तपोषित)

डॉ. विनोद कुमार सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. अरुणा त्रिपाठी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. मंजू मिश्रा	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. हरीश कुमार सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. सुरेन्द्र कुमार	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. रंजना त्रिपाठी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. शालिनी रस्तोगी	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. ममता भटनागर	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. श्रुति आनन्द	एसिस्टेंट प्रोफेसर
सुश्री मीनाक्षी श्रीवास्तव	एसिस्टेंट प्रोफेसर
सुश्री अनुजा पाठक	एसिस्टेंट प्रोफेसर
श्री आशीष मिश्रा	एसिस्टेंट प्रोफेसर
डॉ. ज्योति अग्रवाल	एसिस्टेंट प्रोफेसर
सुश्री प्रियंका रानी	एसिस्टेंट प्रोफेसर

शिक्षणेतर कर्मचारी वर्ग

स्थायी

श्री उमेश चन्द्र शर्मा	कार्यालय अधीक्षक
श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता	सहायक लेखाकार
श्री विनय कुमार यादव	स्टेनो
श्री राम कृपाल	सहायक लिपिक (सेवा निवृत्त 31.03.2016)
श्री सन्त लाल	पुस्तकालय लिपिक
श्री शिवशंकर लाल	नैत्यिक लिपिक
श्री रमेश चन्द्र पाण्डेय	प्रयोगशाला सहायक (Regularised)
श्री चन्द्रशेखर जोशी	प्रयोगशाला सहायक (Regularised)
श्री चन्द्रकान्त पाण्डेय	कार्यालय सहायक (मृतक आश्रित कोटा)
श्रीमती प्रियंका सिंह	कार्यालय सहायक (मृतक आश्रित कोटा)
श्री घनश्याम सिंह	बुक लिफ्टर
श्री राधा कृष्ण	परिचर
श्री कल्लू	परिचर
श्री राम मिलन सेन	परिचर
श्री दया राम	परिचर
श्री राम लाल यादव	परिचर
श्री सुशील कुमार शुक्ला	परिचर
श्री मुरारी लाल	प्रयोगशाला परिचर
श्री नीम बहादुर थापा	प्रयोगशाला परिचर
श्री बच्ची सिंह बिष्ट	प्रयोगशाला परिचर
श्री राजेश कुमार	बुक लिफ्टर
श्री मोती लाल	परिचर (Regularised)
श्री मुकेश कुमार	सफाई कर्मचारी (Regularised)
श्री अनोखे लाल	चौकीदार (Regularised)

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

विज्ञान संकाय

श्री गुरुदास भट्टाचार्या	लिपिक
श्री जितेन्द्र कुमार	प्रयोगशाला सहायक
श्री मृदुल कुमार यादव	प्रयोगशाला सहायक
श्री आलोक कुमार साहू	कार्यालय सहायक
श्री राहुल चटर्जी	प्रयोगशाला सहायक
श्री विजय कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सूर्यमणि यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री दिनेश कुमार गुप्ता	प्रयोगशाला परिचर
श्री विनोद कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सन्तोष कुमार यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी	प्रयोगशाला परिचर
श्री मोहित कनौजिया	प्रयोगशाला परिचर

कला संकाय

श्रीमती मिथिलेश कुमारी	पुस्तकालय सहायक
श्रीमती सोनू मेहरोत्रा	पुस्तकालय सहायक
श्री फूल चन्द्र यादव	परिचर
श्री विक्रम कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री गोविन्द त्रिपाठी	पुस्तकालय परिचर
श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी	परिचर
श्रीमती संतोष	सफाई कर्मचारी
श्री रामकेश पाल	माली
श्री संतोष कुमार विश्वकर्मा	ड्राइवर

वाणिज्य संकाय

रूपाली सक्सेना	पुस्तकालय लिपिक
श्री अंकुर कपूर	लिपिक
श्री बृजेश कुमार	परिचर
श्री वीरेन्द्र कुमार	परिचर

बी.एड. संकाय

श्री सतीश कुमार धूरिया	टेक्निकल सहायक
श्री उमेश चन्द्र कुशवाहा	अंशकालिक लेखाकार
श्री संजय मेहरोत्रा	कार्यालय सहायक/स्टोर कीपर
श्री धनन्जय कुमार शुक्ला	परिचर
श्री यशपाल	सफाई कर्मचारी
श्री कुलदीप कुमार	परिचर
श्री अनूप कुमार	चौकीदार
श्रीमती नीतू सिंह	परिचर

نغمہ نفیس
بی۔ایڈ

ہم کو ہمارا کالج ہے جان و دل سے پیارا

ہم کو ہمارا کالج ہے جان و دل سے پیارا
غنچے ہیں ہم اسی کے یہ ہے چمن ہمارا
یہ علم اور ادب کا بہتا ہوا سمندر
ہے فیض اس کا ایسا قطرہ ہوا سمندر
پھر علم سے ہیں جاگا قطرے کا بھی مقدر
گہرائی خاموشی کا پھر ہو گیا وہ مظہر
ہر علم و فن کا افضل گہوارہ ہے ہمارا
غنچے ہیں ہم اسی کے یہ ہے چمن ہمارا
نازک رگوں میں اس نے اک جوش بھر دیا ہے
پرواز حوصلہ میں شاہیں بنا دیا ہے
اور خدمت وطن کا بھی اک سبق دیا ہے
علم و ادب سے ہم کو آراستہ کیا ہے
علم و ادب کا ایسا بہتا ہوا یہ دھارا
غنچے ہیں ہم اسی کے یہ ہے چمن ہمارا
اس بحر سے ابھی تک نکلے ہیں جتنے گوہر
اک روز وہ بنیں گے اپنے وطن کے رہبر
منزل ہماری ہو گی اب آ گے آسماں پر
ظلمت جہاں بھی ہو گی چمکیں گے ماہ بن کر
پھر کیوں نہ ہو یہ سب کی آنکھوں کا ایک تارا
غنچے ہیں ہم اسی کے یہ ہے چمن ہمارا
حامی ہیں امن کو ہم خواہاں عافیت کے
پھیلائیں گے اجالا ہر سمت حریت کے
پروانے بن کے چھائے ہیں شمع علمیت کے
اونچے کریں گے پرچم ہم اپنی قومیت کے
ہم سب کی زندگی کو اس نے دیا سہارا
غنچے ہیں ہم اسی کے یہ ہے چمن ہمارا
ہم سنگ تھے اسی نے ہیرا ہمیں بنایا
علم و ادب کا زیور پہنایا اور سکھایا
ہم سب کو سیدھا رستہ چلنا سدا سکھایا
سیرت سے اور طینت سے بھی ہمیں سنوارا
اس نے کیا ہے اونچا معیار فن ہمارا
غنچے ہیں ہم اسی کے یہ ہے چمن ہمارا
ہم اس چمن کے بلبل یہ ہے دعا ہماری
کر اس چمن کی یا رب تو ایسی آبیاری
بہتر بنا دیا ہے اس نے چمن ہمارا
غنچے ہیں ہم اس کے یہ ہے چمن ہمارا

□□□

خریدا جا سکتا۔
علم سے سکون دل میں اضافہ ہوتا ہے جبکہ دولت سے بیچینی اور بیقراری پیدا ہوتی ہے۔
علم نفس کو زندہ اور جہالت کو ختم کرتا ہے جبکہ دولت انسان کے نفس کو مردہ بنا دیتی ہے۔

□□□

انجلی سنگھ
بی۔ایڈ

پرندے کی فریاد

آتا ہے یاد مجھ کو گزرا ہوا زمانہ
وہ باغ کی بہاریں وہ سب کا چہچہانا
آزادیاں کہاں اب وہ اپنے گھونسلے کی
اپنی خوشی سے آنا اپنی خوشی سے جانا
لگتی ہے چوٹ دل پر آتی ہے یاد جس دم
شبنم کے آنسوؤں پر کلیوں کا مسکرانا
وہ پیاری پیاری مورت وہ کامنی صورت
آباد جس کے دم سے تھا میرا آشیانہ
آتی نہیں صدائیں اس کی مری قفس میں
ہوتی میری رہائی اے کاش میرے بس میں
کیا بدنصیب ہوں میں گھر کو ترس رہا ہوں
ساتھی تو ہیں وطن میں، میں قید میں پڑا ہوں
آئی بہار کلیاں پھولوں کی انجمن میں
میں اس اندھیرے گھر میں قسمت کو رو رہا ہوں
اس قدی کا الٰہی دکھڑا کسے سناؤں
ڈر ہے یہیں قفس میں غم سے مر نہ جاؤں

□□□

نغمہ نفیس
بی۔ایڈ

ماں کی ممتا

کیا بتائے دوستوں تم کو کہ کیا دیتی ہے ماں
پھولنے پھلنے کی بچوں کو دعا دیتی ہے ماں
نا سمجھ بچوں کی کرتی ہے کچھ ایسی پرورش
صاحب عقل و خرد ان کو بنا دیتی ہے ماں
دیکھتی ہے جب گود کے پالوں کو جب تکلیف میں
مضطرب ہوتا ہے دل، آنسو بہا دیتی ہے ماں
مفلسی کا سایہ بی پڑنے نہیں دیتی کبھی
خود نہیں کھاتی ہے بچوں کو کھلا دیتی ہے ماں
غلطیوں پر باپ جب ناراض ہوتا ہے کبھی
اپنے آنچل میں محبت سے چھپا لیتی ہے ماں
لوریاں دے دے کے بچوں کو سلانے کے لئے
کتنی راتیں جاگ کر اکثر بتا دیتی ہے ماں
حال میں کردار سازی کر کے اپنے جیتے جی
گود کے پالوں کا مستقبل بنا دیتی ہے ماں
ماں کی شفقت اور محبت کا نہیں کوئی جواب
اپنے بچوں کے لئے خود کو مٹا دیتی ہے ماں
دیکھ لیتی ہے بچوں کو وہ شاد و کامران
اپنی ساری زندگی کے دکھ بھلا دیتی ہے ماں
ماں کے قدموں تلے پھر کس لئے جنت نہ ہو
اس طرح بچوں کو الفت کا سایہ دیتی ہے ماں
ہے اسی سے تعظیم، عزت و توقیر کے قابل
غم میں بھی بچوں کی خاطر مسکرا دیتی ہے ماں

□□□

کاشفہ عطرت
بی.ایڈ.سال اول

موبائل

میرے پاس ایک ادھیڑ عمر کی عورت مدد کے لئے آیا کرتی تھی۔ بھکاری تو نہیں تھیں۔ چہرے اور لباس سے بھی نہیں لگتی تھیں۔ نقاب میں آیا کرتی تھی۔ میں نے کہا کہ آپ محنت کرسکتی ہیں۔ ہاں کرتی ہوں الہ آباد وصی آباد میں گھروں میں کپڑے دھوتی ہوں ایک ماہ یا سوا ماہ پر آجایا کرتی تھیں۔

میری کام کرنے والی ملازمہ نے بتایا کہ میرے گھر کے آگے ۱۲ کوٹھریوں میں رہتی ہے۔ آدمی کی پان کی دکان ہے میں سنا اور نظر انداز کردیا وہ برابر آتی رہی۔

رمضان کا مہینہ تھا۔ ایک دن آئیں اور میرے آنگن کی سیڑھوں پر بیٹھ گئیں۔ اسکا موبائل بجنے لگا۔ شاید وہ نقاب کی جیب میں تھا۔ اٹھا نہیں رہی تھی۔ دوبارہ بیل ہوئی میں نے کہا کہ اٹھا کر بات کرو اب تو یہ ہر کسی کے پاس ہے موبائل کا زمانہ ہے۔ بغیر اس کے کسی کا کام نہیں چلتا خیریت کے علاوہ سارے کام اسی سے ہوتے ہیں۔ اس لئے بات کیا بچیاں چوک کپڑے لینے آئیں ہیں شرمندہ تھی۔ میں اندر کمرے میں گئی کہ اسکو کچھ دے دوں۔ آئی تو وہ جا چکی تھی۔ میں نے اپنا گیٹ کھول کر باہر دیکھا مگر وہ کہیں نظر نہیں آئی۔ اللہ پاک نے اس کو ہدایت دی۔ اکثر وہ یاد آجایا کرتی ہے میں نے اپنی ملازمہ سے پوچھا تو کہنے لگی اب تو وہ کہیں پھرتی نظر نہیں آتی۔

❑❑❑

حناز ہرا
سال اول

کیا ہے افضل۔ علم یا دولت

یہ وہ دور ہے جب ہر جانب خوں ریزی، چوری، ہر طرح کے گناہ سرزد ہو رہے ہیں۔ ہر طرف صرف گناہوں کا سیلاب ہے۔ لوگوں کے دلوں میں محبت کی جگہ نفرت نے لے لی ہے جہاں پہلے لوگ ایک دوسرے سے حسن اخلاق سے ملتے تھے وہیں آج کے زمانے میں انسان صرف دولت کو کمانے میں مصروف ہے اسے نہ حلال کی فکر ہے نہ حرام کی لیکن انسان یہ بھول گیا ہے کہ انسان کو دولت نہیں علم حقیقی انسان بناتا ہے۔ علم وہ طاقت ہے جس سے انسان ہر مصیبت سے بچ سکتا ہے۔ لیکن زمانے حال میں انسان علم سے زیادہ دولت کو اہمیت دیتا ہے لیکن یہ بھول گیا کہ علم سے افضل اور کچھ نہیں۔

آیئے دیکھتے ہیں علم افضل ہے یا دولت

علم افضل ہے کیوں کہ علم خرچ کرنے سے بڑھتا ہے جبکہ دولت خرچ کرنے سے کم ہوتی ہے۔

علم افضل ہے کیوں کہ علم دوستوں میں اضافہ کرتا ہے۔ جبکہ دولت دشمن پیدا کردیتی ہے۔

علم معاشرے میں عزت کا باعث ہوتا ہے جبکہ دولت بعض اوقات ذلت کا باعث بن جاتی ہے۔

علم افضل ہے کیوں کہ علم کے چوری ہونے کا خوف نہیں ہوتا جبکہ دولت کہ چوری ہونے کا خوف رہتا ہے۔

علم ہماری حفاظت کرتا ہے جبکہ دولت کی حفاظت ہمیں کرنی پڑتی ہے۔

علم کی مدد سے دولت کمائی جاسکتی ہے پر دولت سے علم کو نہیں

حفیظہ خانم
بی.اے.سال اول

پیسہ نامہ

کپڑے کسی کے لال ہیں پیسے کے واسطے
لمبے کسی کے بال ہیں پیسے کے واسطے
باندھے کوئی رو مال ہیں پیسے کے واسطے
سب کشف اور کمال ہے پیسے کے واسطے

جتنے ہیں روپ،سب یہ دکھاتے ہیں پیسے

پیسے سے ناچے پیادہ،قواعد دکھا دکھا
اسوار ناچے،گھوڑے کو کاوا لگا لگا
گھنگرو باندھے پیک بھی پھرتا ہے ناچتا
اور اس سوا،جو غور سے دیکھا تو جا بہ جا

سو سو طرح کے ناچ دکھاتے ہیں پیسے

پوچھا کسی نے یہ کسی کامل فقیر سے
یہ مہر و ماہ حق نے بنائے ہیں کاہے کے،
وہ سن کے بولا بابا ! خدا تجھ کو خیر دے
ہم تو نہ چاند سمجھیں نہ سورج ہیں جانتے

بابا !ہمیں تو نظر آتے ہیں پیسے

پیسے جب آئے ہاتھ میں سو آنکھ کھل گئی
گل زار پھولے آنکھوں میں اور عیش تل گئے
دو پیسے جب ہاتھ میں آ کے مل گئے
چودہ طبق کے جتنے تھے سب بھید کھل گئے

یہ کشف یہ کمال دکھاتے ہیں پیسے

حفیظہ خانم

تنہائی

کتنی عجیب ہے اس شہر کی تنہائی بھی
ہزاروں لوگ ہیں مگر پھر بھی اس جیسا کوئی نہیں
بنا بتائے نہ جانے کیوں اس نے یہ دوری کر دی
بچھڑ کر اس نے یہ محبت ہی ادھوری کر دی
میرے مقدر میں غم آئے تو کیا ہوا
خدا نے اس کی خواہش تو پوری کر دی

□□□

البانا خان
بی۔اے۔سال اول

کفن

دیکھا جو آج کفن میں ایک لیٹی ہوئی لاش تو دل کے آنسو آنکھوں سے بہہ نکلے
وہ جو جیتے تھے اپنوں کے لئے آج انھیں کو تنہا چھوڑ کر چل دئے
محفل تو آئی تھی بس تماشا دیکھنے اور وہ سوچتے ہیں لوگ آئے ہیں ان کے درد میں رونے کے لئے
اے موت دو پل تو ٹھہر جاتی تا کہ میں بھی کچھ کر پاتا اپنے لئے
نہ تو میری ایک خواہش پوری ہوئی اور نہ کوئی سپنے
ہنسی آتی ہے البانا آج یہ سوچ کر
کہ زندگی بھر ہم جیتے ہیں صرف مرنے کے لئے

□□□

ہما انصاری
درجہ سوم

شاعرانہ انداز میں دل کی باتیں

رات نہیں خواب بدلتا ہے
منزل نہیں کارواں بدلتا ہے
جذبہ رکھو ہر دم جینے کا
کیونکہ قسمت چاہے بدلے نہ بدلے
وقت ضرور بدلتا ہے

نہ دولت پہ ناز کرتے ہیں
نہ شہرت پہ ناز کرتے ہیں
کیا ہے اللہ نے مسلم کے گھر پیدا
اس لئے اپنی قسمت پہ ناز کرتے ہیں

زندگی جینے کا مقصد خاص ہونا چاہئے
اور اپنے آپ پہ بھروسہ ہونا چاہئے
زندگی میں خوشیوں کی کمی نہیں دوستوں بس
خوشیوں کو منانے کا انداز ہونا چاہئے

کوئی عبادت کی چاہ میں رویا
کوئی عبادت کی راہ میں رویا
بڑا پیارا ہے یہ نماز محبت کا سلسلہ
کوئی قضا کر کے رویا
کوئی ادا کر کے رویا

وقت سب کو ملتا ہے
زندگی بدلنے کے لئے
زندگی دوبارہ نہیں ملتی
وقت بدلنے کے لئے

❑❑❑

ثانیہ صدیقی
بی۔اے

دیش کو بچا یگی کیا یہی سرکار؟

دیش کو بچاگی کیا یہی سرکار؟
ہوتے ہیں دھماکے دیش میں بار بار
وعدے تو وعدے ارادے کمزور ہیں
گھر گھر میں رونے دھونے کا شور ہے
پھیلایا آتنکیوں نے یہاں اندھکار
کیا دیش کو بچائے گی یہی سرکار؟
چھوکے نکل جاتے ہیں نیتاؤں کے بیان
روتا ہے چمن میرا، روتا ہندوستان
چین سے جینے کا ہے میرا حق
کیا دیش کو بچائے گی یہی سرکار؟
دیش کو لوٹ رہا ہے دیش کا رکھوالا
پھیلا ہوا ہے دیش میں بھرشٹا چار
دیش کو بچائے گی کیا یہی سر کار؟
آتنکیوں کے لئے کیوں نرم ہے آواز
کیوں ہوتی ہے پھانسی پر آنا کانی
کب بند ہو گا موت کا یہ کاروبار
دیش کو بچائے گی کیا یہی سرکار؟

❑❑❑

ہما انصاری
بی.اے. سال سوم

حضرت علی کی پیاری باتیں

۱۔ حکمت مومن کی کھوئی ہوئی چیز ہے حکمت خواہ منافق سے ملے لے لو۔

۲۔ خالق سے مانگنا شجاعت ہے اگر دے دے تو رحمت ہے نا دے تو حکمت ہے، مخلوق سے مانگنا ذلت ہے اگر دے دے تو احسان ہے نا دے تو شرمندگی ہے۔

۳۔ اگر تمہیں یقین ہو جائے کہ تمہارا رازق اللہ ہے تو تم رزق تلاش نہ کرو، اللہ کو تلاش کرو جس کے پاس تمہارا رزق ہے۔

۴۔ جو تمہاری خاموشی سے تمہاری تکلیف کا اندازہ نہ کر سکے اس کے سامنے زبان سے اظہار کرنا صرف لفظوں کو برباد کرنا ہے۔

۵۔ کوئی تمہارا دل دکھائے تو ناراض مت ہونا کیونکہ قدرت کا قانون ہے۔ جس درخت کا پھل زیادہ میٹھا ہوتا ہے لوگ پتھر بھی اسی کو مارتے ہیں۔

۶۔ اپنی سوچ کو پانی کی قطروں سے بھی زیادہ شفاف رکھو کیونکہ جس طرح قطروں سے دریا بنتا ہے اسی طرح سوچوں سے ایمان بنتا ہے۔

۷۔ اچھے لوگوں کی ایک خوبی یہ بھی ہوتی ہے کہ انہیں یاد رکھنا نہیں پڑتا وہ یاد آتے ہیں۔

۸۔ دکھ میں کبھی بھی پچھتاوے کے آنسو نہ بہاؤ کیونکہ تم وہ خوش نصیب ہو جس کو اللہ نے آزمائش کے قابل سمجھا۔

۹۔ جھوٹ بول کر جیت جانے سے بہتر ہے سچ بول کر ہار جاؤ۔

۱۰۔ کسی کا عیب تلاش کرنے والے کی مثال اس مکھی کہ جیسی ہے جو سارا خوبصورت جسم چھوڑ کر صرف زخم پر ہی بیٹھتی ہے۔

۱۱۔ خوشی انسان کو اتنا نہیں سکھاتی جتنا غم سکھاتے ہیں۔

۱۲۔ وضو جوانوں کی طرح کرو، نماز بوڑھوں کی طرح پڑھو، دعا بچوں کی طرح مانگو۔

۱۳۔ انسان زبان کے پردے میں چھپا ہے۔

۱۴۔ ادب بہترین کمال ہے، اور خیرات افضل ترین عبادت ہے۔

۱۵۔ جو چیز اپنے لئے پسند کرو وہ دوسروں کے لئے بھی پسند کرو۔

۱۶۔ بھوکے شریف اور پیٹ بھرے کمینوں سے بچو۔

۱۷۔ گناہ پر ندامت گناہ کو مٹا دیتی ہے، نیکی پر غرور نیکی کو مٹا دیتا ہے۔

۱۸۔ سب سے بہترین لقمہ وہ ہوتا ہے جو اپنی محنت سے حاصل کیا جائے۔

۱۹۔ جو شخص پاک دامن عورت پر تہمت لگاتا ہے، اسے سلام مت کرو۔

۲۰۔ ہمیشہ سچ بولو تا کہ تمہیں قسم کھانے کی ضرورت نہ پڑے۔

۲۱۔ موت کو ہمیشہ یاد رکھو، مگر موت کی آرزو کبھی مت رکھو۔

۲۲۔ دنیا کا سب سے خوبصورت پودا محبت کا ہوتا ہے جو زمین میں نہیں بلکہ دلوں میں اگتا ہے۔

۲۳۔ ہر بات میں ہاں میں ہاں ملانا منافقوں کی عادت ہے۔

۲۴۔ انسان کو اچھی سوچ پہ وہ انعام ملتا ہے جو اسے اچھے اعمال پر بھی نہیں ملتا کیونکہ سوچ میں دکھاوا نہیں ہوتا۔

۲۵۔ زندگی کے ہر موڑ پر صلح کرنا سیکھو کیونکہ جھکتا وہی ہے جس میں جان ہوتی ہے ورنہ اکڑ تو مردے کی پہچان ہوتی ہے۔

□□□

ماہ ضیبہ سرفراز
ایم.اے.سال اول

۱۵/اگست یا یوم آزادی

۱۵/اگست ۱۹۴۷ کو ہمارا ملک آزاد ہوا اور ہم نے صدیوں کی غلامی سے نجات پائی۔ ۱۵/اگست ہمارے لئے ایک اہم دن ہے۔ ہم ہر سال جوش وخروش کے ساتھ اس دن کو اپنے ملک میں مناتے ہیں۔ حب الوطنی کا جذبہ ہر انسان میں ہونا از بس ضروری ہے۔ جس ملک میں حب الوطن ہوتے ہیں وہ ملک ترقی کی منزل تیزی سے طے کرتا ہے۔ جہاں ایسا نہیں ہوتا وہ ملک بربادی اور تنزل کی طرف جاتا ہے۔ پرانے زمانے میں وطن پرست ہر ملک میں لاتعداد تھے۔ ہندوستان سونے کی چڑیا کہلاتا تھا۔ لیکن ایک وقت وہ بھی آیا کہ ملک انگریزوں کا غلام ہوگیا۔ آج ہم لوگوں میں حب الوطنی کا جذبہ نہیں رہا۔ یہی سبب ہے کہ آج ہمارا ملک ترقی کے بجائے تنزل کی طرف جا رہا ہے۔ وطن سے محبت صرف انسان ہی نہیں بلکہ جانوروں اور پرندوں میں بھی پائی جاتی ہے۔

ماں اپنی اولاد کو پیدا کرتی ہے جب تک وہ بڑے نہیں ہو جاتے تب تک اسکی دیکھ بھال اور پرورش کرتی ہے اور جب وہ بوڑھی ہو جاتی ہے تو اس کی اولاد کا فرض ہے کہ وہ اپنے ماں باپ کی خدمت کرے۔ زمین بھی ہماری ماں ہے۔ اس نے ہم کو پیدا کیا ہے۔ اسکی مٹی میں لوٹ کر ہم آج اس قابل ہوئے ہیں۔ اب ہمارا فرض ہے کہ ہم اپنے وطن سے محبت کریں اس کی خدمت کریں اور اسی حفاظت کریں اور وطن کی ترقی کے لئے کوشاں رہیں۔ اور دنیا میں اپنے وطن کا مقام اونچا رکھیں۔ یہ تب ہی ہوسکتا ہے جبکہ ہم اچھے شہری بنیں۔ اچھی تعلیم حاصل کریں اور لوگوں کو اچھی تعلیم دیں۔ ملک کی صنعت وکاشت وغیرہ کو ترقی دیں۔

اگر ہم تاریخ کا مطالعہ کریں تو ہم کو محبّ وطن کے بہت سے نام مل جائیں گے۔ جو کہ ملک کے لئے پیدا ہوئے ملک کے لئے زندہ رہے۔ اور ملک کی ترقی کے لئے جان قربان کر دی۔ گاندھی جی، ابوالکلام آزاد، جواہر لال نہرو، سر سید، پٹیل وغیرہ ۲۰ صدی کے وہ زندہ جاوید شخصیت ہیں۔ جن سبب آج ہم نے آزادی حاصل کی۔ انھوں نے اپنا سب کچھ وطن کو نذر کر دیا۔ بعض لوگ کہتے ہیں کہ آزادی سے پہلے بھی ۱۹۳۷ء میں ایک چناؤ ہوا جس میں محمد یونس کو برٹش سرکار نے بہار کا پہلا وزیر اعظم بنایا جو کی تین مہینے کے لئے مقرر کئے گئے تھے۔ اس کے بعد پنڈت جواہر لال نہرو ہندوستان کے پہلے وزیر اعظم بنے۔ جس دن ہمارا ملک آزاد ہوا اس دن ۲۷ رمضان اور چوتھی شب قدر تھی۔

آج ۲۱ ویں صدی میں مسلمانوں میں بہت بدلاؤ آئے ہیں۔ اور اسلام کو ایک نئی روشنی ملی ہے۔ لڑکیوں کی پڑھائی کے لئے جگہ جگہ حیدرآباد اردو فاؤنڈیشن کھولے گے ہیں۔ جس میں لڑکیاں دینی اور اسلامک تعلیم بھی حاصل کرسکتی ہیں۔ آزادی کی اہمیت کو مدنظر رکھتے ہوئے ضرروی ہے کہ ہم میں یہ جذبہ پیدا ہو ہم اپنے ملک کی اس معاشرت اور رہن سہن کو اپنائیں اپنے ملک کی حفاظت کریں۔ ہر وقت تیار رہیں اور تب ہی ہمارا معاشرہ ملک اور ہماری قوم ترقی کرسکتی ہے۔ اس قومی تہوار پر ہم سب کو یہ عہد کرنا چاہئے کہ ہم سب ایک جٹ ہو کر رہیں۔ اور اپنے ملک کو مضبوط طاقت ور اور خوشحال بنائیں۔

□□□

سے انحراف کریں۔ جب ہندوستان کی عورت تعلیم حاصل کر کے قابل تہذیب یافتہ اور عقل مند ہو جائے گی تب وہ ملک کے سماجی، سیاسی مذہبی اور معاشی گوشوں میں اپنا خاص مقام بنائے گی اور تبھی ہمارا ملک، ہماری قوم تیزی سے ترقی کرے گی جس سے ہندوستان جلد ہی طاقت ور اور مضبوط ملک بن جائے گا کیوں کہ ''مرد کی تعلیم ایک فرد کی تعلیم ہے اور عورت کی تعلیم پوری نسل کی تعلیم ہے۔''

❑❑❑

آفرین نوشے
درجہ بی۔اے۔سال اول

کفن

ڈرتی ہوں موت سے مگر مرنا ضرور ہے
لرزتی ہوں کفن سے مگر پہننا ضرور ہے
ہوتی ہوں غمگین جنازے کو دیکھ کر
لیکن میرا جنازہ بھی اٹھنا ضرور ہے
ہوتی بڑی کپکپی قبروں کو دیکھ کر
پر بندوں کو اس قبر میں رہنا ضرور ہے

☆☆☆

نہ گورا رنگ حسن کی علامت ہے اور نہ کالا رنگ بد صورتی کی نشانی۔ کفن سفید ہو کر بھی خوف کی علامت ہے۔ اور کعبہ کا غلاف کالا ہو کر بھی آنکھوں کی ٹھنڈک ہے۔

اشعار

موت تو نام سے بد نام ہوتی ہے ورنہ
تکلیف تو زندگی بھی دیا کرتی ہے

☆

یہاں مزدور کو مرنے کی جلدی یوں بھی ہے محسن
کہ زندگی کی کشمکش میں کفن مہنگا نہ ہو جائے

☆

آنسو بہا کے بھی ہوتے نہیں ہیں کم
کتنی امیر ہوتی ہیں آنکھیں غریب کی

☆

فضا کو لگ گئی شاید تیرے آنے کی خبر
ہمارے شہر میں اترا ہے کمال کا موسم

☆

بے زباں بادلوں کو دے رہا اپنی زباں کوئی
لگتا ہے آسمان کو سنا رہا درد کی داستان کوئی

☆

زندگی میں انسان کو ایک عادت ضرور سیکھ لینی چاہئے جو چیز ہاتھ سے نکل جائے اسے بھول جانے کی عادت یہ عادت بہت سی تکلیفوں سے بچا لیتی ہے۔

☆

وقت بھی لیتا ہے کروٹیں کیسی کیسی
عمر اتنی تو نہیں تھی پر سبق بہت سیکھ لیا
ہمیں کیا پتہ تھا کہ زندگی اتنی انمول ہے
کفن اوڑھ کر دیکھا تو نفرت کرنے والے بھی رو رہے تھے

نہ کچھ رہا جب پاس اپنے تو سنبھال کے رکھی فقط تنہائی
یہ وہ سلطنت ہے جس کی بادشاہ بھی ہم
فقیر بھی ہم
اور ہر فیصلے کے وزیر بھی ہم.....

❑❑❑

ماہ ضیہ سرفراز
ایم.اے. سال اول

تعلیم نسواں

کسی بھی ملک کی ترقی میں تعلیم کا وہی مقام ہے جو کسی بھی گھر کے بنانے میں بنیادی اینٹ کا ہوتا ہے۔ جس طرح ایک چراغ کی لو سے دوسرے چراغ کو جلایا جاتا ہے اسی طرح ایک تعلیم یافتہ شخص دیگر لوگوں میں علم کی روشنی پھیلاتا ہے۔ پڑھی لکھی عورتیں بس اپنے گھر بار کا ہی اہتمام نہیں کرتیں بلکہ پورے ملک کی ترقی میں بھی اپنی تربیت دیتی ہیں اور ایک خاص مقام رکھتی ہیں ساتھ ہی دوسری خاتون کو تعلیم کی طاقت، اہمیت اور اس سے ہونے والے فائدے سے متاثر کرا کران میں کارگزاری یا کام کرنے کا جذبہ بھر دیتی ہیں۔

ترقی پسند ملکوں میں عورتوں کے باہمی امداد اور تعلیم کی بہت اہمیت ہے۔ ایسے ملکوں میں قحط، غریبی، بیماری، بے توجہتی جیسی برائیوں کے خلاف آواز اٹھائی جارہی ہے، جس میں عورتوں کے غیر معمولی تعاون کی ضرورت کو محسوس کیا جارہا ہے آج دنیا بھر میں عورتیں اپنے ملک کے سماجی، سیاسی، مذہبی اور معاشی معاملوں میں مردوں کے شانہ بہ شانہ کھڑی ہیں اس لئے ان کی تعلیم لازمی ہے جس سے وہ زندگی کے ہر گوشے کو باشعور لہجے سے منور کرتی ہیں۔ مشہور شاعر اکبر الہ آبادی اس سے متعلق فرماتے ہیں۔

تعلیم عورتوں کو بھی دینا ضروری ہے
لڑکی جو بے پڑھی ہو وہ بے شعور ہے

تعلیم کے میدان میں ہندوستانی عورتوں کے پچھڑے پن کی کئی وجوہات ہیں جن میں جہیز، پردہ، غریبی، احساس کمتری وغیرہ شامل ہیں اس کے ساتھ ہی عورت میں خود اعتمادی کی کمی، اس کی حوصلہ افزائی نہ کرنا، اور بے کار کی بات چیت میں وقت برباد کرنا، یہ ایسی پریشانیاں ہیں جو تعلیم نسواں میں دقتیں پیدا کرتیں ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ خالی وقت میں مرکز تعلیم بالغاں میں جا کر تعلیم حاصل کرنے کے لئے انھیں ہمت دینی چاہئے۔ چاہے وہ کسی بھی عمر کی ہو ان کی حوصلہ افزائی کرنی چاہئے اور اس کے ساتھ ساتھ سلائی، کشیدہ کاری، کپڑے کے کھلونے، لفافے، پاپڑ وغیرہ جیسے پیشوں سے روزگار کے طور پر وابستہ کیا جائے تا کہ وہ اپنے مستقبل کو سنوارنے اور اپنے گھر اور خاندان کی غریبی کو دور کرنے کے قابل ہوسکیں۔ جس سے ملک کی ترقی میں بھی اضافہ ہو۔ بغیر عورت کے اس کائنات کی ترقی مشکل نہیں بلکہ ناممکن ہے۔ علامہ اقبال کے اس شعر سے وضاحت ہوتی ہے کہ

وجود زن سے ہے تصویر کائنات میں رنگ
اسی کے ساز سے ہے زندگی کا سوز دروں

آج اکیسویں صدی میں مسلمانوں میں بہت بدلاؤ آئے ہیں اور اسلام کو ایک نئی روشنی ملی ہے۔ عورتوں کی تعلیم کے لئے جگہ جگہ اسکولوں، کالجوں، یونیورسٹیوں کے ساتھ ساتھ مذہبی اداروں کی بنیاد رکھی گئی ہے۔ عورت کا مرتبہ اسلام میں بہ خوبی نظر آتا ہے۔

"Status of muslim woman in Islam"

"When a daughter, she opens a door of jannah for her father .....when she is a wife .....she complete half of tha deen of her husband ...when she is a mother .....jannah his under her feet."

بیٹی کی ذات اگر مقدس نہ ہوتی تو اللہ ہمارے حضور پاک کی اولاد کا سلسلہ حضرت فاطمہؓ سے شروع نہ کرتا۔ عورت کی اہمیت کو مدنظر رکھتے ہوئے ضروری ہے کہ ہم میں یہ جذبہ پیدا ہو اور ہم اپنے ملک کی اس تحریک میں شامل ہوں اور فرسودہ روایات

نظروں کے سامنے ہوئے جنھوں نے ان کے فکر وخیال کے دھارے کو ہی تبدیل کر دیا اور فیض جذباتی ورومانوی دنیا سے نکل کر حقیقت پسندی کی طرف مائل ہو گئے۔ جہاں غم محبت کے ساتھ ساتھ انسانی درد وغم کے نقوش واضح ہوتے ہیں اور فیض یہ کہنے پر مجبور ہو جاتے ہیں۔

مقام فیض کوئی راہ میں جچا ہی نہیں
جو کوئے یار سے نکلے تو سوئے دار چلے

□□□

سونی
بی۔اے۔ سال سوم

دوستی

دوست ساتھ ہو تو رونے میں بھی شان ہے
دوست نہ ہو تو محفل بھی شمشان ہے
سارا کھیل دوستی کا ہے ورنہ
جنازہ اور بارات ایک سمان ہے

میں بوجھ نہیں ہوں

شام ہوگئی ابھی تو گھومنے چلو نہ پاپا
چلتے چلتے تھک گئی کندھوں پہ اٹھالو نہ پاپا
اندھیرے سے ڈر لگتا ہے سینے سے لگالو نہ پاپا
ممی تو سوگئی
آپ ہی تھپکی دے کر سلاؤ نہ پاپا
اسکول تو پورا ہو گیا
آپ کالج جانے دو نہ پاپا
پال پوس کر بڑا کیا
اب جدا تو مت کرو نہ پاپا
اب ڈولی میں بٹھا ہی دیا تو
آنسو تو مت بہاؤ نہ پاپا
آپ کی مسکراہٹ اچھی ہے
ایک بار مسکراؤ نہ پاپا
آپ نے میری ہر بات مانی
ایک بات اور مان جاؤ نہ پاپا
اس دھرتی پر بوجھ نہیں میں
دنیا کو سمجھاؤ نہ پاپا

ہچکی کا عمل

جب تمہیں ہچکی لگے تو پہلی ہچکی پر کلمہ طیبہ پڑھ لو ان شاء اللہ ہچکی رک جائے گی اور اس عمل کو عادت بنا لو اور جب موت آئے گی جو برحق ہے تو موت سے پہلے ایک ہچکی آئے گی اور تمہاری عادت کی وجہ سے زبان سے کلمہ طیبہ جاری ہو جائے گا۔

ڈاکٹر عارفہ بیگم
شعبۂ اردو

جو کوئے یار سے نکلے تو سوئے دار چلے

فیض احمد فیض کا یہ مصرعہ ان کے اشتراکی خیالات اور ان کی ادبی زندگی کا غماز ہے۔ البتہ یہ بات قابل غور ہے کہ فیض یار کی گلیوں سے نکل کر سوئے دار کی جانب کیوں گئے؟ شاعر یا ادیب سماج کا حساس فرد ہوتا ہے جو سماج میں پھیلی برائیوں اور انتشار سے ایک عام انسان کی طرح آنکھیں نہیں چرا پاتا۔ اس کا باشعور و حساس ذہن سماجی ناہمواریوں اور ناانصافیوں کے خلاف بار بار دل و دماغ میں بے چینی کی کیفیت پیدا کرتا ہے۔ اور یہی بے چینی مزید بڑھ جاتی ہے تو فیض جیسا شاعر و ادیب جنم لیتا ہے جس کی شاعری محض شاعری نہیں بلکہ اس عہد کی آواز بن جاتی ہے۔

فیض کے ساتھ بھی غالباً کچھ ایسا ہی ہوا۔ اپنی زندگی کے ابتدائی دور میں انھوں نے عشقیہ شاعری کی شاید اس وقت تک فیض کا ذہن اتنا پختہ نہیں تھا۔ چنانچہ ابتدائی دور کی شاعری میں حسن و محبت کے ترانے اور سرشاری و سرمستی کی کیفیت چھائی ہوئی ہے لیکن یہ دور ان کی زندگی سے بہت جلد گزر گیا۔ کیونکہ سماجی ناآسودگی، کربناکی اور شکست خوردگی نے فیض کے ذہن کو بری طرح متاثر کیا جس کا اظہار وہ اس طرح کرتے ہیں۔

اور بھی غم ہے زمانے میں محبت کے سوا
راحتیں اور بھی ہے وصل کی راحت کے سوا

چنانچہ اس دور کے گزرنے کے بعد فیض ایک نئے فیض کے روپ میں ہمارے سامنے آتے ہیں جو شاعر ہونے کے ساتھ ساتھ باشعور دانشور بھی ہے اور سارے ماحول کو حکیمانہ نظروں سے تول رہا ہے۔ جس کے یہاں فکر و خیال لمحاتی نہیں بلکہ دائمی ہیں۔

ملک کی تقسیم تاریخ میں ایک ایسا المناک واقعہ ہے جس نے ہر چھوٹے بڑے لوگوں کو متاثر کیا۔ کروڑوں لوگوں کا بے گھر ہونا، لاکھوں لوگوں کا قتل عام سب کچھ فیض نے اپنی آنکھوں سے دیکھا اور محسوس کیا۔ اس منظر کی ہولناکی فیض اپنی نظم ''صبح آزادی'' میں اس طرح بیان کرتے ہیں۔

یہ داغ داغ الاجا یہ شب گزیدہ سحر
وہ انتظار تھا جس کا وہ سحر تو نہیں

فیض کی نظر میں عوام نے جس آزادی کی آس و امید لگا رکھا تھا وہ تو اسے حاصل نہیں ہوئی بلکہ اس آزادی کے بدلے تو اسے شدید کرب سے گزرنا پڑا جس کی کسک برسوں تک لوگوں کے دلوں میں باقی رہے گی۔

وطن سے غداری کے الزام میں فیض کو جیل بھی ہوئی اور جب وہ رہا ہو کر باہر آئے تو یہ نظم لکھی۔

آج بازار میں پابجولاں چلو
چشم نم، جان شوریدہ کافی نہیں

اس نظم کا مقصد عوام میں اس وقت کی حکومت کے خلاف بیداری اور جوش پیدا کرنا تھا تاکہ حکومت کی طرف سے لگائی گئی پابندیوں کو توڑے۔

ایسے بہت سے واقعات اور حادثات فیض کی

ATM

दीप प्रज्वलन - ज्ञान का विस्तार

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी

253/179ए अतरसुइया रोड, इलाहाबाद - 211 003

फोन : 0532-2451367

E-mail : katripathshala@gmail.com

www.skpallahabad.com